हिन्दी दैनिक

# तीसरा विकल्प न्यूज़

(लखनऊ से प्रकाशित)

वर्षः- 02, अंकः-185, पृष्ठः-08, मूल्यः- 2 रु.
लखनऊ, बुधवार 18 दिसम्बर 2024

आयुक्त आगरा मंडल ने अनुभागों, पटलों के निरीक्षण...02

पेंशनर्स की समस्याओं का तत्काल निस्तारण...06

सेंसेक्स 1064 अंक गिरकर 80,684 पर बंद

सोने के दाम में 324 की गिरावट

19 दिसंबर को 5 आईपीओ ओपन होंगे

## संक्षिप्त समाचार

### अमृतसर के इस्लामाबाद थाने में धमाका, दहशत व्याप्त

अमृतसर, एजेंसी। पंजाब में अमृतसर के इस्लामाबाद थाना में मंगलवार तड़के लगभग तीन बजे हुए जोरदार धमाके से इलाके में दहशत का माहौल व्याप्त है। घटना के बाद वरिष्ठ पुलिस अधिकारी मौके पर पहुंचे। अमृतसर के पुलिस आयुक्त गुरप्रीत सिंह भुल्लर ने बताया कि स्थानीय लोगों ने थाने में विस्फोट की आवाज सुनी, लेकिन वहां कोई नुकसान नहीं हुआ। इस बीच, जर्मनी स्थित गैंगस्टर जीवन फौजी ने विस्फोट की जिम्मेदारी ली। अधिकारियों ने बताया कि मामले में आगे की जांच चल रही है। इससे पहले चार दिसंबर को रात करीब 10 बजे अमृतसर के मजीठा थाने में धमाका हुआ था। हाल ही में अजनाला थाने के बाहर भी एक शक्तिशाली विस्फोटक उपकरण (आईईडी) बरामद हुआ था और अमृतसर पुलिस आयुक्तालय के गुरबक्श नगर पुलिस चौकी के अंदर भी धमाका हुआ था। श्री भुल्लर भी घटनास्थल पर पहुंच गये हैं। उन्होंने बताया कि हम लोग थाने के अंदर हैं।

### सावरकर को भारत रत्न देना चाहिए, उद्धव ने कर दी मांग

मुंबई, एजेंसी। महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री और शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख उद्धव ठाकरे ने हिंदुत्व विचारक वीर सावरकर को भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान, भारत रत्न देने की अपनी मांग दोहराई। महाराष्ट्र विधानसभा के शीतकालीन सत्र में भाग लेने के लिए नागपुर में मौजूद ठाकरे ने संवाददाता सम्मेलन को संबोधित किया और भाजपा से सवाल किया कि वे वीर सावरकर को भारत रत्न कब प्रदान करेंगे। वीर सावरकर के संबंध में मैं पूछना चाहता हूं कि उन्हें भारत रत्न क्यों नहीं दिया जाना चाहिए। ठाकरे ने कहा कि वीर सावरकर को भारत रत्न नहीं दिया जा रहा है, आज भी वह सीएम हैं कांग्रेस पर निशाना साधते हुए पूर्व सीएम ने कहा कि मैं कांग्रेस और बीजेपी दोनों से कहना चाहता हूं कि कांग्रेस को सावरकर को निशाना बनाना बंद कर देना चाहिए।

# योगी सरकार ने पेश किया 17,865 करोड़ का अनुपूरक बजट

**ऊर्जा विभाग को मिले सबसे अधिक 8587 करोड़**

### 30 जुलाई को प्रस्तुत किया गया था पहला अनुपूरक बजट

योगी सरकार ने इसी वर्ष फरवरी महीने में मूल बजट किया था, जो 7.36 लाख करोड़ रुपए से अधिक का था। इसके बाद योगी सरकार ने 30 जुलाई को 12,209.93 करोड़ का अनुपूरक बजट पेश किया था। इसके 5 माह के बाद एक बार फिर योगी सरकार विकास कार्यों को गति देने के लिए आवश्यकता के अनुरूप द्वितीय अनुपूरक बजट लेकर आई है। इस बजट को मंगलवार सुबह मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में आयोजित हुई कैबिनेट की बैठक में सर्वसम्मति से स्वीकृत कर लिया गया।

**लखनऊ, संवाददाता।** योगी सरकार ने मंगलवार को विधानसभा में वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए अपना द्वितीय अनुपूरक बजट प्रस्तुत किया। 17,865.72 करोड़ रुपए के इस अनुपूरक बजट में 790.49 करोड़ रुपए के नए प्रस्ताव सम्मिलित किए गए हैं। यह योगी सरकार का इस वित्तीय वर्ष का द्वितीय अनुपूरक बजट है, जो मूल बजट (7 लाख 36 हजार 437.71 करोड़ रुपए) का 2.42 प्रतिशत है। इससे पूर्व योगी सरकार 12,209.93 करोड़ रुपए का अनुपूरक बजट भी प्रस्तुत कर चुकी है। दोनों अनुपूरक बजट को मिलाकर योगी सरकार का वित्तीय वर्ष 2024-25 का कुल बजट अब 7 लाख 66 हजार 513.36 करोड़ रुपए का हो गया है। योगी सरकार के वित्त एवं संसदीय कार्य मंत्री सुरेश खन्ना ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की उपस्थिति में विधानसभा में द्वितीय अनुपूरक बजट प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि द्वितीय अनुपूरक बजट का आकार 17,865.72 करोड़ रुपए है। उन्होंने कहा कि यह सरकार विकास को प्राथमिकता देने वाली सरकार है और जब भी आवश्यकता होती है तब संवैधानिक तरीके से सदन के माध्यम से अनुपूरक बजट लाने का अधिकार है। उन्होंने बताया कि अनुपूरक बजट में 790.49 करोड़ रुपए के नए प्रस्ताव सम्मिलित किए गए हैं। साथ ही इसमें केंद्रीय योजनाओं में 422.56 करोड़ रुपए के केंद्रांश की राशि भी अनुमानित है। इसके अतिरिक्त, कंटिजेंसी से जो 30 करोड़ 48 लाख रुपए का पैसा लिया गया था, उसकी भी प्रतिपूर्ति का भी प्रस्ताव इसमें शामिल है। वित्त मंत्री सुरेश खन्ना ने बताया कि अनुपूरक बजट में विभिन्न विभागों को उनकी आवश्यकता के अनुरूप बजट जारी किया जाएगा। इसमें ऊर्जा विभाग को 8587.27 करोड़ रुपए, लोकनिर्माण विभाग के लिए 805 करोड़ रुपए, प्राथमिक शिक्षा विभाग के लिए 515 करोड़ रुपए, सूचना विभाग के लिए 505 करोड़ रुपए, पंचायती राज विभाग के लिए 454.01 करोड़ रुपए और चिकित्सा शिक्षा एवं प्रशिक्षण विभाग के लिए 354.54 करोड़ रुपए का बजट प्राविधानित किया गया है।

### इसलिए प्रस्तुत किया जाता है अनुपूरक बजट

अनुपूरक बजट एक ऐसा वित्तीय दस्तावेज है जिसे सरकार किसी वित्तीय वर्ष के दौरान तब प्रस्तुत करती है. जब उसे अपने पहले से स्वीकृत बजट में अतिरिक्त खर्च की आवश्यकता होती है। यह बजट उन खर्चों को कवर करने के लिए प्रस्तुत किया जाता है, जिनको अनुमानित बजट में शामिल नहीं किया गया था, या जो नई परिस्थितियों के कारण आवश्यक हो गए हैं। यह बजट वित्त वर्ष के बीच में किसी विभाग या मंत्रालय की किसी योजना में अतिरिक्त राशि खर्च करने के लिए लाया जाता है। यह खर्च के अनुमान के साथ पेश किया जाता है।

**गृहमंत्री शाह ने विपक्ष पर साधा निशाना**

## चश्मा अगर विदेशी हो, तो संविधान में नहीं दिखेगा भारत

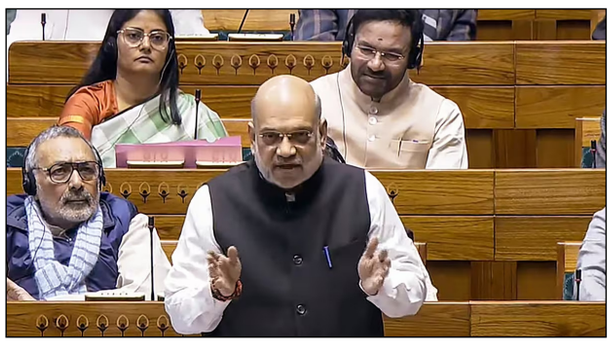

**नई दिल्ली, एजेंसी।**

राज्यसभा में मंगलवार को भारत के 75 वर्षों की गौरवशाली यात्रा पर चर्चा जारी है। इस पर जवाब देते हुए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा, यह चर्चा हमारे संविधान के कारण हमारा देश कितना आगे बढ़ा, इसका अहसास हमारी जनता को कराएगा। उन्होंने कहा, संविधान पर दोनों सदनों में जो चर्चा हुई है, वह आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरक होगी। गृह मंत्री ने कहा, सरदार पटेल की वजह से देश मजबूत हुआ है। गृह मंत्री ने कहा कि बहुत लंबी आजादी की लड़ाई के बाद हम आजाद हुए। जब हम आजाद हुए तब दुनियाभर के राजनीतिक पंडितों ने कहा था कि यह देश बिखर जाएगा। शायद बन ही नहीं पाएगा। कुछ लोगों ने कहा था कि यहां लोकतांत्रिक मूल्य प्रतिस्थापित हो ही नहीं पाएंगे। एकता हो ही नहीं पाएगी और यह देश आर्थिक रूप से कभी आत्मनिर्भर नहीं होगा। आज 75 साल के समय के बाद संविधान को स्वीकार करने के बाद पीछे मुड़कर देखते हैं, तो सरदार पटेल का मैं धन्यवाद करना चाहता हूं। सरदार पटेल के अथक परिश्रम के कारण देश आज एकजुट होकर दुनिया के सामने मजबूती से खड़ा है। केंद्रीय गृहमंत्री ने कहा, कोई ये न समझे कि हमारा संविधान दुनिया के संविधानों की नकल है। हां, हमने हर संविधान का अभ्यास जरूर किया है, क्योंकि हमारे यहां ऋग्वेद में कहा गया है, हर कोने से हमें अच्छाई प्राप्त हो, सुविचार प्राप्त हो, और सुविचार को स्वीकारने के लिए मेरा मन खुला हो। हमने सबसे अच्छा लिया है, लेकिन हमने हमारी परंपराओं को नहीं छोड़ा है। पढ़ने का चश्मा अगर विदेशी है, तो संविधान में भारतीयता कभी दिखाई नहीं देगी। राज्य सभा में संविधान पर चर्चा का जवाब देते हुए गृह मंत्री अमित शाह ने कहा, संविधान की रचना के बाद डॉ अंबेडकर ने बहुत सोच समझकर एक बात कही थी कि कोई संविधान कितना भी अच्छा हो, वह बुरा बन सकता है।

### सच हो रही महर्षि अरविंद और स्वामी विवेकानंद की भविष्यवाणी : शाह

संविधान पर चर्चा के जवाब में केंद्रीय गृह मंत्री शाह ने कहा, आज हम जिस मुकाम पर खड़े हैं, उस मुकाम पर महर्षि अरविंद और स्वामी विवेकानंद की वो भविष्यवाणी सच होती दिखाई पड़ती है कि भारत माता अपनी देदीप्यमान ओजस्वी स्वरूप में जब खड़ी होंगी।

### पाताल तक गहरा

शाह ने आगे कहा कि जो कहते थे कि इस देश में लोकतंत्र सफल नहीं होगा। मैं उन सभी लोगों को सदन के माध्यम से कहना चाहता हूं कि 75 साल हो गए, हमारे पास-पड़ोस और दुनियाभर में लोकतंत्र सफल नहीं हुए। लेकिन हमारा लोकतंत्र आज पाताल तक गहरा है।

### जनता ने अनेक तानाशाहों के गुमान को चकनाचूर किया

शाह ने कहा, अनेक तानाशाहों के गुमान को चकनाचूर करने का काम इस देश की जनता ने किया है। लोकतांत्रिक तरीके से किया है। जो कहते थे कि भारत आर्थिक तौर पर कभी आत्मनिर्भर नहीं हो पाएगा, उन्हें भी हमारी जनता और संविधान की खूबसूरती ने जवाब दिया है।

## संविधान ने उसके साथ खिलवाड़ करने वालों को दंडित किया : देवेगौड़ा

**नयी दिल्ली, एजेंसी।** पूर्व प्रधानमंत्री एवं जनता दल (एस) के वरिष्ठ नेता एच. डी. देवेगौड़ा ने देश के संविधान को बेहद सशक्त बताते हुए मंगलवार को राज्यसभा में कहा कि जिसने भी संविधान के साथ खिलवाड़ किया है, संविधान ने उसे दंडित किया है। श्री देवेगौड़ा ने सदन में संविधान की 75 वर्ष की गौरवशाली यात्रा पर चर्चा में हिस्सा लेते हुए कहा कि संविधान देश के लिए सर्वोपरि है। उन्होंने कहा कि देश का संविधान इतना सशक्त है कि जिसने भी संविधान के साथ खिलवाड़ करने की कोशिश की, संविधान ने उसे दंडित किया है। उन्होंने कहा कि इसी संविधान ने उन्हें किसान पुत्र के रूप में देश का प्रधानमंत्री बनने का अवसर दिया। उन्होंने देश को इस तरह का संविधान देने के लिए बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर को श्रद्धांजलि अर्पित की। तृणमूल कांग्रेस की सुष्मिता देव ने कहा कि हमारा संविधान सहमति का दस्तावेज है। उन्होंने कहा कि संविधान में सभी तरह की समानता के साथ साथ आर्थिक समानता का भी अधिकार दिया गया है लेकिन देश में अमीर और गरीबों का अंतर बहुत बड़ा है। उन्होंने कहा कि देश का किसान कर्ज के नीचे दबा हुआ है जबकि बड़े-बड़े उद्योगपतियों का कर्ज माफ किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि मणिपुर में सरकार ने संविधान में प्रदत सभी अधिकारों का हनन किया है। माकपा के जॉन ब्रिटास ने कहा कि देश में अघोषित आपातकाल है। उन्होंने कहा कि इस सदन का एक सप्ताह का समय जार्ज सोरोस के नाम पर बर्बाद किया गया , यह एक तरह से करदाताओं के पैसे को बर्बाद करने के समान है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सभी से अपने कर्तव्य का निर्वहन करने को कहा है लेकिन वह मणिपुर को लेकर अपने कर्तव्य का निर्वहन नहीं कर रहे हैं।

## सेना ने कहा- 1971 युद्ध की तस्वीर हटाई नहीं

**उसे आर्मी चीफ लाउंज से मानेकशॉ सेंटर में शिफ्ट किया, ताकि ज्यादा लोग देख सकें**

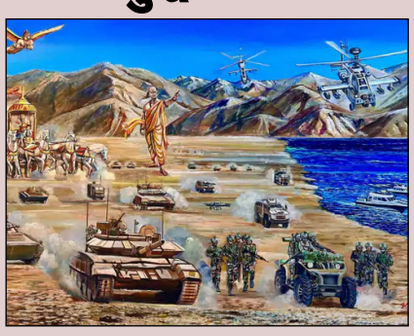

**नई दिल्ली, एजेंसी।** आर्मी चीफ के लाउंज में लगी पाकिस्तानी सेना के समर्पण की तस्वीर को लेकर सेना का बयान आया है। सेना ने अपने एक्स हैंडल पर बताया कि 1971 युद्ध की तस्वीर हटाई नहीं गई है। इसे दिल्ली के मानेकशॉ सेंटर में जानबूझकर शिफ्ट किया गया है, ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग इसे देख सकें। दरअसल, सेना प्रमुख के लाउंज में 1971 के पाकिस्तानी सेना के सरेंडर वाली पेंटिंग को बदलकर एक नई कलाकृति लगाई गई है। इसमें लद्दाख के पैंगोंग त्सो, महाभारत से प्रेरित विषय-वस्तु और आधुनिक युद्ध को दर्शाया गया है, जो संभवत: चीन के साथ उत्तरी सीमा पर भारत के बढ़ते रणनीतिक फोकस को दर्शाता है। बांग्लादेश मुक्ति संग्राम के दौरान पाकिस्तानी सेना के आत्मसमर्पण वाली तस्वीर को हटाने का मामला संसद तक पहुंच गया था। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी और कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी ने सवाल उठाया था। दोनों ने सरकार पर भारत के सैन्य इतिहास और इंदिरा गांधी के नेतृत्व वाली सरकार की विरासत को कमतर आंकने का आरोप लगाया। यह तस्वीर 16 दिसंबर 1971 की है। इसे ढाका के रेसकोर्स में लिया गया था। तस्वीर में पाकिस्तान के लेफ्टिनेंट जनरल ए.ए.के. नियाजी और भारत के ईस्टर्न थिएटर के कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा नजर आ रहे है। नियाजी के सामने मेज पर एक डॉक्यूमेंट है, जिस पर वे दस्तखत करते दिख रहे हैं। उनके पीछे भारतीय सेना के कई और अधिकारी भी खड़े हैं। यह वही ऐतिहासिक पल था, जिसके बाद लेफ्टिनेंट जनरल नियाजी ने कमर पर लगी अपनी पिस्टल जगजीत सिंह को सौंप दी थी और 93 हजार पाक सैनिकों के साथ दुनिया का सबसे बड़ा सरेंडर किया। सेना ने 16 दिसंबर को ङ्क पर पोस्ट में लिखा- यह पेंटिंग भारतीय सशस्त्र बलों की सबसे बड़ी सैन्य जीतों में से एक और सभी के लिए न्याय और मानवता के प्रति भारत की प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

## प्रियंका के बैग पर फिलिस्तीन के बाद आज बांग्लादेश मुद्दा

➲ लिखा- हिंदुओं-ईसाइयों साथ खड़े हो

**नई दिल्ली, एजेंसी।** वायनाड से लोकसभा सांसद प्रियंका गांधी मंगलवार को संसद में एक बैग लेकर पहुंचीं, जिस पर बांग्लादेशी हिंदुओं और ईसाइयों साथ खड़े हो लिखा था। एक दिन पहले ही वे फिलिस्तीन को समर्थन करने वाला बैग लेकर पहुंची थीं। जिस पर फिलिस्तीन आजाद होगा लिखा था। इस पर विवाद भी हुआ। प्रियंका ने सवाल उठाने वालों से कहा था- मैं कैसे कपड़े पहनूंगी, इसे कोई और तय नहीं करेगा, बरसों से चल रही रूढ़वादी पितृसत्ता को मैं नहीं मानती, मैं जो चाहूंगी, वही पहनूंगी। फिलिस्तीन का सपोर्ट करने पर पाकिस्तान सरकार में पूर्व मंत्री फवाद हसन चौधरी ने भी उनकी तारीफ में कहा कि हमारे सांसदों में इतनी हिम्मत नहीं। पाकिस्तान की इमरान सरकार में मंत्री रहे फवाद हसन चौधरी ने फिलिस्तीन का सपोर्ट करने पर प्रियंका की तारीफ की है। उन्होंने एक्स पर लिखा- जवाहरलाल नेहरू जैसे महान स्वतंत्रता सेनानी की पोती से हम और क्या उम्मीद कर सकते हैं? प्रियंका ने अपना कद और ऊंचा कर लिया है, यह शर्मनाक है कि आज तक किसी पाकिस्तानी सांसद ने ऐसी हिम्मत नहीं दिखाई। लोकसभा में सोमवार को भी प्रियंका गांधी ने प्रश्नकाल में सवाल किया था।

## भारतीय संविधान गंभीर चिंतन का परिणाम : नड्डा

**नयी दिल्ली, एजेंसी।**

राज्यसभा में सदन के नेता जगत प्रकाश नड्डा ने मंगलवार को कहा कि भारतीय संविधान गहन चिंतन- मनन, मंथन और गंभीर विचार विमर्श का परिणाम है। श्री नड्डा ने सदन? में 'भारतीय संविधान के 75 वर्ष की गौरवपूर्ण यात्रा' की चर्चा फिर शुरू करते हुए कहा कि भारतीय संविधान नये देश का नहीं था, बल्कि यह पुरातन संस्कृति वाले देश का संविधान है। संविधान सभा के सदस्य इस तथ्य को भली-भांति जानते थे। उन्होंने कहा कि भारतीय संविधान तमाम कठिनाइयों और मुसीबतों से निकलने की प्रेरणा देता है। संविधान में भारतीय संस्कृति के प्रतीकों की छाप है। उन्होंने कहा कि बुरे तत्व भी प्रारंभ से ही संविधान से इतर काम करने लगे। उन्होंने कहा कि सरदार पटेल ने 562 रियासतों को भारत संघ में शामिल किया, लेकिन एक रियासत जम्मू-कश्मीर का जिम्मा पंडित जवाहरलाल नेहरू ने लिया। भारत में जम्मू-कश्मीर के एकीकरण की प्रक्रिया में उन्होंने शेख अब्दुल्ला को शामिल किया गया। अनुच्छेद 370 संविधान पर आघात था। जम्मू-कश्मीर को भारत में शामिल करने के लिए डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने बलिदान दिया और उन्होंने श्रीनगर जेल में संदिग्ध परिस्थितियों में अंतिम सांस ली। सदन के नेता? ने कहा कि अनुच्छेद 35 ए राष्ट्रपति आदेश के जरिए जोड़ा गया और संविधान की भावना तथा संसद की अवहेलना की गई। इसके जरिये जम्मू-कश्मीर की नागरिकता के प्रावधान तय किए गए। जम्मू-कश्मीर की महिलाओं को राज्य के बाहर शादी करने पर संपत्ति के अधिकार से वंचित कर दिया गया। इसके अनुसार राज्य का नागरिक उसी को माना जाएगा जो 1944 के पहले वहां रहा करते थे। संविधान के अनुसार संसद के बने हुए कानून जम्मू-कश्मीर में लागू नहीं होते थे। अनुसूचित जाति और जनजाति के प्रावधान जम्मू-कश्मीर के लोगों को प्राप्त नहीं थे। पंचायती राज का 73वां संशोधन अधिनियम जम्मू-कश्मीर में लागू नहीं होता था। श्री नड्डा ने कहा कि विभाजन के बाद पाकिस्तान से आए लोग भारत में प्रधानमंत्री के पद तक पहुंच गए, लेकिन जम्मू -कश्मीर में पंचायत का चुनाव नहीं लड़ सकते थे।

## सपा सांसद बर्क के घर पहुंची पुलिस

**संभल, एजेंसी।**

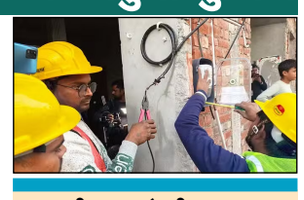

➲ कड़ी सुरक्षा के बीच आवास पर लगा बिजली मीटर, पीएसी और आरएएफ की गश्त जारी

सपा के संभल सांसद जियाउर्रहमान बर्क के आवास पर मंगलवार को स्मार्ट मीटर लगाने के लिए फोर्स के साथ अधिकारी पहुंचे। एएसपी ने बताया कि एहतियाती तौर पर फोर्स को लगाया गया है। पुराना मीटर हटा कर स्मार्ट मीटर लगाया गया है। शहर एसडीओ संतोष त्रिपाठी ने बताया कि केबल खींचने और स्मार्ट मीटर लगाए जाने का काम दीपासराय में किया जा रहा है। इसी क्रम में सांसद के आवास पर मीटर बदला गया है। सांसद के आवास पर लगे मीटर में कोई गड़बड़ी नहीं पकड़ी गई है। आसपास के घरों में भी स्मार्ट मीटर लगाए गए हैं। एसडीओ ने बताया कि स्मार्ट मीटर लगाए जाने से बिजली चोरी के मामले आसानी से पकड़े जा सकेंगे। कोई छेड़छाड़ नहीं की जा सकेगी। बताया कि 100 से ज्यादा घरों में स्मार्ट मीटर लगाए गए हैं। केबल भी खींची गई है। मालूम हो 24 नवंबर को जामा मस्जिद सर्वे के दौरान हुए बवाल में सांसद नामजद आरोपी बनाए गए हैं। भीड़ को भड़काऊ भाषण देने का आरोप है। इस कार्रवाई के बाद से लगातार पुलिस प्रशासन का शिकंजा सांसद पर कसता जा रहा है। इससे पहले डीएम और एसपी के नेतृत्व में शनिवार को बिजली विभाग की टीम ने नखासा तिराहा, खग्गू सराय, रायसत्ती रोड और दीपा सराय में 49 स्थानों पर बिजली चोरी पकड़ी। इसमें चार मस्जिद और एक मदरसा भी शामिल है। बिजली विभाग ने 1.30 करोड़ रुपये की जुर्माना रिपोर्ट बनाई है। जो बिजली चोरी के आरोपियों से वसूली की जाएगी।

## एक देश एक चुनाव विधेयक संघवाद के खिलाफ : विपक्ष

**नयी दिल्ली, एजेंसी।**

पूरे देश में एक साथ चुनाव के प्रावधान वाले विधेयकों को विपक्षी सदस्यों के जबर्दस्त विरोध के बीच सरकार द्वारा मंगलवार को लोकसभा में पुर्रस्थापित कराने के लिये प्रस्तुत किया गया। विधि मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने संविधान (129वां) संशोधन विधेयक 2024 और संघ राज्य क्षेत्र विधि (संशोधन) विधेयक 2024 प्रस्तुत किये। कांग्रेस के मनीष तिवारी ने विधेयकों का विरोध करते हुये कहा है कि यह हमारे लोकतंत्र और संघीय ढांचे के खिलाफ है। उन्होंने कहा कि भारत में संघवाद की व्यवस्था है और ये विधेयक पूरी तरह से संविधान की इस व्यवस्था के खिलाफ है। समाजवादी पार्टी के धर्मेंद्र यादव ने विधेयकों का विरोध किया और इसे संविधान की मूल भावना के खिलाफ बताया। उन्होंने इन विधेयकों को तानाशाही का परिणाम बताया और इन्हें वापस लेने की सरकार से मांग की। कांग्रेस के गौरव गोगोई ने इन विधेयक को देश के वोटरों के मतदान करने के अधिकार पर आक्रमण बताया है। उन्होंने विधेयक को संसद की संयुक्त समिति (जेपीसी) को भेजने की मांग की। इन विधेयकों में राष्ट्रपति को राज्यों की विधानसभाओं को भंग करने का इतना अधिकार दिया गया है।

## भोपाल में पारा 3.3 डिग्री सेल्सियस, 53 साल का रिकॉर्ड टूटा, 10 राज्यों में शीतलहर

**नोएडा-गाजियाबाद में 5वीं तक स्कूल बंद, श्रीनगर में पानी जमने लगा**

### महाराष्ट्र-तेलंगाना में सर्दी, आंध्र-तमिलनाडु में बारिश का अलर्ट

महाराष्ट्र, तेलंगाना में पारा सामान्य से नीचे पहुंच गया है। यहां भी लोगों को सर्द का अहसास हो रहा है। इधर आंध्र, तमिलनाडु में लगातार दूसरे दिन बारिश का अलर्ट है। हालांकि तटीय राज्यों में तापमान में ज्यादा गिरावट नहीं है।

**नई दिल्ली, एजेंसी।** दिसंबर के तीसरे हफ्ते में देश के मैदानी इलाकों में तेज सर्दी जारी है। मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और जम्मू-कश्मीर समेत 10 राज्यों में मंगलवार को कोल्ड वेव और 13 राज्यों में घने कोहरे का अलर्ट है। राजस्थान के फतेहपुर में सोमवार को न्यूनतम तापमान -1 डिग्री सेल्सियस पहुंच गया। मध्य प्रदेश में 12 जिले शीतलहर की चपेट में हैं। भोपाल में सोमवार को 53 साल बाद दिसंबर में रात का टेंप्रेचर 3.3 डिग्री सेल्सियस पहुंचा। यहां 1971 में न्यूनतम तापमान 3.6 सेल्सियस दर्ज हुआ था। इधर दिल्ली में भी दिसंबर में चौथी बार तापमान 5 डिग्री सेल्सियस से नीचे गया। नोएडा, ग्रेटर नोएडा और गाजियाबाद में प्रदूषण और ठंड के चलते 5वीं तक स्कूल बंद कर दिए गए हैं। बर्फबारी के बाद जम्मू-कश्मीर में शीतलहर जारी है। श्रीनगर में मंगलवार सुबह पारा माइनस 4 डिग्री रिकॉर्ड हुआ। कई जगह फव्वारों का पानी जमने लगा। पेड़-पौधों पर भी ओस जम गई। आज भी 7 जिलों में शीतलहर का अलर्ट है। राज्य में तेज सर्दी से 22 दिसंबर तक राहत मिलने की कोई उम्मीद नहीं है। पिछले 24 घंटे में सीकर, झुंझुनूं के एरिया में शीतलहर का जबरदस्त असर रहा। 36 शहरों में तापमान 5ए से नीचे चला गया है। फतेहपुर, के अलावा अन्य शहरों का तापमान गिरकर शून्य या माइनस में जाने की संभावना है।

### कई शहरों में शीतलहर, सबसे कम बारामती में 7.8 डिग्री

राज्य के कई हिस्सों में शीतलहर चल रही है। तापमान गिरकर सिंगल डिजिट पर आ गया है। पुणे के बारामती में 7.8ए, पुणे और नासिक में 8 डिग्री दर्ज किया गया। जलगांव में 8.3 डिग्री, परभणी में 9.4 डिग्री, छत्रपति संभाजीनगर 10 डिग्री और धाराशिव में 10.2 डिग्री दर्ज किया गया।

# आयुक्त आगरा मंडल ने अनुभागों, पटलों के निरीक्षण, राजस्व वसूली, वादों के निस्तारण की समीक्षा बैठक

➪ कार्मिकों की सेवा-पुस्तिका, भविष्य निधि पासबुक तत्काल अपडेट की जाए, पेंशन के लंबित प्रकरण सर्वोच्च प्राथमिकता पर किए जाएं निस्तारित-आयुक्त आगरा मंडल आगरा। ➪ शासनादेश के अनुसार पुराने रिकॉर्ड का अभियान चलाकर जनवरी के अंत तक करायी जाए वीडिंग-रितु माहेश्वरी

**तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता मैनपुरी**

मैनपुरी। आयुक्त आगरा मंडल आगरा रितु माहेश्वरी ने कलेक्ट्रेट के विभिन्न अनुभागों, पटलों के निरीक्षण, राजस्व वसूली, वादों के निस्तारण सहित अन्य बिंदुओं की समीक्षा के दौरान राजस्व अभिलेखागार में नकल जारी करने में लापरवाही बरतने पर मुख्य प्रति लिपिक का पटल परिवर्तित किए जाने, चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के सेवा अभिलेखो को माह के अंत तक पूर्ण कराये जाने, राजस्व, ऑग्ल अभिलेखागार के रिकॉर्ड को शासनादेश के अनुसार जनवरी के अंत तक वीड-आउट कराये जाने, अमीनों से निर्धारित मानक के अनुसार लंबित आर.सी. की वसूली कराये जाने, 05 वर्ष पुराने वादों पर साप्ताहिक तिथि देकर लंबित वादों को निस्तारित किये जाने, पेंशन के लंबित प्रकरण, लंबित आडिट आपत्तियों का प्राथमिकता पर निस्तारण कराये जाने के निर्देश प्रभारी अधिकारियों, पटल सहायकों को देते हुये कहा कि ई-परवाने समय से जारी हों, अमल दरामद में विलंब न किया जाए, ग्राम सभा की भूमि पर कहीं भी अनाधिकृत कब्जे न रहें, चकरोड से अनाधिकृत कब्जे हटवाने के बाद खंड विकास अधिकारी तत्काल मिट्टी का कार्य करना सुनिश्चित करें, धारा-34 के वादों को उप जिलाधिकारी प्राथमिकता

पर निस्तारित करें। मंडलायुक्त ने नजारत अनुभाग के निरीक्षण के दौरान जनपद में तैनात 27 चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों की सेवा अभिलेखो का अवलोकन करने पर पाया कि कार्मिकों की सेवा पुस्तिका में वर्ष 2021-22 के बाद प्रविष्टि नहीं की गई है, जिस पर उन्होंने पटल सहायक को माह के अंत तक सभी कार्मिकों की सर्विस बुक अद्यावधिक करने हेतु आदेशित किया, खनिज अनुभाग के निरीक्षण के दौरान खनिज निरीक्षक को राजस्व वसूली के निर्धारित लक्ष्य की शत-प्रतिशत पूर्ति करने, अनाधिकृत रूप से बालू, मिट्टी खनन करने वालों के विरूद्ध कार्यवाही करने, अन्य जनपदों से बालू, मोरम के वाहनों की चैकिंग किये जाने हेतु निर्देशित किया, राजस्व अनुभाग में गार्ड पत्रावली का अवलोकन कर सम्बन्धित पटल सहायक को राजस्व परिषद सहित अन्य शासनादेशों को गार्ड फाइल में संरक्षित करने हेतु निर्देशित किया, राजस्व अनुभाग में 109 अधिकारियों, कर्मचारियों की सेवा पुस्तिकाओं, जीपीएफ पासबुक का रेंडम निरीक्षण करने पर सभी प्रविष्टियां अद्यावधिक पायीं, ऑग्ल अभिलेखागार में 2019 के बाद रिकॉर्ड का शासनादेश के अनुसार वीडिंग न कराये जाने पर नाराजगी व्यक्त करते हुये जनवरी के अंत तक समस्त पटलों, अभिलेखागारों से नियमानुसार रिकॉर्ड को वीडिंग कराये जाने हेतु निर्देशित किया। आयुक्त आगरा मंडल ने समीक्षा के दौरान पाया कि आर.सी. की वसूली की प्रगति संतोजनक नहीं है, 122 करोड़ के सापेक्ष अब तक 54 करोड़ की वसूली की गई है। उन्होंने कहा कि अमीनो से मानक के अनुसार वसूली कराई जाए, विद्युत, स्टांप एवं रजिस्ट्रेशन, आबकारी, परिवहन, वाणिज्यकर विभाग की लंबित आर.सी. की अभियान चलाकर वसूली की जाये। उन्होंने कहा कि कृषक दुर्घटना कल्याण योजना में भी दावों को प्राथमिकता पर निस्तारित किया जाए, अभी 25 दावे लंबित हैं, जानकारी करने पर पाया कि अब तक 482 दावों को स्वीकृत कर कृषकों के परिजनों को लाभान्वित कराया जा चुका है। उन्होंने संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि जनपद में वादों के निस्तारण की प्रगति ठीक है लेकिन अभी और सुधार की गुंजाइश है, न्यायिक अधिकारी निर्धारित दिवसों पर न्यायालय में बैठकर वादों को सुन निस्तारित करें, अभी जनपद में 5755 वाद निस्तारण हेतु शेष है, जिसमें सर्वाधिक 678 तहसील मैनपुरी में, 428 तहसील करहल में लंबित है, 05 वर्ष पुराने 24 वाद भी निस्तारण हेतु लंबित हैं, तहसीलों में बड़ी संख्या में वादों की तिथियां ऑनलाइन अद्यावधिक नहीं है साथ ही बड़ी संख्या में पत्रावलियां दाखिल दफ्तर हेतु अवशेष है, जिस पर उन्होंने 05 वर्ष से अधिक पुराने वादों पर साप्ताहिक तिथि निर्धारित कर निस्तारण हेतु निर्देशित किया। उन्होंने असंतोष व्यक्त करते हुये कहा कि हैसियत, चरित्र प्रमाण पत्र भी समय से जारी नहीं हो रहे हैं, अभी 11 चरित्र प्रमाण पत्र एवं 39 हैसियत प्रमाण पत्र जारी होने हेतु अवशेष है, प्रभारी अधिकारी, संबंधित पटल सहायक लंबित हैसियत, चरित्र प्रमाण पत्र तत्काल जारी करायें, चरित्र प्रमाण पत्र जारी होने में किसी भी स्तर पर विलंब न हो, सुनिश्चित किया जाए। समीक्षा के दौरान उन्होंने दाखिल दफ्तर हेतु अवशेष 3247 फाइलों को तत्काल दाखिल दफ्तर कराए जाने, लंबित पेंशन प्रकरण पर तत्काल प्रभावी कार्यवाही किए जाने, लेखपालों के विरुद्ध संचालित विभागीय कार्यवाही को निस्तारित कराए जाने, कुम्हेरी कलां, मत्स्य, कृषि, आवास पट्टा आवंटन के लक्ष्यों की पूर्ति करने, राजस्व परिषद की लंबित 245 ऑडिट-आपत्तियों का निस्तारण कराये जाने के निर्देश संबंधित प्रभारी अधिकारियों, पटल सहायकों को दिए। इस दौरान जिलाधिकारी अंजनी कुमार सिंह, मुख्य विकास अधिकारी नेहा बंधु, अपर आयुक्त मंजू लता, अपर जिलाधिकारी राम जी मिश्र, अपर जिलाधिकारी न्यायिक नवीन श्रीवास्तव, डिप्टी कलेक्टर ध्रुव शुक्ला, सुप्रिया गुप्ता, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी आगरा गोविन्द वर्मा आदि उपस्थित रहे।

## जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक ने किया जेल का निरीक्षण

**तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता हरदोई**

हरदोई। जिला जज संजीव शुक्ला, जिलाधिकारी मंगला प्रसाद सिंह व पुलिस अधीक्षक नीरज कुमार जादौन ने जिला कारागार का संयुक्त निरीक्षण किया। बैरकों के निरीक्षण के दौरान उन्होंने बैरकों की व्यवस्थाएं देखी और कैदियों से संवाद किया। जिला जज ने कहा कि जिन कैदियों के पास कोई वकील न हो उनको वकील उपलब्ध कराया जाये। पाकशाला में भोजन की गुणवत्ता को देखा गया तथा जेल प्रशासन को निर्देश दिए गए कि कैदियों को मीनू के अनुसार गुणवत्ता परक भोजन उपलब्ध कराया जाये। जेल में बने अस्पताल में निरीक्षण के दौरान उन्होंने इलाज करा रहे कैदियों का हाल चाल लिया। इस दौरान पूरी जेल के औचक तलाशी ली गयी। तलाशी के दौरान कोई अवांछित वस्तु नहीं मिली। इस दौरान सभी सम्बंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

## सांसद निधि से कराए गए कामों का आरटीआई में हिसाब न देने पर ई ओ शाहाबाद पर जुर्माना

**तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता हरदोई**

हरदोई। सूचना का अधिकार में समय से और सही जानकारी न दिए जाने पर राज्य सूचना आयुक्त हर्षवर्धन शाही ने अधिशासी अधिकारी राम रतन अंबेश पर जुर्माना लगाया है।आयुक्त ने नगर पालिका परिषद, शाहाबाद के अधिशासी अधिकारी पर 25,000 रुपये का जुर्माना लगाया है। आयुक्त ने जुर्माना के रुपये अधिशासी अधिकारी के वेतन से वसूल किए जाने की संस्तुति सहित जिले के अधिकारियों को पत्र भी भेजा है।नगर पालिका परिषद शाहाबाद की ओर से नगरीय क्षेत्र में विकास और अन्य कामों को कराए जाने के लिए हरदोई लोकसभा क्षेत्र के सांसद जयप्रकाश ने साल 2019-2020 और 2020-2021 में सांसद निधि से करीब 18.12 लाख रुपये से अधिक दिए थे। सांसद निधि से मिले रुपये से कराए गए काम के संबंध में कस्बा निवासी शफी खान ने सूचना का अधिकार में आवेदन देकर जानकारी मांगी थी।अधिशासी अधिकारी ने कोई जानकारी नहीं दी। जिस पर उन्होंने राज्य सूचना आयुक्त के यहां अपील की। आयुक्त की ओर से जारी नोटिस के बाद भी अधिशासी अधिकारी ने न तो जानकारी दी और न ही सूचना आयोग में उपस्थित हुए। जिस पर राज्य सूचना आयुक्त हर्षवर्धन शाही ने अधिशासी अधिकारी पर जुर्माना लगाया है।

## जिलाधिकारी कार्यालय के दरवाजे पेंशनरों के लिए हमेशा खुले : जिलाधिकारी

**तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता हरदोई**

हरदोई। रसखान प्रेक्षागृह में जिलाधिकारी मंगला प्रसाद सिंह की अध्यक्षता में पेंशनर्स दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उदघाटन तीन वरिष्ठतम पेंशनरों व जिलाधिकारी ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। जिलाधिकारी ने कहा कि पेंशनर्स के चिकत्सा प्रतिपूर्ति के भुगतान का सरलीकरण किया जाये। पंडित दीन दयाल उपाध्याय कार्ड धारकों का निजी अस्पतालों में इलाज सुनिश्चित किया जाये। पेंशन बनाने में अनावश्यक देरी न की जाये। जीपीएफ का भुगतान करने में देरी न की जाये। पेंशन दैने में भ्रष्टाचार के मामले प्रमाण मिलने पर सम्बंधित की जवाबदेही तय की जाये। बैंक और चिकित्सालयों में पेंशनरों के लिए एक काउंटर बनाया जाये। कार्यक्रम में पेंशनरों ने अपनी समस्याएं रखीं जिनके तत्काल निस्तारण के निर्देश सम्बंधित अधिकारियों को दिए। शाहाबाद के एक लेखपाल बाबूराम की पेंशन में करीब ढाई साल की देरी पर उन्होंने जिम्मेदारों के विरुद्ध कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। पेंशनर्स जिलाधिकारी के स्वयं पेंशनर्स दिवस कार्यक्रम में उपस्थित होने पर अभिभूत हुए। जिलाधिकारी ने तीन सबसे वयोवृद्ध पेंशनरों को साल उढ़ाकर सम्मानित किया। जिलाधिकारी ने अन्त में कहा कि सभी विभागों में पेंशनरों की समस्याओं का निस्तारण कराया जाएगा। जिलाधिकारी कार्यालय के दरवाजे पेंशनरों के लिए हमेशा खुले हैं। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी सौम्या गुरूरानी, अपर जिलाधिकारी प्रियंका सिंह, वरिष्ठ कोषाधिकारी अनुराग द्विवेदी व अन्य सम्बंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

# विकास खंड सभागार में क्षेत्र पंचायत सदस्यों व प्रधानों की सयुंक्त बैठक सम्पन्न

➲ सरकारी नलकूप,मुख्यमंत्री आवास,प्रधानमंत्री आवास,मनरेगा आदि योजनाओं की दी जानकारी

**तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता मैनपुरी**

घिरोर। खंड विकास सभागार में ब्लाक प्रमुख सत्यपाल सिंह यादव अध्यक्षता व खंड विकास अधिकारी अवधेश यादव की मौजूदगी में क्षेत्र पंचायत सदस्यों व प्रधानों की सयुंक्त बैठक ली गई बैठक में क्षेत्र पंचायत सदस्यों से ग्राम पंचायतों में सीसी व जल निकासी के कार्यो के प्रस्ताव लिए गए।क्षेत्र पंचायत सदस्यों ने अपनी-अपनी ग्राम पंचायत में नाली निर्माण के लिए प्रस्ताव दिए। ब्लाक प्रमुख सत्यपाल सिंह यादव ने क्षेत्र पंचायत सदस्यों व प्रधानों को सम्बोधित करते हुए बताया कि सरकार के निर्देशानुसार विकासखंड क्षेत्र में विकास कार्य कराए जा रहे है।लगभग करीब 4 वर्ष के कार्यकाल में क्षेत्र पंचायत निधि से अभीतक नाली,खरंजा,इंटरलॉकिंग व सीसी की लागत से कराए गए

है।आप लोगों से जो नए कार्यो के प्रस्ताव लिए गए है उनका निर्माण शीघ्र कराया जायेगा।विकास खंड क्षेत्र का संपूर्ण विकास कार्य करना उनकी प्राथमिकता है। जिप0 सदस्य सुजान सिंह यादव ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि क्षेत्र की जनता ने उन्हें जो प्यार और विश्वास दिया है क्षेत्र का विकास कर जनता के विश्वास पर खरा उतरने का प्रयास कर रहे है।विकास खंड के सभी कर्मचारियों को निर्देश दिए कि जनता की समस्याओं को प्राथमिकता से निस्तारण करें।किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नही की जाएगी।ग्राम पंचायत में नाली के द्वारा पानी निकास की व्यवस्था के लिए निर्देश दिए।बैठक में मौजूद रहे-बीडीओ अवधेश यादव,जेई मानवेंद्र सिंह,जेई राजेंद्र सिंह,एडीओ पंचायत रामकुमार हीरालाल, जिला पंचायत सदस्य सुजान सिंह यादव, डॉ प्रवीन यादव ,जिला पंचायत सदस्य यदुवंश यादव,जिप. सदस्य प्रतिनिधि सुनील यादव,लिपिक दीपक चौधरी,वीकेश यादव,टीटू यादव ,दुशासन सिंह कृषि,क्षेत्र पंचायत सदस्य राजेश यादव,विक्रम चौहान,सतीश बघेल,भवँर सिंह चौहान,शीलेश चौहान,रोहित चौहान,दिनेश यादव,सतीश बघेल,विजय,आंनद,गुड्डू यादव,प्रधान शीलेंद्र यादव, संजीव मिश्रा अतुल यादव,मनभावन शाक्य,धीरू तोमर,राजेंद्र शाक्य,पवन चौहान,रामबहादुर,शैलेन्द्र कुमार,उपेंद्र यादव,दिलीप,महेशचंद्र शाक्य,आराम यादव,धर्मेंद्र फौजी,जयपाल सिंह यादव,रामब्रेश यादव, दलवीर पाल,सुरेशचंद्र शाक्य,सुंदर सिंह बघेल, राजकुमार सिकरवार,सतीशचंद,सचिव रंजना यादव,अनीता सिंह, प्रमोद यादव, सुनील यादव,राजवीर सिंह ,जयपाल शाक्य,रवीश,राजीव यादव,रोहित यादव,नरेंद्र यादव,संतोष यादव, रतन सिंह सहित सभी क्षेत्र पंचायत सदस्य व प्रधान मौजूद रहे।

## उपचुनाव हेतु बने मतदान केन्द्रो का जिलाधिकारी ने किया निरीक्षण

**तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता शाहजहांपुर**

शाहजहांपुर। जिला निर्वाचन अधिकारी धर्मेंद्र प्रताप सिंह ने नगर मजिस्ट्रेट प्रवेन्द्र कुमार के साथ नगर निगम के वार्ड नंबर 12 हयातपुरा में उप चुनाव हेतु बनाए गये मतदान केंद्रो का निरीक्षण किया। 17 दिसम्बर को नगर निगम के वार्ड नंबर 12 हयातपुरा में पार्षद पद हेतु व नगर पालिका परिषद जलालाबाद के वार्ड नंबर 13 सरदार नगर में सभासद पद के लिए मतदान हुआ। नगर निगम हयातपुरा में रायविशुन दयाल इंटर कॉलेज, मोहनदास स्कूल व परशुराम संस्कार एवं जलालाबाद में ब्लॉक मतदेय में मतदान हुआ। 19 दिसंबर को उपचुनाव की मतगणना होगी। गुरुवार को पार्षद पद की मतगणना जिला बचत कार्यालय, सरदार नगर सभासद पद की मतगणना कृषि मण्डी उत्पादन समिति जलालाबाद में कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के मध्य कराई जाएगी।

## देश के मशहूर तबला वादक जाकिर हुसैन के निधन पर शोक सभा का हुई आयोजित

**तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता मैनपुरी**

मैनपुरी। कुंवर आर. सी. महिला महाविद्यालय मैनपुरी के संगीत विभाग में देश के मशहूर तबला वादक जाकिर हुसैन जी के निधन पर शोक सभा का आयोजन किया गया। महाविद्यालय की संयुक्त सचिव डॉ सुशीला त्यागी जी ने उस्ताद हुसैन जी को भावपूर्ण श्रद्धांजलि देते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित किया। संगीत विभाग की विभागाध्यक्ष तथा महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ शेफाली यादव ने भी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि संगीत के क्षेत्र में जाकिर हुसैन जी का योगदान अतुलनीय है उनका इस दुनिया से जाना संगीत के क्षेत्र में अपूर्णीय क्षति है। इस कार्यक्रम में आगरा कॉलेज, आगरा से डॉ. नागेंद्र कुमार मिश्रा जी के साथ साथ संगीत विभाग की शिक्षिका रंगोली यादव भी मौजूद रहीं।

# निरीक्षण में खुला गोशाला में गोहत्या का राज सचिव ने केयर टेकरों के विरुद्ध थाने में दी तहरीर

**तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता राकेश पाण्डेय**

सीतापुर। जिले के हरगांव थाना क्षेत्र अन्तर्गत एक गांव में गौशाला बनी हुई है।जिसमें चार केयर टेकर गोवंश की देखभाल के लिए तैनात है।जिनके द्वारा गो मांस की अवैध बिक्री करने का मामला प्रकाश में तब आया जब गौशाला का औचक निरीक्षण करने खण्ड विकास अधिकारी हरगांव पंचायत सचिव के साथ पहुंचे और वहां पर खून पडा देख उनके पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई। आनन फानन में उन्होंने बारीकी से निरीक्षण किया निरीक्षण के बाद सारा मामला प्रकाश में आया।जिसके बाद खण्ड विकास अधिकारी ने सचिव को सम्बन्धितों के खिलाफ स्थानीय स्थानीय पर प्राथमिक की दर्ज करने के निर्देश दिए। मिली जानकारी के अनुसार जिले के हरगांव थाना क्षेत्र अन्तर्गत ग्राम पिपराघूरी में एक गौशाला संचालित है।जिसमें गोवंशों की रखवाली हेतु केयर टेकर के पद पर धर्मेन्द्र कुमार पुत्र ठाकुर प्रसाद, सूरज पुत्र गोपी,रोशन पुत्र सुरेश व जमुना प्रसाद पुत्र चतुरी तैनात है।ग्राम पंचायत अधिकारी नितीश वर्मा के द्वारा थाना हरगांव में केयर टेकरों के विरुद्ध दी गई नामजद तहरीर के अनुसार गत चौदह दिसम्बर 2024 को गौशाला का स्थलीय सत्यापन करने हेतु खण्ड विकास अधिकारी आत्म प्रकाश रस्तोगी ने आकर निरीक्षण किया तो उन्हें वहां पर कुछ जगहों पर खून फैला हुआ दिखाई दिया। खून देखकर वह सन्न रह गए, मामला संदिग्ध प्रतीत होने पर उन्होंने एक संदिग्ध गड्ढे को खुदवाकर देखा तो उसमें गोवंश का मांस मिला। जिसके बाद खण्ड विकास अधिकारी ने सख्त रुख अपनाते हुए ग्राम पंचायत अधिकारी नितीश वर्मा को गोशाला में तैनात केयर टेकरों के विरुद्ध हरगांव थाने में तहरीर देकर मुकदमा दर्ज कराने के लिए आदेशित किया। खण्ड विकास अधिकारी से प्राप्त निर्देशों के अनुपालन में ग्राम पंचायत अधिकारी ने उक्त चारों केयर टेकरों के विरुद्ध हरगांव थाने में तहरीर दे दी है। खण्ड विकास अधिकारी हरगांव नें इस मामले की सूचना विभागीय उच्च अधिकारियों को दे दी है।

## दुकानदार से मारपीट कर लाइसेंसी बंदूक से फायरिंग 4 गिरफ्तार

**तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता हरदोई**

शाहाबाद/हरदोई। कोतवाली क्षेत्र में सोमवार देर शाम दुकानदार से मारपीट के बाद लाइसेंसी बंदूक से फायरिंग कर दहशत फैलाने पर पुलिस ने चार लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने लाइसेंसी बंदूक को भी बरामद कर लिया है। कोतवाली क्षेत्र के सिकंदरपुर कल्लू निवासी रामसिंह राठौर पुत्र मंगूलाल राठौर ने थानें पर दी तहरीर में कहा कि उनके पुत्र विशाल राठौर की फुटकर गल्ला खरीदने की दुकान ग्राम सिकन्दरपुर कल्लू में पिहानी शाहाबाद रोड के निकट टुमुर्की तिराहा स्थित है। बताया कि उनका पुत्र सोमवार शाम दुकान के सामने अपनी पिकअप डाला मोड

रहा था, तभी वहां से पैदल निकल रहे ओमेन्द्र सिंह उर्फ छोटे सिंह पुत्र सत्रुघन सिंह निवासी ग्राम थाना मंझिला जिला हरदोई ने मेरे पुत्र से कहा की डाला ठीक से चलाया करो। इसी बात पर ओमेन्द्र सिंह व उसके साथी अभिषेक सिंह पुत्र अमरेष सिंह, अभिज्य सिंह, उर्फ छोटू सिंह पुत्र अमरेष सिंह निवासीगण ग्राम इसाई पुरवा थाना मंझिला जिला हरदोई व मुकेश कुमार राठौर पुत्र तुन्नी लाल निवासी ग्राम व थाना मंझिला जिला हरदोई ने उसके पुत्र से लड़ाई-झगड़ा करने लगे तो प्रार्थी और उसका छोटा पुत्र सुजल बचाने गया तो, सभी लोग मारपीट व गाली-गलौज करने लगे। चीखने की आवाज सुन आस पड़ोस के लोग आ गए। इसके बाद चारों व्यक्ति जान से मारने की धमकी देते हुए भाग गए। बताया कि इसके बाद सभी लोग शाम साढ़े 7 बजे स्विफ्ट कार (यूपी30 क्यू8700) से आए और कार से उतर कर आए ओमेन्द्र सिंह उर्फ छोटे सिंह के हाथ में 12 बोर की लाइसेन्सी बन्दूक थी। वह अपनी दुकान के आस-पास खडा था। प्रार्थी को देखते ही ओमेन्द्र सिंह उर्फ छोटे सिंह के साथ तीनों व्यक्तियों ने कहा आवाज पर ओमेन्द्र सिंह उर्फ छोटे सिंह अपने लाइसेन्सी बन्दूक से प्रार्थी के उपर जान से मारने की नियत से फायर कर दिया। जिससे वह बाल-बाल बच गया। इसके बाद सभी लोग गाली-गलौज करते हुए भाग गए। पुलिस ने तहरीर के आधार पर ओमेंद्र सिंह उर्फ छोटे, अभिषेक सिंह, अभिज्य सिंह उर्फ छोटू व मुकेश कुमार राठौर के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर चारों व्यक्तियों को गिरफ्तार कर लिया। साथ ही पुलिस ने लाइसेंसी बंदूक 12 बोर व 14 कारतूस तथा 1 खोखा कारतूस भी बरामद किया।

## विवाहिता ने पंखे से फंदा लगाकर की आत्महत्या

**तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ**

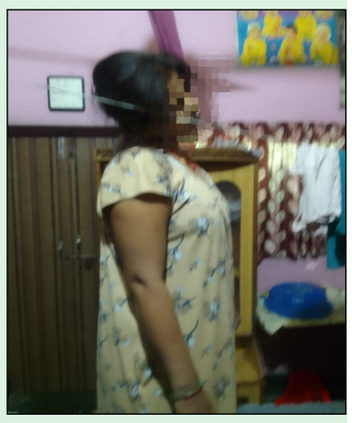

लखनऊ। थाना वजीरगंज क्षेत्र मे विवाहिता ने सवेरे सवेरे दुपट्टे के सहारे पंखे से फंदा लगाकरआत्महत्या कर ली । प्राप्त जानकारी के अनुसार भवन संख्या 161/48 ताजीखाना मशकगंज थाना वजीरगंज निवासी अरुन सैनी की पत्नी स्वाती सैनी ने सवेरे सवेरे अपनी सात वर्षीय पुत्री को तैयार करके स्कूल भेजा, पती अरुन सैनी बच्ची को नवयुग रेडियन स्कूल छोडने गया था इसी बीच स्वाती ने दुपट्टे के सहारे पंखे से फंदा लगाकर अपनी जान देदी । आत्महत्या के कारणों का पता नही चल सका है पुलिस ने शव को क़बज़े मे लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया ।

# असम विधानसभा की महिला एवं बाल कल्याण समिति ने किया कपड़ा शहर शुवालकुसी का दौरा

**तीसरा विकल्प न्यूज़ - पंकज नाथ**

असम। असम विधानसभा की महिला एवं बाल कल्याण समिति की एक टीम आज मंगलवार को कामरूप जिले के कपड़ा शहर शुवालकुसी पहुंची और हथकरघा और कपड़ा क्षेत्र के तहत जूट और मूगा के उत्पादन और विपणन जैसे विभिन्न पहलुओं का जायजा लिया। हाजो की विधायक सुमन हरिप्रिया की अध्यक्षता वाली महिला एवं बाल कल्याण समिति के दल में अन्य तीन सदस्य बोको विधायक नंदिता दास, होजाई विधायक रामकृष्ण घोष और चेंगा विधायक आश्राफुल हुसैन भी शामिल हुए। आज टीम ने सबसे पहले शुवालकुची टेक्सटाइल पार्क का दौरा किया और श्री कृष्णा सिल्क हैंडलूम नामक स्थानीय कपड़ा उद्योग में पहुंचकर वहां के बुनकरों से बातचीत की और इस कला की वर्तमान स्थिति का जायजा लिया। टीम ने शुवालकुसी में रेशम विभाग के कार्यालय और शुवालकुची इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी का भी दौरा किया। इसके बाद उन लोगों ने कामरूप जिला आयुक्त देब कुमार मिश्रा, हथकरघा एवं कपड़ा विभाग की सचिव बिजयलक्ष्मी बरुआ, हथकरघा एवं कपड़ा निदेशालय के निदेशक परागमणि महंत, रेशम विभाग के निदेशक काजरी राजखोवा और संबंधित विभाग के अधिकारियों के साथ अमीनगांव स्थित लोक निर्माण विभाग के परिदर्शन बंगले में बैठक की। बैठक के दौरान, टीम ने राज्य में हथकरघा और वस्त्र उद्योग के विकास, इस क्षेत्र में आधुनिक तकनीक के उपयोग के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था के सशक्तिकरण, बुनकरों की आय बढ़ाने आदि के लिए किए गए उपायों का जायजा लिया।

# डीएम की अध्यक्षता में सम्मिलित राज्य/प्रवर अधीनस्थ सेवा (प्रारम्भिक) परीक्षा-2024 को सकुशल सम्पन्न कराये जाने हेतु बैठक हुई आयोजित

**तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता शाहजहांपुर**

शाहजहांपुर। जिलाधिकारी धर्मेंद्र प्रताप सिंह की अध्यक्षता में सम्मिलित राज्य/प्रवर अधीनस्थ सेवा (प्रा.) परीक्षा -2024 को सकुशल संपन्न कराए जाने हेतु कलेक्ट्रेट सभागार सेक्टर मजिस्ट्रेटों, स्ट्रेटिक मजिस्ट्रेटों, केन्द्र व्यवस्थापकों व सह केंद्र व्यवस्थापकों तथा पुलिस अधिकारियों व कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया गया। जिलाधिकारी ने सेक्टर, स्टेटिक मजिस्ट्रेटों तथा केंद्र व्यवस्थापकों व सह केंद्र व्यवस्थापकों को निर्देशित किया कि 22 दिसंबर 2024 को सम्मिलित राज्य/ प्रवर अधीनस्थ सेवा (प्रा0) परीक्षा- 2024 को सकुशल संपन्न करानी है। जनपद में 16 परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं जिसमें 6816 अभ्यर्थी शामिल होंगे। जिलाधिकारी ने कहा कि परीक्षा नकल विहीन, शुचितापूर्ण वातावरण में जीरो टॉलरेंस के आधार पर संपन्न कराना है। परीक्षा केन्द्रो पर

परीक्षार्थियों के बैठने की व्यवस्था, प्रकाश, पेयजल, प्रवेश निकास प्रबन्धन की जांच की उचित व्यवस्था की जाए। सीसीटीवी कैमरे सक्रिय रहने चाहिए। परीक्षा केन्द्र में प्रवेश से पहले संघन तलाशी ली जाय, जिससे प्रतिबंधित सामग्री परीक्षा हाल में न ले जायी जा सके। उन्होंने कहा कि परीक्षा को सकुशल संपन्न कराने के लिए शासन से सख्त निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि यह परीक्षा दो पालियों में कराई जाएगी प्रथम पाली का समय प्रात: 9:30 बजे से 11:30 बजे तक एवं द्वितीय पाली का समय अपराह्न 2:30 बजे से 4:30 बजे तक है। उन्होंने सेक्टर मजिस्ट्रेटों स्ट्रेटिक मजिस्ट्रेटों केन्द्र व्यवस्थापकों व सह केंद्र व्यवस्थापकों से कहा कि परीक्षा को संपन्न कराने के लिए जो आयोग द्वारा निर्देशिका दी गई है उसका अध्ययन अच्छी तरह से करके परीक्षा को सकुशल संपन्न संपन्न कराया जाए। परीक्षा केंद्रों का पहले से ही भ्रमण कर सभी व्यवस्थाएं सुनिश्चित कराली जाए। परीक्षा को सुचितापूर्ण व शांतिपूर्ण कराना सबका दायित्व है। उन्होंने कहा कि परीक्षा के पूर्व सभी सेक्टर मजिस्ट्रेट अपने-अपने परीक्षा केंद्रों का निरीक्षण करके सीसीटीवी कैमरा का संचालन भवन की स्थिति, व्यवस्था साफ सफाई शौचालय सुरक्षा व्यवस्था आदि का निरीक्षण अवश्य कर लें। परीक्षा केंद्रों पर किसी भी प्रकार कि इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस मोबाइल फोन को पूर्णतया प्रतिबंधित रखा गया है इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही नहीं होना चाहिए। परीक्षा केंद्रों के 200 मीटर की परिधि में फोटो स्टेट मशीन एवं साइबर कैफे आदि बंद रहेंगे। जिलाधिकारी निर्देश दिए कि ड्यूटी में लगे सभी अधिकारी कर्मचारी अपने दायित्वों का निर्वहन अच्छे ढंग से करें। किसी प्रकार की लापरवाही को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। लापरवाही मिलने पर कड़ी कार्रवाई अमल में लाई जाएगी। पुलिस अधीक्षक राजेश एस ने कहा कि परीक्षा को सकुशल शान्ति पूर्ण संपन्न कराया जाएगा। आयोग द्वारा दिये गये निर्देशों का शत-प्रतिशत पालन किया जाए। परीक्षा की शुचिता को प्रभावित करने वालों पर कड़ी कार्यवाही सुनिश्चित की जाएगी। उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग प्रयागराज के संतोष ने कहा कि यह प्रदेश की बहुत ही महत्वपूर्ण परीक्षा है जिसके लिए जो आयोग से परीक्षा को संपन्न कराने के लिए जारी की गई है उसका अच्छी तरह से अध्ययन करके परीक्षा को सजगता के साथ संपन्न कराए। उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग की मंशा है कि कि परीक्षा को सुचित पूर्ण नकलविहीन संपन्न कराया जाए। परीक्षा से संबंधित ओएमआर शीट सीटिंग प्लान परीक्षार्थियों की तलाशी इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस पर प्रतिबंध परीक्षा की तैयारी प्रपत्रों को भरने डिस्प्ले चार्ट कक्ष निरीक्षकों की व्यवस्था काले बाल प्वाइंट पेन का प्रयोग केंद्र कोड़ बायोमेट्रिक कार्य सीसीटीवी कैमरा का संचालन आदि के बारे में आयोग द्वारा परीक्षा को संपन्न कराने हेतु दिए गए दिशा निर्देशों की जानकारी दी गई। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक राजेश एस, अपर जिलाधिकारी प्रशासन संजय कुमार पाण्डेय, नगर मजिस्ट्रेट प्रवेन्द्र कुमार एवं विद्यालय निरीक्षक सहित अन्य संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

# एक देश – एक चुनाव का फैसला सच्चे लोकतंत्र के लिए घातक साबित होगा : अखिलेश

**तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ**

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा है कि 'एक देश-एक चुनाव' का फ़ैसला सच्चे लोकतंत्र के लिए घातक साबित होगा। ये देश के संघीय ढांचे पर भी एक बड़ी चोट करेगा। इससे क्षेत्रीय मुद्दों का महत्व ख़त्म हो जाएगा और जनता उन बड़े दिखावटी मुद्दों के मायाजाल मे फंसकर रह जाएगी, जिन तक उनकी पहुँच ही नहीं है। लोकतांत्रिक संदर्भों में 'एक' शब्द ही अलोकतांत्रिक है। लोकतंत्र बहुलता का पक्षधर होता है। 'एक' की भावना में दूसरे के लिए स्थान नहीं होता। जिससे सामाजिक सहनशीलता का हनन होता है। व्यक्तिगत स्तर पर 'एक' का भाव, अहंकार को जन्म देता है और सत्ता को तानाशाही बना देता है। हमारे देश में जब राज्य बनाए गये तो ये माना गया कि एक तरह की भौगोलिक, भाषाई व उप सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के क्षेत्रों को 'राज्य' की एक इकाई के रूप में चिन्हित किया जाए। इसके पीछे की सोच ये थी कि ऐसे क्षेत्रों की समस्याएं और अपेक्षाएं एक सी होती हैं, इसीलिए इन्हें एक मानकर नीचे-से-ऊपर की ओर ग्राम, विधानसभा, लोकसभा और राज्यसभा के स्तर तक जन प्रतिनिधि बनाएं जाएं। इसके मूल में स्थानीय से लेकर क्षेत्रीय सरोकार सबसे ऊपर थे। 'एक देश-एक चुनाव' का विचार इस लोकतांत्रिक व्यवस्था को ही पलटने का षड्यंत्र है। एक तरह से ये संविधान को ख़त्म करने का एक और षड्यंत्र भी है। इससे राज्यों का महत्व भी घटेगा और राज्यसभा का भी। कल को ये भाजपा वाले राज्यसभा को भी भंग करने की मांग करेंगे और अपनी तानाशाही लाने के लिए नया नारा देंगे 'एक देश-एक सभा । जबकि सच्चाई ये है कि हमारे यहाँ राज्य को मूल मानते हुए ही 'राज्यसभा' की निरंतरता का संवैधानिक प्रावधान है। लोकसभा तो पाँच वर्ष तक की समयावधि के लिए होती है। ऐसा होने से लोकतंत्र की जगह एकतंत्रीय व्यवस्था जन्म लेगी, जिससे देश तानाशाही की ओर जाएगा। दिखावटी चुनाव केवल सत्ता पाने का ज़रिया बनकर रह जाएगा। अगर भाजपाइयों को लगता है कि 'वन नेशन, वन इलेक्शन, अच्छी बात है तो फिर देर किस बात की, केंद्र व सभी राज्यों की सरकारें भंग करके तुरंत चुनाव कराइए। दरअसल ये भी 'नारी शक्ति वंदन' की तरह एक जुमला ही है। ये जुमला भाजपा की दो विरोधाभासी बातों से बना है। जिसमें कथनी-करनी का भेद है। भाजपावाले एक तरफ़ 'एक देश' की बात तो करते हैं, पर देश की एकता को खंडित कर रहे हैं, बिना एकता के 'एक देश' कहना व्यर्थ है; दूसरी तरफ़ ये जब 'एक चुनाव' की बात करते हैं तो उसमें भी विरोधाभास है, दरअसल ये 'एक को चुनने' की बात करते हैं। जो लोकतांत्रिक परंपरा के खिलाफ़ है। क्या 'एक देश, एक चुनाव' का मुद्दा महंगाई, बेरोजगारी, बेकारी, बीमारी से बड़ा मुद्दा है जो भाजपाई इसे उठा रहे हैं। दरअसल भाजपा इन बड़े मुद्दों से ध्यान भटका रही है। जनता सब समझ रही है। सच तो ये है कि बीजेपी को तो सोते-जागते सिर्फ़ चुनाव दिखाई देता है, और ये सोचते हैं कि किस तिकड़म से परिणाम इनके पक्ष में दिखाई दे। ये हर बार जुगाड़ से चुनाव जीतते हैं। इसीलिए चाहते हैं कि एक साथ जुगाड़ करें और सत्ता में बने रहें। अगर 'वन नेशन, वन इलेक्शन' सिद्धांत के रूप में है तो कृपया स्पष्ट किया जाए कि प्रधान से लेकर प्रधानमंत्री तक के सभी ग्राम, टाउन, नगर निकायों के चुनाव भी साथ ही होंगे या फिर त्योहारों और मौसम के बहाने सरकार की हार-जीत की व्यवस्था बनाने के लिए अपनी सुविधानुसार? भाजपा जब बीच में किसी राज्य की चयनित सरकार गिरवाएगी तो क्या पूरे देश के चुनाव फिर से होंगे? किसी राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू होने पर क्या जनता की चुनी सरकार को वापस आने के लिए अगले आम चुनावों तक का इंतज़ार करना पड़ेगा या फिर पूरे देश में फिर से चुनाव होगा? 'एक देश-एक चुनाव' को लागू करने के लिए जो संवैधानिक संशोधन करने होंगे उनकी कोई समय सीमा निर्धारित की गयी है या ये भी महिला आरक्षण की तरह भविष्य के ठंडे बस्ते में डालने के लिए उछाला गया एक जुमला भर है? कहीं 'एक देश-एक चुनाव' की ये योजना चुनावों का निजीकरण करके परिणाम बदलने की साज़िश तो नहीं है? ऐसी आशंका इसलिए जन्म ले रही है क्योंकि कल को सरकार ये कहेगी कि इतने बड़े स्तर पर चुनाव कराने के लिए उसके पास मानवीय व अन्य ज़रूरी संसाधन ही नहीं हैं, इसीलिए हम चुनाव कराने का काम भी (अपने लोगों को) ठेके पर दे रहे हैं। जनता का सुझाव है कि भाजपा सबसे पहले अपनी पार्टी के अंदर ज़िले-नगर, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर इस तरह के चुनावों को एक साथ करके दिखाए फिर पूरे देश की बात करे। आशा है देश-प्रदेश की जागरुक जनता, पत्रकार बंधु और लोकतंत्र के पक्षधर सभी दलों के कार्यकर्ता, पदाधिकारी व नेतागण ये बातें स्थानीय स्तर पर अपनी-अपनी भाषा-बोली में हर गाँव, गली, मोहल्लों में जाकर आम जनता को बताएंगे और उन्हें समझाएंगे कि 'एक देश, एक चुनाव' किस तरह पहले तानाशाही को जन्म देगा और फिर उनके हक़ और अधिकार को मारेगा, आरक्षण को ख़त्म करेगा और फिर एक दिन संविधान को भी और आख़िर में चुनाव को भी।

# अज्ञात वाहन ने नीलगाय को मारी टक्कर, बुरी तरह से पूरी तरह घायल

**तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ**

लखनऊ। किसान पथ पर सुबह एक तेज़ रफ्तार अज्ञात वाहन ने नीलगाय को टक्कर मार दी। हादसा सुबह लगभग ४३० बजे माइलस्टोन शिव धारा मोहिद्दीनपुर के पास हुआ। टक्कर से नीलगाय घायल हो गई। उसी समय एनएचएआईकी टीम, विष्णु चौधरी के नेतृत्व में क्षेत्र में गश्त कर रही थी।घायल अवस्था में नीलगाय को देखकर विष्णु चौधरी ने तत्काल नगर निगम को सूचना दी। सूचना मिलतेही नगर निगम की टीम ने तुरंत मौके पर पहुंचकर घायल नीलगाय को इलाज के लिए ले जाया गया। अज्ञात वाहन और उसके चालक का अब तक पता नहीं चल सका है।

# शीशमहल वेलफेयर सोसाइटी की मासिक बैठक: बैठक में कई अहम मुद्दों पर चर्चा

**तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ**

लखनऊ। शीशमहल वेलफेयर सोसाइटी की मासिक बैठक मंगलवार को डॉ. सैयद अनवर हुसैन रिज़वी की अध्यक्षता में सोसाइटी के कार्यालय में संपन्न हुई। इस बैठक में कई अहम मुद्दों पर चर्चा की गई। डॉ. अनवर हुसैन रिज़वी ने बच्चों की शिक्षा पर ज़ोर देते हुए कहा कि सोसाइटी द्वारा संचालित मदरसे में हर महीने बच्चों का टेस्ट लिया जाए और उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए पुरस्कृत भी किया जाए। उन्होंने शिक्षा के महत्व पर बल देते हुए इसे समाज की तरक्की का आधार बताया। बैठक के दौरान ज़रूरतमंदों की मदद पर भी विशेष ध्यान दिया गया। सोसाइटी के सदस्यों ने अधिक से अधिक लोगों को इस मुहिम से जुड़ने की अपील की। मदरसों का ब्यौरा- सोसाइटी के जनरल सिक्रेटरी मोहम्मद शब्बीर ने मदरसे में शिक्षा ग्रहण कर रहे बच्चों की पढ़ाई, ग़रीब बच्चों की स्कूल फीस, और ज़रूरतमंदों के इलाज के लिए की जा रही मदद का ब्यौरा पेश किया। उपस्थित लोग- बैठक में ताजदार हुसैन, अकबर हुसैन, शकील अख्तर, सरकार हुसैन, अच्छन मियां, रज़ा इमाम, आमिर अली समेत कई पदाधिकारी मौजूद रहे। इस बैठक ने सोसाइटी के सामाजिक और शैक्षिक योगदान को और मजबूती देने का संकल्प लिया।

# एलडीए अधिकारियों की दुषित कार्यशैली के चलते बेलगाम हुआ अवैध निर्माण

**सीलिंग में उत्तर प्रदेश नगर योजना विकास अधिनियम 1973 का खुला उल्लंघन**

- **एलडीए उपाध्यक्ष अध्यक्ष मंडल आयुक्त के आदेशों की अवहेलना कर जोनल अधिकारी तैनाती क्षेत्रों में जाने के बजाय कार्यालय में बैठकर काम का लिपटारा कर देते हैं।**
- **विहित न्यायालय के पेशकार और बिल्डरों की दुरभि संधि के चलते वादों के बिचाराधीन पत्रावलियों को दबा दिया जाता है।**

**तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ**

लखनऊ। अवैध निर्माणों पर प्रभावी कार्यवाही करने के लिए लखनऊ विकास प्राधिकरण के द्वारा उत्तर प्रदेश नगर योजना विकास अधिनियम 1973 की धाराओं के तहत कार्यवाही के नाम पर प्रवर्तन क्षेत्र में तैनात अवर व सहायक अभियंता के साथ ही जोनल अधिकारी अवैध निर्माण के नाम पर निर्माणकर्ता का आर्थिक और मानसिक उत्पीड़न करके दोहन कर प्राकृतिक न्याय की खुलेआम हत्या कर देते हैं। लखनऊ विकास प्राधिकरण के द्वारा उत्तर प्रदेश नगर योजना विकास अधिनियम 1973 की धाराओं के तहत नियम विरुद्ध निर्माणों पर कार्यवाही के नाम पर प्रवर्तन जोन क्षेत्रों में तैनात अवर अभियंता व सहायक अभियंता तथा जोनल अधिकारी निर्माणकर्ताओं से दूरभाष संधि करके अवैध निर्माण करवाने में लिप्त उक्त लोगों के द्वारा प्राधिकरण विहित प्राधिकारी न्यायालय में विचाराधीन वाद की पूर्ण जानकारी न देकर के अवैध निर्माण को पूर्ण करवा देते हैं। विहित प्राधिकारी के द्वारा प्रवर्तन में तैनात अवैध निर्माण के संरक्षणदाता अवर व सहायक अभियंता तथा जोनल अधिकारियों से कोई भी व्याख्या न लेकर निर्माणकर्ता को अनवरत अदालत के चक्कर लगवाकर प्राधिकरण के प्रवर्तन जोन क्षेत्रों में तैनात अवर व सहायक तथा जोनल अभियंताओं से कोई प्रगति व्याख्या नहीं मांगी जाती है, और वर्षों बाद सीलिंग व ध्वस्ती के पारित आदेश के बाद अवैध निर्माण के हिमायती संरक्षणदाता अवर व सहायक अभियंता के द्वारा अवर न्यायालय में अपील करने की राय देकर मामले को और लंबित करवा कर अवैध निर्माण को अध्यासित करवाकर मामले की अंत्येष्टि कर दी जाती है। ऐसे ही हजारों अवैध निर्माण के मामले मंडल आयुक्त लखनऊ मंडल तथा सचिव नगर विकास विभाग के कार्यालय में लंबित हैं। प्राधिकरण उपाध्यक्ष प्रथमेश कुमार व प्राधिकरण अध्यक्ष/मंडलायुक्त रोशन जैकब द्वारा अवैध निर्माणों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही के निर्देशों के बाद भी प्रवर्तन जोन के क्षेत्रों में तैनात अवर व सहायक अभियंता तथा जोनल अधिकारियों की कार्यशैली में कोई भी बदलाव नहीं हो रहा है और शहर के चारों ओर बड़े पैमाने पर खुलेआम अवैध निर्माण हो रहे हैं। उपाध्यक्ष द्वारा अवैध निर्माण के मामले में मांगी गई साप्ताहिक आख्या के आदेश सफेद हाथी प्रतीत हो रहे हैं। विहित न्यायालय विराजमान पेशकार और बिल्डरों की दूरभाष संधि के चलते अवैध निर्माण के विचाराधीन मामलों की पत्रावलिया दबाई जा रही हैं और विहित प्राधिकारी द्वारा पत्रावलियों पर किए जाने वाले आदेश को लंबित करवाकर अवैध निर्माण वह पूर्ण करके अध्यासित करवाया जा रहा है। अवैध निर्माण के खेल में उच्च अधिकारी और जोनल अधिकारियों की भी मिलीभगत होती है। एलडीए उपाध्यक्ष अध्यक्ष मंडल आयुक्त के आदेशों की अवहेलना कर जोनल अधिकारी तैनाती क्षेत्रों में जाने के बजाय कार्यालय में बैठकर काम का लिपटारा कर देते हैं। विहित न्यायालय के पेशकार और बिल्डरों की दूरभाष संधि के चलते वादों के विचाराधीन पत्रावलियों को दबा दिया जाता है।

## समाचार

### राजा महमूदाबाद हाउस में शहर के सम्मानित लोगों की शिरकत

**तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ**

लखनऊ। राजा महमूदाबाद हाउस, कैसरबाग में आयोजित एक खास डिनर ने शहर की मशहूर हस्तियों को एक मंच पर इकट्ठा किया। फ्रांस के राजदूत थिएरी मथौ द्वारा आयोजित इस डिनर में लखनऊ के प्रमुख धर्मगुरु और सम्मानित हस्तियां शामिल हुईं। डिनर में मौलाना सैफ अब्बास, शिया वक्फ बोर्ड के चेयरमैन अली जैदी, वरिष्ठ पत्रकार हुसैन अफसर समेत शहर के कई अन्य प्रमुख लोग उपस्थित रहे। इस मौके पर सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक मुद्दों पर गहरी चर्चा हुई। आयोजन का उद्देश्य न केवल लखनऊ की अदबी और सामाजिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करना था, बल्कि इसकी बेमिसाल तहज़ीब और मेहमाननवाज़ी को भी प्रदर्शित करना था। यह आयोजन लखनऊ की सांस्कृतिक विरासत को और मजबूती देने वाला एक खास मौका साबित हुआ।

### मकान में लगी आग मचा हड़कंप फायर ब्रिगेड की तीव्रता से टला बड़ा हादसा

**तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ**

लखनऊ। हासेमऊ इलाके में एक मकान में आग लगने की घटना ने हड़कंप मचा दिया। स्थानीय लोगों ने तुरंत गोमती नगर फायर ब्रिगेड को सूचना दी, जिस पर फायर सर्विस यूनिट तुरंत मौके पर पहुंची। आग मकान के प्रथम तल के एक कमरे में लगी थी, जहां रखा हुआ सामान जल रहा था। फायर यूनिट ने कमरे का ताला काटकर कड़ी मशक्कत के बाद आग पर पूरी तरह काबू पा लिया। तेज कार्रवाई से बड़ा हादसा टला,तीन मंजिला मकान में केवल प्रथम तल के एक कमरे को नुकसान पहुंचा, जबकि शेष मकान को सुरक्षित बचा लिया गया। मकान मालिक ग्राउंड फ्लोर पर रहते हैं, जबकि प्रथम तल पर किराएदार रवी वर्मा निवास करते हैं, जो घटना के समय मौजूद नहीं थे। आग में एक अलमारी और कुछ अन्य सामान जल गया।किसी प्रकार की जनहानि नहीं हुई। फायर सर्विस यूनिट की सतर्कता और तेज़ कार्रवाई से आग को फैलने से रोक लिया गया और एक बड़ा हादसा टल गया। आग लगने के कारणों का अभी तक पता नहीं चल सका है।

### 21 दिसम्बर को चुने जाएंगे बुद्धेश्वर विकास महासभा के पदाधिकारी

**तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ**

लखनऊ। बुद्धेश्वर विकास महासभा का चुनाव इस समय चर्चा का विषय बना हुआ है। मंगलवार को अध्यक्ष पद के लिए दो, वरिष्ठ उपाध्यक्ष के लिए दो एवं महामंत्री पद के लिए एक उम्मीदवार ने नामांकन दाखिल किया। इससे पहले 15 एवं 16 दिसंबर को कोषाध्यक्ष संगठन महामंत्री एवं महामंत्री पद के लिए नामांकन दाखिल हो चुके हैं। निर्वाचक एवं संरक्षक मंडल के पदाधिकारियों ने बताया कि बुधवार को नाम वापसी के बचे हुए प्रत्याशियों के बीच 21 दिसंबर को स्थानीय डीबीएल लान में मतदान कराया जाएगा। 21 दिसंबर को ही मतगणना के तुरंत बाद शपथ ग्रहण भी कराया जाएगा। नामांकन प्रक्रिया के दौरान निर्वाचन मंडल में रिषि चौरसिया, राम शंकर राजपूत, अमर त्रिपाठी, राकेश मोहन मिश्रा एवं सुनील द्विवेदी उपस्थित रहे। इनके बीच है कड़ा मुकाबला कोषाध्यक्ष पद पर सुदीप तिवारी मिन्टी मैया एवं संगठन महामंत्री पद पर अभिषेक गुप्ता राम का निर्विरोध निर्वाचन तय माना जा रहा है। क्योंकि निश्चित समय अवधि तक किसी अन्य ने इस पद पर नामांकन दाखिल नहीं किया। वहीं अध्यक्ष पद पर वर्तमान अध्यक्ष राजेश शुक्ला एवं वरिष्ठ उपाध्यक्ष रहे राम आधार यादव की टक्कर तय मानी जा रही है महामंत्री पद पर सुखपाल सिंह एवं एसपी पांडे के बीच रोमांचक मुकाबला है। इसी प्रकार वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद पर डॉ दिनेश माथुर एवं व्यवसायी डीके यादव के बीच मुकाबला तय माना जा रहा है।

### भाषा विवि में परीक्षा के दूसरे दिन 34 छात्र रहे अनुपस्थित

**तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ**

लखनऊ। ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय लखनऊ के सत्र 2024-25 के विषम सेमेस्टर की परीक्षाएं प्रारंभ हो गई हैं। परीक्षा के दूसरे दिन दोनों पालियों में कुल 1916 विद्यार्थियों ने परीक्षाओं में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई तो वहीं 34 विद्यार्थी अनुपस्थित रहे। विषम सेमेस्टर की परीक्षाओं के केन्द्र अध्यक्ष प्रो. एहतेशाम अहमद ने बताया कि मंगलवार को कुलसचिव डॉ. महेश कुमार ने केन्द्र का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान सभी व्यवस्थाओं को दुरुस्त रखने के निर्देश दिए। जिससे परीक्षा में किसी प्रकार की बाधा न उत्पन्न हो सके।

### चित्रों के जरिए दिखाया महिलाओं का संघर्ष

**तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ**

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के पाश्चात्य इतिहास विभाग एवं महिला अध्ययन संस्थान की ओर से मिशन शक्ति चरण-5 के अन्तर्गत एक कार्यक्रम का आयोजन डीपीए सभागार में किया गया। कार्यक्रम के अन्तर्गत फ्राम ऑपरेशन टू स्वाभिमान - इण्डियन वूमेन रीवलेमिंग देयर स्टोरीज पर आधारित विभिन्न ऐतिहासिक संघर्षशील महिला व्यक्तित्वों के कृत्तित्व को वृत्तचित्र के माध्यम से दर्शाया गया। मिशनशक्ति की नोडल अधिकारी डॉ. मानिनी श्रीवास्तव ने कार्यक्रम की रूपरेखा एवं उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। विभागाध्यक्षा प्रो. अमिता सोनकर एवं वरिष्ठ प्रो. मधु राजपूत ने कार्यक्रम पर अपने विचार रखे। संचालन डॉ. अंशु चौधरी ने किया। इस मौके पर प्रोफेसर अर्चना तिवारी, डॉ शालिनी पाठक, शोधार्थी उमेश कुमार एवं विभाग के सहयोगी अमित गुप्ता व अन्य मौजूद रहे।

# अधिकांश परीक्षा परिणामों में बढ रही लड़कियों की भागीदारी, बेटिया हर क्षेत्र में बना रहीं स्वर्णिम भविष्य – डॉ. राजेश्वर सिंह

**बप्पा श्रीनारायण वोकेशनल गर्ल्स इंटर कॉलेज के वार्षिकोत्सव में पहुंचे डॉ. राजेश्वर सिंह: की महत्वपूर्ण घोषणाएँ**

**तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ**

लखनऊ। सरोजनीनगर विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह चारबाग स्थित, बप्पा श्रीनारायण वोकेशनल (केकेवी) गर्ल्स इंटर कॉलेज, के वार्षिकोत्सव में बतौर मुख्य अतिथि पहुंचे। इस दौरान डॉ. सिंह ने दीप प्रज्जवलित कर सांस्कृतिक समारोह की शुरुआत की। उपस्थिति छात्राओं, विद्यालय स्टाफ और अभिभावकों को संबोधित करते हुए डॉ. सिंह ने बेटियों के विद्यालयों में जाना उन्हें प्रेरित, प्रोत्साहित करने और युवाओं का मार्गदर्शन करने की अपनी प्राथमिकता बताई। सरोजनीनगर विधायक ने बेटियों की शिक्षा पर जोर देते हुए कहा कि, वैश्विक स्तर पर जीडीपी में मातृशक्ति का योगदान 45त्न है, जबकि भारत की लष्ठक्कमें मातृशक्ति का योगदान अभी केवल 22त्न ही है। विधायक ने आगे जोड़ा यह आंकड़ा प्रमाण है कि, हमें अपनी बेटियों को प्रेरित, प्रोत्साहित और अधिक अवसर प्रदान किए जाने की आवश्यकता है। भारत में लड़कियों की प्रगति के आंकड़े गिनाते हुए डॉ. सिंह ने आगे कहा, आज, भारत की बेटियां समर्पण, सामर्थ्य, दृढ़ इच्छाशक्ति और अथक परिश्रम के बल पर प्रगति के नए शिखर छूने को आगे बढ़ रही हैं। यूपीएससी-2022 परीक्षा परिणाम में टॉप 10 में 6 बेटियाँ थीं, वहीं यूपीपीएससी 2022 में भी टॉप 10 में 8 बेटियाँ थीं, पीसीएस (जे)-2022 में टॉप 20 चयनित अभ्यार्थियों में से 15 बेटियों का होना, प्रमाण है कि बेटियाँ हर क्षेत्र में अपने भविष्य को स्वर्णिम बना रही हैं। साथ ही सरोजनीनगर विधायक ने कॉलेज में सुविधाओं के प्रसार के लिए अनेक घोषणाएं भी कीं। डॉ. सिंह ने सीएसआर फंड के माध्यम से विद्यालय भवन के जीर्णोद्धार के लिए 10 लाख की बड़ी राशि प्रदान करने का आश्वासन दिया। डिजिटल शिक्षा को भविष्य के लिए सबसे महत्वपूर्ण बताते हुए डॉ. सिंह ने 5 कंप्यूटर प्रदान कर विद्यालय में डिजिटल लाइब्रेरी और डिजिटल एम्पावरमेंट सेंटर की स्थापना का आश्वासन दिया। डिजिटल एम्पावरमेंट केन्द्रों की स्थापना सरोजनी नगर विधायक का माइलस्टोन प्रोजेक्ट है। इन केन्द्रों पर युवाओं को फ्री डिजिटल लाइब्रेरी, कैरियर काउंसलिंग, डिजिटल कोर्सेज का प्रशिक्षण और प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए सामग्री भी उपलब्ध कराई जाती है। लड़कियों के लिए बैंकिंग, वित्त और अकाउंटेंसी को सबसे लोकप्रिय क्षेत्र बताते हुए कॉलेज प्रबंधन की मांग पर सरोजनीनगर विधायक ने सेल्फ फाइनेंस स्कीम के तहत कॉमर्स कोर्स की मान्यता दिलाए जाने के लिए प्रयास करने का आश्वासन भी दिया। इस अवसर पर डॉ. सिंह ने कॉलेज को वर्ष 1957 से निरंतर लखनऊ में शिक्षा की ज्योति जला रहे %बप्पा श्रीनारायण वोकेशनल गर्ल्स इंटर कॉलेज, के रूप में उल्लेखित करते हुए वार्षिकोत्सव के अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों के शुभारंभ को अपने लिए विशेष सम्मान बताया। डॉ. सिंह ने बेटियों के मार्गदर्शन का अवसर प्रदान करने के लिए कॉलेज के अध्यक्ष त्रिलोकी नाथ मिश्रा, प्रबंधिका डॉ. सौम्या शुक्ला, प्राचार्या कीर्ति वर्मा एवं समस्त विद्यालय परिवार का आभार व्यक्त किया।

# आज 18 दिसंबर को डॉ. राजेश्वर सिंह द्वारा हिंदू रक्षा संकल्प यात्रा रैली

**राजेश्वर सिंह ने एकजुट होने का आवाहन किया**

**तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ**

लखनऊ। सरोजनीनगर विधायक डॉ राजेश्वर सिंह द्वारा आगामी 18 दिसम्बर को तेलीबाग हनुमान मंदिर से शनि मंदिर चौराहा तक हिन्दू रक्षा संकल्प यात्रा का आयोजित की जा रही है। जिसमें सरोजनीनगर के सभी क्षेत्रवासियों को इस संकल्प यात्रा के लिए आवाहन किया सनातन धर्म और हिंदुओं की रक्षा के लिए हम सभी लोगों को एकजुट रहना होगा. तक सहेंगे,हमारे बांग्लादेशी भाई-बहन अत्याचार अब समय आ गया,हर घटना का हो प्रबल प्रतिकार बांग्लादेश में मंदिरों की रक्षा, हिंदुओं के सम्मान में,विराट जन आक्रोश यात्रा हिन्दू रक्षा संकल्प यात्रा में यशस्वी विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह जी सबकी उपस्थिति, सबके समर्थन का आह्वान करते हैं = स्थान = तेलीबाग हनुमान मंदिर से शनि मंदिर चौराहे तक समय = दोपहर 01 बजे से 02 बजे तक धर्मरक्षा के इस महाकुंभ में अपने बहुमूल्य समय से 1 घंटे अवश्य निकालिए आपका समर्थन, करोड़ों हिंदुओं की ताकत बनेगा.

# ब्लू बेल स्कूल और राज माता एकेडमी महानगर में डिजिटल लाइब्रेरी की स्थापना के लिए डॉ. राजेश्वर सिंह ने प्रदान किये 10 कंप्यूटर

**तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ**

लखनऊ। महानगर स्थित ब्लू बेल स्कूल और राज माता एकेडमी के फाउंडर्स डे कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि पहुंचे सरोजनीनगर विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह ने एकेडमी की संस्थापिका एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी प्रभा अस्थाना जी को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा, इस एकेडमी के रूप में शिक्षा के प्रति उनका दृष्टिकोण आने वाली पीढ़ियों को आलोकित करता रहेगा। प्राइमरी शिक्षा के महत्व को उल्लेखित करते हुए डॉ. सिंह ने कहा, प्राथमिक शिक्षा बच्चे की क्षमता को उजागर करने, संभावनाओं से भरा भविष्य बनाने की कुंजी है। सरोजनीनगर विधायक ने विद्यालय में स्मार्ट क्लासेज का अवलोकन खुशी व्यक्त की और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के बच्चों को आगे बढाने के विद्यालय के संकल्प की प्रशंसा की। विद्यालय प्रबंधन की प्रशसा करते हुए डॉ. सिंह ने कहा, %%एक मोमबत्ती की भांति शिक्षक अपने छात्र - छात्राओं के उज्जवल भविष्य के लिए स्वयं का जीवन अर्पित कर देता है, एकेडमी की प्रबंधक चारू प्रिया अस्थाना एवं समस्त स्टाफ को उनके निरंतर प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई।%% साथ ही सरोजनी नगर विधायक ने डिजिटल शिक्षा के प्रोत्साहन के संकल्प क्रम में एकेडमी में 10 कंप्यूटर प्रदान कर डिजिटल लाइब्रेरी की सथापना का संकल्प व्यक्त किया।

**हिन्दुस्तान हस्तशिल्प महोत्सव में की सहभागिता -**

आशियाना स्थित स्मृति उपवन में माँ गायत्री जनसेवा संस्थान एवं नीशू वेलफेयर फाउन्डेशन द्वारा आयोजित %हिन्दुस्तान हस्तशिल्प महोत्सव% में अपने बड़े भाई रामेश्वर सिंह जी के साथ पहुंचे डॉ. राजेश्वर सिंह ने देश के 28 राज्यों से आये शिल्पकारों की अनुपम कलाकृतियों का अवलोकन और हस्त शिल्पियों का उत्साहवर्धन किया। इस अवसर पर उपस्थित शिल्पकारों और दर्शकों को संबोधित करते हुए डॉ. सिंह ने कहा, हस्त शिल्प केवल कला नहीं, अपितु हमारे पूर्वजों की धरोहर और परिश्रम की जीवंत मिसाल है, जो समय के साथ सजीव बनी रहती है। हस्तशिल्प देश के 70 लाख लोगों को रोजगार के अवसर प्रदान करता है, जिसमें से 38 लाख महिलायें हैं, इस दृष्टि से भी हस्त शिल्प अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत के निर्यात में हस्तशिल्प का योगदान करीब 35 हजार करोड़ है, जो प्रतिवर्ष 14 - 15त्न की दर से बढ़ रहा है, हस्त शिल्प के सभी उत्पाद प्रकृति के अनुकूल होते हैं।

सरोजनीनगर विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह ने अपनी विधानसभा क्षेत्र में इस भव्य आयोजन के लिए अरुण प्रताप सिंह, गुंजन वर्मा, मनोज सिंह चौहान, विनय दुबे, रनवीर सिंह, हेमू चौरसिया एवं आयोजन मंडल के सभी सदस्यों को बधाई दी। महोत्सव में पूर्व विधायक चन्द्र प्रकाश मिश्र मटियारी , पार्षद प्रतिनिधि कमलेश सिंह, पार्षद केएन सिंह, आमोद कुमार, अम्बिका सिंह, शिव कुमार सिंह चच्चू, शेर अली खां, विनय सूदन एवं अन्य भाजपा नेता मौजूद रहे।

**सिन्धी प्रीमियर लीग - नेशनल लेवल का किया शुभारम्भ -**

सरोजनीनगर विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह ने सोमवार को आशियाना स्थित मल्टी एक्टिविटी सेंटर में सिन्धी प्रीमियर लीग - नेशनल लेवल का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर विधायक बल्ले से चौके - चक्के लगाते नजर आये। डॉ. सिंह ने प्रीमियर लीग के आयोजन की प्रसंशा करते हुए कहा इससे प्रतिभाओं में निखार आता है, उनका आत्मविश्वास बढ़ता है। विधायक ने बताया खेल से हमें टीम भावना, निर्णय लेने, अच्छा स्वास्थ्य, शारीरिक फिटनेस आदि जीवन के सबसे महत्वपूर्ण गुण विकसित होते हैं।

सिन्धी समाज की प्रसंशा करते हुए सरोजनीनगर विधायक ने आगे जोड़ा, सिन्धी समाज का गौरवशाली इतिहास अत्यंत प्राचीन होने के साथ प्रेम और सहिष्णुता का पर्याय है, सिन्धी समाज का साहित्य एवं संगीत उत्कृष्ट श्रेणी का है। सरोजनीनगर में सिन्धी समाज की विभूतियों के सम्मान में 2 सड़कों के नामकरण और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हेमू कालाणी की भव्य प्रतिमा की स्थापना का संकल्प व्यक्त करते हुए डॉ. सिंह ने सरोजनीनगर में सिन्धी सांस्कृतिक सप्ताह मनाये जाने का आह्वान भी किया।

लखनऊ में सिन्धी समाज द्वारा सिन्धी प्रीमियर लीग के आयोजन को युवाओं के स्वास्थ्य, सामजिक एकजुटता, सहयोग और समरसता के दृष्टिगत एक दूरदर्शी पहल बताते हुए डॉ. सिंह ने आयोजन समिति के सभी सदस्यों को बधाई दी। इस दौरान डॉ. सिंह ने लीग में प्रतिभाग कर रही 12 टीमों में से विजेता टीम को 50 हजार की नगद प्रोत्साहन राशि प्रदान करने की घोषणा की। कार्यक्रम में साईं कृष्ण लाल, विनोद पंजाबी, अजय देमरा, नानक चंद लखमानी, वीरेंद्र खत्री, विवेक लधानी, मुरलीधर आहूजा, संजय गुरुनानी, संजय आहूजा, सत्येन्द्र भवनानी, कपिल, भीमेश, कवि, राजू, राहुल, पुलकित व सिन्धी समाज के अन्य गणमान्य मौजूद रहे।

# संपादकीय

## काबू में मलेरिया

यह सुखद है कि पूरी दुनिया में पिछले दो दशकों में मलेरिया के खिलाफ जंग में आशातीत सफलता मिली है। जिससे जहां मलेरिया के मामलों में तेजी से गिरावट दर्ज की गई है, वहीं मौत के आंकड़ों में कमी आई है। पिछले दिनों जारी विश्व मलेरिया रिपोर्ट 2024 में कहा गया है कि सार्थक प्रयासों से भारत मलेरिया की दृष्टि से अधिक संवेदनशील देशों की सूची से बाहर निकल गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने हालिया रिपोर्ट में जिक्र किया है कि भारत में मलेरिया के मामलों में जहां 69 फीसदी की कमी आई है, वहीं इससे होने वाली मौतों में 68 फीसदी की कमी आई है। उल्लेखनीय है कि देश के मलेरिया से ज्यादा प्रभावित राज्यों में सघन अभियान चलाया गया। साथ ही जागरूकता अभियान से भी इस दिशा में लक्ष्यों को हासिल करने में मदद मिली है। दरअसल, मलेरिया से ज्यादा प्रभावित राज्यों पश्चिम बंगाल, झारखंड, मध्य प्रदेश व छत्तीसगढ़ में मलेरिया उन्मूलन अभियान युद्ध स्तर पर चलाया गया। इसके चलते भारत को डब्ल्यूएचओ ने उन देशों में शुमार किया है जिन्होंने इस दिशा में आशातीत सफलता हासिल की है। सुखद यह है कि मलेरिया से अधिक प्रभावित देशों मसलन अफ्रीकी देशों में नई वैक्सीन के ट्रायल के बेहतर परिणाम सामने आए हैं। ऐसे में उम्मीद व्यक्त की जा रही है कि हर साल जो लाखों लोग मलेरिया की चपेट में आते हैं, नई वैक्सीन के प्रभाव से उनकी जान के जोखिम को कम किए जाने में मदद मिल सकेगी। दरअसल, वैक्सीन के फेज-2बी के क्लीनिकल ट्रायल के परिणाम बताते हैं कि वैक्सीन सुरक्षित है और मजबूत रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित करने में कारगर है। वैक्सीन की प्रभावशीलता पचपन फीसदी बतायी गई है। उल्लेखनीय है कि मशहूर चिकित्सा पत्रिका लैंसेट में प्रकाशित रिपोर्ट बताती है कि वैक्सीन रक्त में मौजूद मलेरिया की वजह बनने वाले परजीवियों के खिलाफ प्रभावी पायी गई है। जिसे जीवन की रक्षा के लिये बड़ी कामयाबी माना जा रहा है।उल्लेखनीय है कि जहां भारत में वर्ष 2017 में मलेरिया के चौंसठ लाख मामले थे, वे वर्ष 2023 में घटकर बीस लाख रह गए। वहीं मलेरिया से होने वाली मौतों पर भी अंकुश लगा है। दरअसल, जागरूकता अभियान से उत्पन्न चेतना तथा चिकित्सा सुविधाओं के विस्तार से मलेरिया उन्मूलन में खासी मदद मिली है। एक अनुमान के अनुसार कोई पौने दो करोड़ मलेरिया के मामलों को टाला गया है। वहीं मलेरिया जोखिम में भी आशातीत गिरावट आई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार दक्षिण पूर्व एशिया के आठ देश मलेरिया से सर्वाधिक प्रभावित थे। जिसमें भारत में भी स्थिति विगत में चुनौतीपूर्ण थी। दरअसल, विश्व स्वास्थ्य संगठन इस बात को लेकर चिंतित था कि इस क्षेत्र में सघन आबादी के चलते दुनिया की एक चौथाई आबादी निवास करती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने दक्षिण एशिया के इन देशों में मच्छरों से पैदा होने वाले मलेरिया पर अंकुश लगाने के लिए सहज उपचार की उपलब्धता सुनिश्चित करने को कहा था। जिससे लोगों के जीवन पर जोखिम को कम किया जा सके। यह तभी संभव था जब मलेरिया के प्रति संवेदनशील लोगों तक सहजता से उपचार पहुंचा सकें। महत्वपूर्ण बात यह है कि जहां भारत, इंडोनेशिया, बांग्लादेश व नेपाल में मलेरिया के मामलों में गिरावट आई है, वहीं म्यांमार, थाईलैंड व दक्षिण कोरिया में मलेरिया के मामलों में वृद्धि का ट्रेंड देखा गया है। यही वजह है कि मलेरिया उन्मूलन पर 2024 की रिपोर्ट जारी करते हुए, डब्ल्यूएचओ ने दक्षिण पूर्व एशिया की कमजोर आबादी पर ध्यान केंद्रित करने को इन देशों की सरकारों से विशेष तौर पर कहा है। डब्ल्यूएचओ ने इसके लिये मलेरिया की पहचान, बचाव तथा इलाज को प्राथमिकता सुनिश्चित करने का आग्रह सरकारों से किया है। जिससे मलेरिया के मामलों में गिरावट से लाखों जिंदगियों की रक्षा की जा सके। ऐसे में नई वैक्सीन के उत्साहजनक परिणामों से मलेरिया के संदर्भ में संवेदनशील देशों में इसके खिलाफ लड़ाई को तेज करने में मदद मिलेगी। जो मानवता के लिये एक सुखद संकेत भी है।

## भगदड़ एक सरकारी नाकामी

आज भीड़-प्रबंधन की बात करते हैं, क्योंकि यह व्यापक स्तर पर इनसानी मौतों से जुड़ा मुद्दा है और उसके प्रति लापरवाही का रवैया रहा है। देश के कई हिस्सों में भीड़-प्रबंधन की नाकामी और नालायकी के कारण भगदड़ मचती रही है। अक्सर पुलिस की नाकामी करार दी जाती रही है। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने 2014 में 95 पन्नों के दिशा-निर्देश जारी किए थे कि भीड़ को भगदड़ में तब्दील होने से कैसे रोका जाए? इसी साल नरेंद्र मोदी पहली बार देश के प्रधानमंत्री चुने गए थे। इन दिशा-निर्देशों के बावजूद भगदड़ें मचती रही हैं। इसी साल जुलाई में हाथरस (उप्र) में एक धार्मिक सत्संग में भीड़ बेकाबू हो गई और भगदड़ में करीब 125 मौतें हो गईं। सिर्फ आयोजकों को जेल में डाल कर घटना की इतिश्री कर दी गई। हाल ही में हैदराबाद में 'पुष्पा-2' फिल्म के प्रीमियर पर भीड़ अनियंत्रित हो गई, कुछ मौतें हो गईं, पुलिस ने अभिनेता अल्लू अर्जुन को गिरफ्तार कर लिया। अदालत ने उन्हें जमानत दे दी। क्या भगदड़ का कारण यही था? दरअसल अंग्रेजी में जिस शब्द का अर्थ 'भगदड़' है, वह घोड़ों और पशुओं की भगदड़ है, जो डर कर या उत्तेजित होकर एक ही दिशा में भागने लगते हैं। तब भगदड़ मच जाती है। 'इनसानी भगदड़' कुछ और है, उसके कारण भी भिन्न हैं, उनके लिए यह बहाना नहीं बनाया जा सकता कि सरकार ने दिशा-निर्देश जारी नहीं किए अथवा पुलिस, प्रशासन को उचित प्रशिक्षण नहीं दिया गया अथवा सरकार का रवैया संवेदनशील नहीं है।

"लोकसभा के लिये वह एक महत्वपूर्ण क्षण हो सकता था यदि संविधान की 75 साल की गौरवशाली यात्रा पर आयोजित दो दिवसीय चर्चा के अवसर पर दिये अपने भाषण में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी वाकई कुछ ऐसा कहते जो भारत के संसदीय इतिहास के पन्नों में चमकदार अक्षरों में दर्ज होता।"

# खामोश हो गई तबले की थाप



तबले पर जादू की तरह थिरकती उंगलियों के साथ ताल का मायाजाल खड़ा करने के माहिर उस्ताद जाकिर हुसैन नहीं रहे। 73 बरस की उम्र में उन्होंने सैन फ्रांसिस्को, अमेरिका में आखिरी सांस ली। संगीत की दुनिया में लगातार छह दशकों तक जाकिर हुसैन ने अपनी छाप कायम की। संगीत की दुनिया में चार पीढ़ियों के साथ संगत करने का कीर्तिमान उन्होंने स्थापित किया। यूं तो बचपन से ही अपने पिता और गुरु उस्ताद अल्ला रक्खा खां से उन्होंने तबला वादन की तालीम ली, लेकिन 12 बरस की अल्पायु में ही बड़े गुलाम अली, आमिर खां, ओंकारनाथ ठाकुर के साथ संगत की, 16-17 के होते-होते वे पं. रविशंकर, उस्ताद अली अकबर खां के साथ कार्यक्रमों में तबला बजाने लगे। उनके पिता ने भी पं. रविशंकर के साथ लंबे वक्त तक संगत की। इसके बाद जाकिर हुसैन ने शास्त्रीय संगीतज्ञों की अगली पीढ़ी पं. हरि प्रसाद चौरसिया, पं. शिव कुमार, उस्ताद अमजद अली खां के साथ संगत की और फिर उनकी पीढ़ी शाहिद परवेज, राहुल शर्मा, अमान अली खां, अयान अली खां आदि के साथ भी तबला बजाया। संगीत की चार पीढ़ियों का साथ देते-देते जाकिर हुसैन ने हिंदुस्तानी और पाश्चात्य संगीत के बीच भी अद्भुत तालमेल किया। इसलिए उन्हें चार-चार ग्रैमी अवार्ड मिले, जिनमें तीन तो इसी साल फरवरी में ही मिले थे। भारत सरकार ने भी उन्हें पद्मश्री, पद्म भूषण, पद्म विभूषण से नवाजा, इसके अलावा कालिदास सम्मान, संगीत नाटक अकादमी अवार्ड भी उन्हें दिए गए।

लेकिन उस्ताद जाकिर हुसैन होने का महत्व इन अवार्ड्स और सम्मानों से नहीं बल्कि इस बात से था कि अपने संगीत को उन्होंने दुनिया को एक जोड़ने के लिए इस्तेमाल किया। भारतीय और पाश्चात्य संगीत का अद्भुत मिश्रण कर उन्होंने जाहिर किया कि पूरी दुनिया में संगीत की जुबां एक ही है। दरअसल इस एकता का मंत्र तो उनके पैदा होते साथ ही उनके पिता ने उनके कानों में फूंक दिया था। नसरीन मुन्नी कबीर की पुस्तक शए लाइफइन म्यूजिकश् में उस्ताद जाकिर हुसैन के हवाले से बताया गया है कि- जब मैं पैदा हुआ तो मां ने मुझे पिता उस्ताद अल्ला रक्खा की गोद में रखा। दस्तूर के मुताबिक उन्हें मेरे कान में एक प्रार्थना सुनानी थी। पिता बीमार थे, लेकिन फिर भी वो अपने होंठों को मेरे कानों के बिल्कुल करीब ले आए और तबले के कुछ बोल सुनाए। मां नाराज हुईं और कहा कि यह तो अपशकुन है। पिता ने जवाब दिया कि संगीत मेरी साधना है और सुरों से मैं सरस्वती और गणेश की पूजा करता हूं। इसलिए यही सुर-ताल मेरी दुआ है।जाकिर नाम का कोई इंसान सरस्वती और गणेश का जिक्र अपने होंठों पर लाए, ये बात आज के भारत में सीधे सांप्रदायिक तनाव की तरफ ध्यान ले जाएगी। क्योंकि मौजूदा राजनीतिक माहौल में पहनावे से लेकर खान-पान और भाषा तक सभी को हिंदू-मुसलमान में बांटने की कवायद की जा रही है। संगीत की दुनिया फिलहाल इससे बची हुई है, लेकिन इस बात की खैर भी हम कब तक मना सकते हैं। बहरहाल, जाकिर हुसैन को उनके पिता ने जिस संगीत की तालीम दी, अपने कार्यक्रमों में वे उसे बताते भी थे। एक कार्यक्रम के दौरान जाकिर हुसैन एक हाथ से तबले पर थाप देकर बताते रहे कि शिव जी के डमरू से जो नाद उत्पन्न हुआ, गणेश जी ने उसे कैसे ताल में बदला। और फिर डमरू के साथ-साथ शंख की ध्वनि भी जाकिर हुसैन ने अपने तबले से निकाल कर बताई। घोड़ों की टाप, रेगिस्तान में तूफान, बारिश की टपटप, मंदिर की घंटी, शिवजी का डमरू सब कुछ जाकिर हुसैन अपने तबले के जरिए श्रोताओं को सुना देते थे। उनके तबला वादन और संगीत में किए गए तमाम प्रयोगों की खासियत यही थी कि वे जनता को सीधे इससे जोड़ देते थे। शास्त्रीय संगीत के बारे में आम धारणा यही है कि यह बोझिल होता है, आसानी से समझ नहीं आता और इसी वजह से आम जनता के बीच इसका चलन कम होता है। लेकिन जाकिर हुसैन ने इस धारणा को तोड़ा और अपने तबले के जरिए शास्त्रीय संगीत की खूबियों से आम जनता को परिचित कराया और उन्हें इसका आनंद लेने का मौका दिया। पाठकों को ताजमहल चाय का वह विज्ञापन याद ही होगा, जिसमें वाह उस्ताद वाह, के जवाब में वे बड़े अदब से कहते हैं अरे हुजूर वाह ताज कहिए। यही अदब और मासूमियत हमेशा उनके तबले के जरिए सुनाई देती रही। दरअसल संगीत जाकिर हुसैन के लिए सबसे पवित्र और वरदान की तरह था। बीबीसी को दिए एक साक्षात्कार में उस्ताद जाकिर हुसैन ने संगीत को सरस्वती का वरदान बताया था। उन्होंने कहा था कि शिवजी का डमरू या गणेशजी का पखावज या फिर कृष्ण की बांसुरी, हिंदुस्तान पर इन सबका आशीर्वाद है तो स्वाभाविक है कि इसमें आत्मा तो होगी ही। उनके मुताबिक संगीत सबसे पवित्र है। नाद ब्रह्म यानी ध्वनि ईश्वर है। उस्ताद बड़े गुलाम अली साहब के एक इंटरव्यू का जिक्र करते हुए उन्होंने बताया कि जब उनसे पूछा गया कि ये हरिओम ततसद..आपने कैसे गाया, तो उन्होंने कहा ये खुदा का नाम है और हम इसे सराह रहे हैं। जाकिर हुसैन के मुताबिक खयाल की पैदाइश ध्रुपद, प्रबंध गायकी, हवेली संगीत, सूफियाना कलाम को मिलाकर हुई है। तभी तो पंडित जसराज गाते हैं मेरो अल्लाह मेहरबान और बड़े गुलाम अली साहब हरिओम ततसद गाते हैं।

# भारत की असली चिंता घरेलू विकृतियों में है, ट्रम्प के टैरिफ में नहीं

डॉ. नीलांजन बनिक

30 नवंबर को अमेरिका के राष्ट्रपति पद के लिए निर्वाचित डोनाल्ड ट्रम्प ने अपने सोशल मीडिया पर एक धमकी पोस्ट की, जिसमें चेतावनी दी गयी कि यदि ब्रिक्स देश अमेरिकी डॉलर को छोड़ देते हैं, तो उन्हें 100प्रश टैरिफ का सामना करना पड़ेगा। लेकिन यह कोई नयी धमकी नहीं है और इसी तरह की चेतावनियां अन्य क्षेत्रों पर भी निर्देशित की गयी हैं, जिनमें मेक्सिको और चीन जैसे निकटवर्ती मित्र देश शामिल हैं, औरजिनमें टैरिफके खतरों का विस्तार विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों तक हैं। नेशनल रिटेल फेडरेशन द्वारा हाल ही में किये गये एक अध्ययन में अनुमान लगाया गया है कि परिधान, खिलौने, फर्नीचर, उपकरण, जूते और यात्रा के सामान पर ट्रम्प के प्रस्तावित टैरिफ से उपभोक्ताओं को सालाना 46अरब डॉलर से 78अरब डॉलर तक का अतिरिक्त नुकसान हो सकता है। इन सबका मतलब है उपभोक्ताओं के लिए उच्च कीमतें, और चीनी वस्तुओं के अमेरिकी विक्रेताओं को टैरिफ द्वारा प्रेरित मूल्य वृद्धि के कारण व्यापार में नुकसान का डर। जहां एक ओर चीन को टैरिफ का खामियाजा भुगतना पड़ सकता है, वहीं दूसरी ओर भारत सहित अन्य पड़ोसी देशों को छूट मिलने की संभावना नहीं है। ट्रम्प ने न केवल भारत को शटैरिफकिंगश् करार दिया, बल्कि उन्होंने राष्ट्रपति के रूप में अपने अंतिम कार्यकाल के दौरान देश को सामान्यीकृत वरीयता प्रणाली (जीएसपी) से भी हटा दिया था। 1974 के व्यापार अधिनियम द्वारा स्थापित जीएसपी के तहत, अमेरिकी नीति निर्माताओं ने नामित लाभार्थी देशों - मुख्य रूप से कम आय वाले देशों- से लगभग 3,500 उत्पादों के आयात को तरजीही शुल्क-मुक्त (शून्य-टैरिफ) दर पर अनुमति दी। इसका उद्देश्य इन देशों को अमेरिका के साथ अपने व्यापार को बढ़ाने और विविधता लाने में मदद करना था। विश्व बैंक के अनुसार, शकम आय वालाश् देश वह है जिसकी प्रति व्यक्ति आय 2023 में प्रति वर्ष 1,045 से कम है। भारत की प्रति व्यक्ति आय लगभग 2,700 प्रति वर्ष होने के कारण, ट्रम्प की स्थिति तकनीकी रूप से सही है। भारतीय कम्पनियां अब जीएसपी के तहत तरजीही व्यवहार के लिए योग्य नहीं हो सकती हैं, यह देखते हुए कि भारत अब कम आय सीमा को पूरा नहीं करता है। चूंकि अमेरिका भारत का सबसे बड़ा निर्यात गंतव्य बना हुआ है, इसलिए बढ़ते प्रतिबंधात्मक व्यापार उपायों के साथ देश के लिए दबाव महसूस करना स्वाभाविक है। भारत के कुल निर्यात का लगभग 18प्रश अमेरिका को निर्देशित किया जाता है, जिसका मूल्य 2023 में 77अरब और 2022 में 78अरब था। हालांकि, यदि जीएसपी को वापस लेने सहित पिछले प्रतिबंधात्मक व्यापार उपायों को कोई संकेत माना जाये, तो इसका प्रभाव अपेक्षाकृत मामूली रहा है। जीएसपी के तहत योग्य वस्तुओं की एक त्वरित समीक्षा से पता चलता है कि वे मुख्य रूप से कपड़ा और परिधान, घड़ियां, जूते, काम के दस्ताने, ऑटोमोटिव घटक और चमड़े के परिधान जैसी श्रेणियों में आते हैं। भारत द्वारा अमेरिका को किये जाने वाले निर्यात में मुख्य रूप से हीरे (19प्रश), पैकेज्ड दवाइयां (14प्रश), परिष्कृत पेट्रोलियम उत्पाद (8.9प्रश), ऑटोमोटिव घटक (2.1प्रश), तथा वस्त्र और परिधान (3.7प्रश) शामिल हैं। भारत के अधिकांश प्रमुख निर्यात आय-संवेदनशील हैं, और कमजोर वैश्विक मांग का प्रभाव पड़ रहा है। दूसरी ओर, एक मजबूत भारतीय अर्थव्यवस्था ऊर्जा और जीवाश्म ईंधन की उच्च मांग को बढ़ावा देती है, जिनमें से अधिकांश आयात किये जाते हैं। सरकार ने बढ़ते चालू खाता घाटे को दूर करने के लिए कई कदम उठाये हैं। भारत रूस से रियायती तेल आयात करना जारी रखा है, जिसका व्यापार टोकरी में हिस्सा 1प्रश से बढ़कर 22प्रश हो गया है। पिछले साल भारत ने इथेनॉल उत्पादन में इस्तेमाल होने वाले 100प्रश टूटे चावल के निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया था। सोने के आयात पर अंकुश लगाने के लिए सीमा शुल्क को 7.5प्रश से बढ़ाकर 12.5प्रश कर दिया गया। निर्यात प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आत्मनिर्भर भारत और उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (पीएलआई) जैसी पहलें भी की गई हैं। हालांकि, सकल घरेलू उत्पाद में विनिर्माण मूल्य वर्धन का योगदान 17प्रश पर स्थिर बना हुआ है, जो विनिर्माण प्रतिस्पर्धा में कोई महत्वपूर्ण सुधार नहीं दर्शाता है। प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और विनिर्माण का एक प्रमुख चालक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) प्रतिस्पर्धात्मकता में गिरावट आ रही है, सकल एफडीआई प्रवाह घटकर मात्र 1प्रश रह गया है, और शुद्ध एफडीआई वित्तीय वर्ष 2023-24 की पहली छमाही में 0.6प्रश रह गया है - जो 2005-06 के बाद से नहीं देखा गया है। कारोबारी माहौल में कठोरता, उलटा शुल्क ढांचा (आईडीएस), और द्विपक्षीय संधियों को समाप्त करने के भारत के फैसले को एफडीआई के प्रवाह को हतोत्साहित करने के लिए जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। विदेशी विनिर्माण दिग्गजों के प्रभुत्व वाले दो सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर विचार करें, अर्थात् ऑटोमोबाइल और कार्बोनेटेड सॉफ्ट ड्रिंक्स (सीएसडी)। ये दोनों उद्योग माल और सेवा कर (जीएसटी) की उच्चतम संभव दर को आकर्षित करते हैं जो 28प्रश है और अतिरिक्त उपकर कुल शुल्क को 40प्रश तक ले जाता है। चीनी पेय पदार्थों पर कर लगाने की वैश्विक प्रथा के विपरीत, भारत सीएसडी पर उच्च कर लगाने के लिए खड़ा है। कम और शून्य चीनी वाले सीएसडी पर उच्च कर डब्ल्यूएचओ की सिफारिशों और स्वास्थ्य विशेषज्ञों की सिफारिशों के विपरीत हैं, जो चीनी सामग्री के आधार पर कर के पक्ष में हैं।




**मेष:-** प्रतिभाओं के बावजूद हीनभाव प्रतिभाओं के लाभ से वंचित करेगा। कल्पनाओं में जीना छोड़ भौतिक जगत के अनुकूल चलने का प्रयत्न करें। सुख-साधनों की लालसा बढ़ेगी।

**बृषभ:-** किसी कार्य में सफलता से उत्साह में वृद्धि होगी। भौतिक सुख-साधनों की लालसा बढ़ेगी। महत्वपूर्ण कार्य की पूर्ति में असमर्थता जैसी स्थिति मन को निराश करेगी। परिश्रम से आर्थिक लाभ मिलेगा।

**मिथुन:-** नीरस स्वभाववश रचनात्मक योजनाओं को सार्थक करने में असमर्थ होंगे। सब कुछ सामान्य होते हुए भी मन अरुचि का शिकार होगा। समस्याओं के समाधान से उत्साह में वृद्धि होगी।

**कर्क:-** काफी दिनों से अवरोधित कोई महत्वपूर्ण कार्य हल होने के आसार बनेंगे। काफी दिनों से प्रयासरत कोई महत्वपूर्ण कार्य हल होने से मन प्रसन्न होगा। शिक्षा की दिशा में किया गया प्रयत्न सार्थक होगा।

**सिंह:-** अच्छे कायरें से परिजनो के दिल में जगह बनायें। योजनाओं के फलीभूत होने से मन प्रसन्न होगा। महत्वपूर्ण कायरें में लापरवाही न करें। जीवनसाथी के स्वास्थ के प्रति सचेत रहें।

**कन्या:-** कर्जदारों से मन परेशान होगा। नये क्षेत्रों में प्रयास से लाभ संभव। व्यावसायिक यात्रा द्वारा लाभ होगा। नये संबंधों के सहयोग से आर्थिक कठिनाइयां दूर होंगी। प्रणय संबंध के प्रति प्रगाढ़ता बढ़ेगी।

**तुला:-** भावुकता व्यावहारिक जगत के अनुकूल चलने में बाधक होगी। अतः व्यावहारिक बने। भविष्य संबंधी कुछ चिंतायें मन पर प्रभावी होंगी। विद्यार्थी शिक्षा में लापरवाही न बरतें। कल्पनाओं में जीना छोड़े।

**वृश्चिक:-** किसी नयी दिशा में सकारात्मक सोच अवश्य रंग लायेगी। सकारात्मक सोच अपनाते हुए जीवन को सही दिशा की ओर केंद्रित करें। परिजनो के अनुकूल चलने की चेष्टा करें।

**धनु:-** संवेदनील शरीर ग्रहों की प्रतिकूलता से बीमार पड़ सकता है। महत्वपूर्ण कार्य की पूर्ति में असमर्थता जैसी स्थिति मन को निराश करेगी। पुरानी घटनाओं के स्मरण से मन को कष्ट संभव।

**मकर:-** नयी घरेलू जिम्मेदारियों के पैदा होने से व्यय संभव। प्रयासरत कोई महत्वपूर्ण कार्य हल होने से मन प्रसन्न होगा। नये कायरें के क्रियान्वयन हेतु प्रयत्न तीव्र होगा। घर में खुशहाल वातावरण रहेगा।

**कुंभ:-** कुछ व्यासायिक कारणों से घर से दूर रहना पड़ सकता है। परिजनों की सुख-सुविधा के प्रति मन चिंतित होगा। मस्त-मौला मन ब्यर्थ के कायरे में समय जाया कर महत्वपूर्ण कायरे के प्रति लापरवाह होगा।

**मीन:-** थोड़ा संयमी व धैर्यवान बने। भाग्य से प्राप्त अच्छी-बुरी सभी स्थितियों के मध्य समझौतावादी रवैया आपनायें। कुछ नई व्यस्तताएं सामने आएंगी। महत्वपूर्ण दायित्वों की पूर्ति हेतु प्रयत्न तीव्र होगा।

# राजेंद्र शर्मा के तीन व्यंग्य



### 1. हलाल या झटका- तेरा क्या होगा रे जनतंत्र!

वैसे ये भी अच्छा ही है कि मोदी जी जोर का झटका धीरे से लगाने में विश्वास करते हैं। वन नेशन, वन इलेक्शन का ही देख लीजिए। मोदी जी चाहते तो एक ही झटके में वन नेशन नो इलेक्शन कर सकते थे। कर सकते थे कि नहीं कर सकते थे! था कोई उनका हाथ पकड़ने वाला। संसद में अच्छा-खासा बहुमत है। राष्ट्रपति, मोदी जी जहां कहें, वहीं मोहर लगाने को तैयार हैं। न्यायपालिका बटुए में न सही, जेब में तो जरूर है। विरोध करने वालों के मुंह बंद कराने के लिए ईडी से लेकर सीबीआई, एनआईए तक और नये राजद्रोह कानून से लेकर यूएपीए तक, सारे पुख्ता इंतजामात हैं। मीडिया, गोदी में सवार है। और क्या चाहिए था। मगर नहीं किया। एक झटके में वन नेशन मैनी इलेक्शन से वन नेशन नो इलेक्शन नहीं किया। सिर्फ मैनी इलेक्शन से वन इलेक्शन किया; जिससे झटका भले जोर का हो, पर धीरे से लगे। इसका मतलब यह नहीं है कि मोदी जी के न्यू इंडिया की प्रगति एक इलेक्शन पर ही रुक जाएगी। आएगा, वन नेशन नो इलेक्शन का भी नंबर आएगा। राम जी ने चाहा, तो जल्द ही आएगा। पर तब तक वन नेशन में वन इलेक्शन। पहले ही कहा, मोदी जी जोर का झटका धीरे से लगाने में विश्वास करते हैं। वैसे ऐसा भी नहीं है कि मोदी जी हमेशा झटका, धीमे से लगाने में ही विश्वास करते हों। तब तो हलाल का मामला हो जाता और मोदी जी को मुसलमानों के साथ अपना नाम जोड़ा जाना जरा भी पसंद नहीं है। आखिर, मोदी जी के राज में हलाल के सबसे बड़े विरोधी तो उग्र शाकाहारी हिंदू ही हैं। उनकी भावनाओं का आदर तो मोदी जी को भी करना ही पड़ता है। यानी मोदी जी झटके की तरह झटका करना भी बखूबी जानते हैं, हालांकि वह खुद शुद्ध से भी शुद्ध शाकाहारी हैं। 2002 में गुजरात में क्या हुआ था, भूल गए क्या? गोधरा में रेल के डिब्बे में आग लगने के बाद, हफ्तों पूरे गुजरात में हुआ था, उसे हलाल तो किसी भी तरह से नहीं कह सकते हैं। या नोटबंदी में जो हुआ था, उसे? था तो वह भी झटके का ही मामला। एक ही झटके में लोगों को बैंकों की लंबी-लंबी लाइनों में लगा दिया था। और कोरोना काल में भी लॉकडाउन किसी झटके से कम नहीं था। लाखों मजदूरों को पांव-पांव अपने गांव लौटने के लिए, बड़े-छोटे तमाम शहरों से बाहर धकेल दिया गया। रास्ते में पुलिस के डंडे खाए, सो ऊपर से। और तो और, रफाल मामले तक में मोदी जी ने सालों में हुए खरीद के समझौते का झटका कर दिया और छोटे अंबानी के पुंछल्ले वाला, अपना नया सौदा आगे कर दिया। लेकिन, इस सब का मतलब यह भी नहीं है कि मोदी जी की ज्यादा प्रैक्टिस झटका करने की ही है; कि वन नेशन वन इलेक्शन के मामले में पहली ही बार वह इसका ख्याल रख रहे हैं कि जोर का झटका धीमे से लगे। मोदी जी ने साथ चलाते-चलाते शिव सेना के साथ क्या किया था? अकाली दल के साथ भी। और तेलुगू देशम के साथ। बीजू जनता दल के साथ। अजित सिंह के लोक दल के साथ। और तो और नीतीश बाबू के जदयू के साथ भी। हलाल अगर मुसलमानों के साथ चिपकने की वजह से वर्जित नहीं हो गया होता, तो मोदी जी हलाल के भी मास्टर कहलाते। और हलाल का सलूक सिर्फ साथ चलने वाली राजनीतिक पार्टियों तक ही सीमित नहीं था। कश्मीर के मामले में तो मोदी जी ने एक के बाद एक, हलाल और झटका, दोनों ही आजमा डाले। पहले, महबूबा के साथ सरकार में बैठकर उसी डाल पर धीरे-धीरे आरी चलाते रहे, जिस पर बैठे थे। और जब डाल करीब-करीब कट गयी तो, एकदम से डाल से नीचे कूद गए। और गेयर बदलकर डाल को झटके से हलाल कर दिया। फिर भी हो सकता है, मोदी जी का झटके का ही स्कोर ज्यादा बैठे। मध्य प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र, उत्तराखंड आदि में विरोधी सरकारों के विधायक खरीद-खरीद के जो झटका किया है, उसे भी तो हिसाब में लेना पड़ेगा। सच्ची बात तो यह है कि मोदी जी ने इस मामले में विपक्ष वालों को पूरी तरह से कंफ्यूज कर के रखा हुआ है। बेचारे समझ ही नहीं पा रहे हैं कि मोदी जी देश के संविधान के साथ जो कर रहे हैं, उसे हलाल कहेंगे कि झटका। उन्हें कभी लगता है कि संविधान को हलाल किया जा रहा है और कभी लगता है कि झटका किया जा रहा है। अलबत्ता वन नेशन नो इलेक्शन हो जाता, तो फिर भी विपक्ष वालों को कम से कम कुछ क्लेरिटी तो मिल जाती कि संसदीय जनतंत्र का झटका हो रहा है। लेकिन, उसमें भी मोदी जी ने मामला वन इलेक्शन पर अटका दिया। अब इसे संसदीय जनतंत्र का झटका होना, कहें भी तो कैसे कहें? अब तक कई चुनाव थे, अब एक चुनाव है; फिर भी चुनाव तो है! इसे जनतंत्र का झटका होना कहें भी तो कैसे? तो क्या जनतंत्र का गला अब भी धीरे-धीरे ही रेता जाएगा-हलाल! हलाल की तोहमत लगवाना मोदी जी को हर्गिज मंजूर नहीं होगा। तभी तो वन इलेक्शन में, मोदी जी ने एक तत्व झटके का भी रखा है। वन नेशन की तुक वन इलेक्शन से बखूबी मिलती तो है, पर वन इलेक्शन में ज्यादा जोर वन पर ही है, इलेक्शन पर नहीं। बेशक, वन इलेक्शन की इजाजत तो होगी, पर यह वन इलेक्शन बार-बार यानी मिसाल के तौर पर हर पांच साल पर हो ही, इसकी कोई गारंटी नहीं है। एक देश है, एक चुनाव है, एक सरकार है, बस। देश क्या हर पांच साल पर बदलता है? नहीं ना। तब हर पांच साल पर सरकार के लिए ही चुनाव कराए जाने की क्या जरूरत है? एक बार चुनाव हो गया, तो हो गया। एक बार सरकार चुन गयी, तो चुन गयी। यानी वन नेशन वन इलेक्शन वह पुल है, जिस से गुजर कर वन नेशन, नो इलेक्शन तक पहुंचा जाना है। यह वह पुल है, जिसके एक ओर संविधान का हलाल किया जाना है और दूसरी ओर झटका। यह पुल, हलाल और झटके को जोड़ने वाला पुल है। यह पुल, संविधान, जनतंत्र, सब को बीच से तोड़ने वाला पुल है। यह पुल इसकी गारंटी का पुल है कि आज अगर संविधान को धीरे-धीरे खोखला किया जा रहा है, तो कल उसे झटके से तोड़ भी दिया जाएगा। हां! अगर पब्लिक ही मोदी जी का खेल बिगाड़ने पर उतर आए, तो बात दूसरी होगी।

### 2. इट इज बहुतै डिफरेंट!

ये लो कर लो बात। मोदी जी की पार्टी और उनकी सरकार ने बांग्लादेश के हिंदुओं के दुख-दर्द की जरा सी सुध क्या ले ली, इन सेकुलर वालों के पेट में दर्द शुरू हो गया। बांग्लादेश पड़ौसी सही, पर ये मामला तो अंतर्राष्ट्रीय हुआ। पर पट्ठों ने उसमें भी हिंदुस्तान को घुसा दिया ; जबकि बात-बेबात हरेक चीज में भारत को घुसाने के लिए, बेचारे संघी बेकार में बदनाम हैं। कह रहे हैं कि बांग्लादेश के अल्पसंख्यकों की सुध ली, बड़ा अच्छा किया, पर अपने देश के अल्पसंख्यकों की सुध कब लीजिएगा, हुजूर! बांग्लादेश के अल्पसंख्यकों से मोहब्बत, अपने देश के अल्पसंख्यकों को दुत्कार, यह तो अन्याय है सरकार! मोदी जी की पार्टी वाले गलत नहीं कहते हैं -- ये सेकुलर वाले मुसलमानों से मोहब्बत करते हों या नहीं करते हों, पर हिंदुओं से नफरत जरूर करते हैं। तभी तो उन मोदी जी के हरेक काम में नुक्स निकालते हैं, जो हिंदुओं को बचाने में जुटे हुए हैं, हिंदुस्तान तो हिंदुस्तान, दूसरे देशों में भी। और मोदी पार्टी यह भी झूठ नहीं कहती है कि हिंदू खतरे में हैं ; सिर्फ हिंदुस्तान में ही नहीं बांग्लादेश वगैरह में भी। सच पूछिए तो हिंदुओं के खतरे में होने को, मोदी-योगी आदि के राज से जोड़ना भी सरासर ज्यादती है। वर्ना बांग्लादेश में तो मोदी जी-योगी जी का राज नहीं है, वहां हिंदू खतरे में कैसे हैं? हिंदुओं के खतरे में होने का कारण है, जॉर्ज सोरेस। जॉर्ज सोरेस है, तो अडानी खतरे में है। अडानी खतरे में है, तो मोदी जी खतरे में हैं। मोदी जी खतरे में हैं, तो हिंदू खतरे में है। हिंदू खतरे में है, हिंदुस्तान तो हिंदुस्तान, बांग्लादेश में भी। और हां, कम से कम हिंदुओं को यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि बांग्लादेश में तो हिंदू अल्पसंख्यकों पर अत्याचार हो रहे हैं, पर भारत में मुस्लिम अल्पसंख्यकों पर कोई अत्याचार-वत्याचार नहीं हो रहे हैं। माना कि यहां-वहां लिंचिंग हो रही है, मस्जिदों-मजारों को खोदा जा रहा है, घरों पर बुलडोजर वगैरह चल रहे हैं, खास कानून वगैरह बन रहे हैं, पर अत्याचार...कभी नहीं। हिंदुओं के शब्दकोष में अत्याचार का तो शब्द ही नहीं है। हिंदुस्तान में हिंदू जो कर रहे हैं, डिफरेंट है। बांग्लादेश में हिंदुओं के साथ जो हो रहा है, डिफरेंट है। यहां मुसलमान, वहां हिंदू; इट इज बहुतै डिफरेंट!

### 3. जरा गहरा खोदो भाई

ऊपर वाले का और सिर्फ लखनऊ वाले ही नहीं, दिल्ली वाले ऊपर वाले का भी लाख-लाख शुक्र है कि संभल में खुदाई चल रही है। बल्कि खुदाई से ज्यादा ढुंढाई चल रही है। आखिर, कुछ तो मिलना चाहिए। अब बेचारे लखनऊ और दिल्ली के ऊपर वाले भी क्या करें? खुदाई-वुदाई पर तो सुप्रीम कोर्ट ने कम-से-कम अभी तो रोक लगा दी है। खुदाई छोड़िए, सुप्रीम कोर्ट वालों ने तो सर्वे तक पर रोक लगा दी है। और सिर्फ संभल में ही नहीं, बाकी हर जगह भी सर्वे तक के आदेशों पर तब तक के लिए रोक लगा दी है, जब तक बड़ी अदालत का अगला आदेश नहीं आ जाता है। सच पूछिए, तो शुरू-शुरू में तो संभल का प्रशासन भी इस फरमान से कुछ हैरान-परेशान सा हो गया। शाही मस्जिद तो मस्जिद, उसके आस-पास के इलाके में भी, योगीशाही हाथ-पांव समेट कर बैठ गयी। पर ज्यादा-से-ज्यादा दो दिन। तीसरे दिन तो बुलडोजर बाबा के बुलडोजरों ने बाकायदा मोर्चा संभाल ही लिया। अब सुप्रीम कोर्ट के ही एक और फैसले को धता बताते हुए, जमीन से ऊपर दुकानों, मकानों वगैरह पर बुलडोजरी खुदाई शुरू हो गयी। न्याय की देवी की आंखों की पट्टी पहले ही खुल चुकी थी, सो बिना किसी मुश्किल से कपड़ों से पहचान-पहचान कर, मुसलमानों के दुकानों, मकानों पर, जमीन के ऊपर वाली बुलडोजरी खुदाई हुई। और जब बुलडोजर ही मैदान में आ गया, फिर बाकी सरकारी अमला पीछे कैसे रह जाता? जिलाधिकारी की लीडरशिप में शाही मस्जिद के इर्द-गिर्द के इलाके में अतिक्रमणों की खुदाई शुरू हो गयी। इससे मन नहीं भरा, तो मस्जिदों वगैरह पर लाउडस्पीकरों की तलाशी शुरू हो गयी। उससे भी संतोष नहीं हुआ, तो बिजली चोरी की ढुंढाई शुरू हो गयी। आखिरकार, यह गहरी खोज सफल हुई। इस इलाके में भी जमीन के ऊपर खुदाई में एक मंदिर निकल आया, वर्षों से बंद पड़ा मंदिर। रहीम दास जी इसलिए तो सैकड़ों साल पहले कह गए थे -- जिन खोजा तिन पाइयां गहरे पानी पैठ। कहीं भी गहरा खोदोगे, मंदिर मिल ही जाएगा! जब मस्जिद की बगल में मंदिर मिल गया है, तो क्या मस्जिद के अंदर मंदिर नहीं मिल जाएगा? बस जरा तबियत से खुदाई हो जाए। खैर, जब तक मस्जिद के अंदर मंदिर खोदकर नहीं निकाल लिया जाता है, तब तक मस्जिद की बगल वाला मंदिर सही। इस मंदिर की बस एक ही प्राब्लम है। न उसे किसी ने तोड़ा है, न कोई मंदिर को मस्जिद या मजार जैसा कुछ भी बताता है। मंदिर बस मंदिर है, बंद पड़ा मंदिर। यानी न कोई स्टोरी और न कोई विवाद। ऐसा मंदिर किसी के किस काम का? पर व्हाट्सएप्प इतिहास में इस मंदिर की भी एक स्टोरी है। मंदिर मुसलमानों के इलाके में है और दसियों साल से बंद पड़ा है ; यानी यह जरूर एक हिंदू मंदिर पर मुसलमानों के जबरन कब्जा करने का मामला है। अभी मंदिर पर ताला लगवाया है, एक दिन वहां मस्जिद या दरगाह भी बना देंगे। वह तो योगी जी का डर है, वर्ना कभी की शाही मस्जिद की बगल में, एक नन्ही सी मस्जिद बन गयी होती। बस इस स्टोरी में एक ही समस्या है। मंदिर जिनकी मिल्कियत का हिस्सा है, वे हिंदू खुद कह रहे हैं कि मंदिर पर ताला उनके परिवार वालों ने लगाया था। करते भी तो क्या करते, मंदिर को चलाने के लिए पुजारी मिलता नहीं है और घर वाला कोई अब वहां रहता नहीं है! पर इस समस्या का समाधान भी निकलेगा। मंदिर की मिल्कियत वालों का बयान भी बदलेगा। बस खुदाई जारी रहे। जरा गहरा खोदो भाई!

# डीएम ने की पीसीएस भर्ती परीक्षा तैयारियों की समीक्षा

## पांच स्तरीय सुरक्षा घेरे में रखे जाएंगे प्रश्न पत्र

**कानपुर देहात।** उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित पीसीएस भर्ती परीक्षा 2024 के तैयारियों के संबंध में समीक्षा बैठक जिलाधिकारी आलोक सिंह की अध्यक्षता में माँ मुक्तेश्वरी देवी सभागार कक्ष कलेक्ट्रेट में सम्पन्न हुई। बैठक में भौतिक रूप से केंद्रो के भ्रमण, पुलिस, कार्यदायी संस्था, केंद्र पर नियुक्त समस्त कार्मिकों, कंट्रोल रूम प्रभारी की तैयारियों, सेक्टर मजिस्ट्रेट के कार्यों, कोषागार से केंद्र तक का रूट चार्ट, सभी सेक्टर मजिस्ट्रेट, स्टेटिक मजिस्ट्रेट, केंद्र व्यवस्थापक केंद्र, पुलिस द्वारा केंद्र का भ्रमण आदि के संबंध में आवश्यक जानकारी दी गई। जिलाधिकारी ने सभी अधिकारियों व केंद्र व्यवस्थापकों को परीक्षा मे बरती जाने वाली सावधानियों के बारे में जानकारी दी। जिलाधिकारी ने सभी केंद्र व्यवस्थापको व अधिकारियों को आयोग द्वारा प्रेषित निर्देशिका पुस्तिका का भली भांति अध्ययन किए जाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि आयोग द्वारा दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए परीक्षा सकुशल शांतिपूर्ण संपन्न कराया जाए। बैठक में अपर जिलाधिकारी प्रशासन द्वारा अवगत कराया गया कि जनपद में 22 दिसंबर को दो पालियों ( प्रथम पाली प्रात: 9ः30 बजे से 11ः30बजे तक, द्वितीय पाली अपरान्ह 2ः30 बजे से 4ः30 बजे तक) 04 परीक्षा केन्द्रों पर क्रमश: अकबरपुर इण्टर कालेज में 480 परीक्षार्थी, अकबरपुर डिग्री कालेज में 480 परीक्षार्थी, श्रीकृष्ण औद्योगिक इण्टर कालेज , मोहम्मदपुर में 384 व राम स्वरूप ग्रामोद्योग इण्टर कालेज में 384 परीक्षार्थी, कुल 1728 परीक्षार्थियों द्वारा प्रतिभाग किया जाएगा। जिलाधिकारी ने सभी केन्द्र व्यवस्थापकों को निर्देशित किया कि आयोग द्वारा दिये गये निर्देशों के अनुरूप सभी आवश्यक व्यवस्थाऐं ससमय पूर्ण कर ली जाये। उन्होंने कहा कि केन्द्र व्यवस्थापक यह सुनिश्चित करेंगे कि सभी परीक्षा केन्द्रों के कक्षों में साफ-सफाई, विद्युत व प्रकाश, शौचालय, पेयजल, सीसीटीवी आदि व्यवस्थाऐं दुरस्त रहे। इस दौरान लोक सेवा आयोग के प्रतिनिधि द्वारा भी सभी केन्द्र व्यवस्थापकों को परीक्षा से सम्बन्धित जारी विभिन्न निर्देशों से भी अवगत कराया गया। बैठक में अपर जिलाधिकारी प्रशासन अमित कुमार, समन्यवी पर्यवेक्षक, उ0प्र0, लोक सेवा आयोग, प्रयागराज, मेघनन्द, अपर पुलिस अधीक्षक राजेश पाण्डेय, जिला विद्यालय निरीक्षक बृज भूषण चौधरी संबंधित अधिकारी गण सहित केन्द्र व्यवस्थापक, सह केंद्र व्यवस्थापक भी उपस्थित रहे।

## साइकिल सवार सड़क दुर्घटना में हुआ घायल

**न्याय आपका संवाददाता, बस्ती।** हर्रैया थाना क्षेत्र के भदावल के पास साइकिल सवार की दुर्घटना हो गई। सडक दुर्घटना मे साईकिल ट्रक के नीचे चला गया। पुलिस के अनुसार 35 वर्षीय रंजीत वर्मा पुत्र रामकरण परसीजोत थाना छावनी जनपद बस्ती साइकिल से बस्ती की तरफ जा रहे थे, बीच में डिवाइडर के पास पीछे से आ रहे ट्रक के चालक 45 वर्षीय बल्ले निवासी इटावा, जो इटावा से बिहार जा रहा था साइकिल को ठोकर मार दिया, जिससे साइकिल सवार ट्रक के नीचे आ गया। मौके पर मौजूद पुलिस बल और जनता के सहयोग से ट्रक के नीचे से उसे निकाला गया और तत्काल सीएचसी हर्रैया लेकर जाया गया ।घटना की सूचना पर परिजन भी मौजूद थे। प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें सकुशल घर भेज दिया गया है।पुलिस ने साइकिल और ट्रक को कब्जे में ले लिया है। इस संबंध में अभी कोई तहरीर प्राप्त नहीं हुई है।

# शहीद गणेश साव की 39 वीं पुण्यतिथि पर लोगों ने श्रध्दाभाव से दी श्रध्दांजलि

**तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो**

धनबाद। 1985 की वो काले दिन झरिया सब्जी पट्टी में दबंगों के दबंगई का विरोध करने पर गणेश साव को गोली मार कर हत्या कर दी थी , उस घटना को याद कर लोग आज भी मर्माहत हो जाते है। हर वर्ष की भांति मंगलवार को शहीद गणेश साव उर्फ चामू साव की 39 वीं पुण्यतिथि झरिया बाटा मोड़ गणेश चौक के समक्ष मनाई गई । कार्यक्रम की अध्यक्षता कामरेड बच्चन भारती, संचालन अरविंद साव एवं धन्यवाद ज्ञापन पूर्व पार्षद अनूप कुमार साव ने किया कार्यक्रम को संगीतमय बनाने हेतु संस्कृत निर्गुण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें संजय पासवान व्यास जी ने अपने कोकीले श्वर से संगीत के माध्यम से उनकी जीवनी पर प्रकाश डाला उनके साथ दे रहे थे शशि सिंह कैलाश जी सुजार जी शक्ति कुमार विजय चौहान , सर्व प्रथम प्रतिमा पर उनके पुत्र अनूप साव ने पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दिए तदुपरांत जिले के कई गण मान्य लोग एवं समाजसेवी तथा व्यावसायिक व आम गणों ने श्रद्धा के पुष्प अर्पित किए। संगीतमय श्रद्धांजलि सभा को संबोधित करते हुए भाजपा नेता राजकुमार अग्रवाल ने कहा कि उनकी बलिदानी व्यर्थ नहीं गई नई पीढ़ी को उनसे प्रेरणा मिलती है। योगेंद्र यादव ने कहा कि शोषित वर्ग के हक की लड़ाई में शहीद हुए गणेश साव। महेंद्र सिंह मीनू ने कहा कि शासक वर्ग के विरुद्ध हमेशा मुखर रहना ही उनके लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी । बलदेव महतो ने कहा हर वह शोषण का विरोध होगा। कार्यक्रम में मुख्य रूप से प्रेम बच्चन दास जगदीश साव पूर्व पार्षद अंकेश राज दिलीप आडवाणी रिंकू शर्मा विकास साव अशोक साव उपेंद्र गुप्ता विनोद पासवान डॉ मनोज सिंह पप्पू साव रंजन साहू देवी साहू त्रिलोकी प्रमाणिक गणेश गुप्ता उर्फ कल्लू गुप्ता गुड्डू साव श्याम नंदन साहू राजकुमार साव विजय साव अरुण चौरसिया नरेश साव रवि वर्मा सुनील पासवान बिहार बर्मन पिंटू बर्मन धर्मवीर सावं पाल सोनी, हरे राम पंडित , विजय बाबा, महेश शर्मा अनिल सावं विजय सावं पवन खरकिया अर्जुन निषाद लीला बावरी गीता देवी मंजू देवी बेबी केसरी और सैकड़ो की संख्या में महिला पुरुष ने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

# कंज्यूमर गिल्ड द्वारा दूरसंचार उपभोक्ता जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन

**तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो**

वाराणसी। टेलीकॉम रेगुलेटरी अथॉरिटी ऑफ इंडिया (ट्राई) के अनुमोदन व निर्देशानुसार कंज्यूमर गिल्ड द्वारा आर. एस पब्लिक इंटर कॉलेज, जन्सा परमानंदपुर, ब्लॉक अराजी लाइन, जिला वाराणसी, उत्तर प्रदेश में दूरसंचार उपभोक्ता जागरुकता कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में दूरसंचार और प्रसारण क्षेत्र की शिकायतें और सेवा से निपटने के लिए समय सीमा, आईवीआरएस और ग्राहक सेवा नंबर का संचालन, अपीलीय प्राधिकारी को अपील, वेब-आधारित शिकायत निगरानी प्रणाली, उपभोक्ता मंचों की भूमिका, दूरसंचार और प्रसारण उपभोग चार्टर तथा उपभोक्ता हित में बनाये गये दिशा निर्देशो, नियमों, विनियमों के बारे में कंज्यूमर गिल्ड के अध्यक्ष अभिषेक श्रीवास्तव द्वारा विस्तार से जानकारी दी गयी, कार्यक्रम में अध्यापक, शिक्षको, के साथ भारी संख्या में छात्र, छात्राओं, ग्रामीण दूरसंचार उपभोक्तागण, स्वैच्छिक संगठनो के प्रतिनिधियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। ओमप्रकाश मिश्र, वरिष्ठ समाजसेवी द्वारा लोगों को अनजानी फोन कॉल से सावधान रहने को कहा गया। कार्यक्रम में उपभोक्ता जानकारी सम्बन्धी प्रपत्र वितरित कर एक जागरूकता रैली भी निकालकर एक संदेश दिया गया। कार्यक्रम में प्रधानाचार्य विनय कुमार सिंह द्वारा भी संबोधित किया गया तथा कार्यक्रम में सुशील कुमार सिंह, कृष्ण कांत, श्याम सुन्दर द्वारा भी सहभागिता व सहयोग किया गया।

## सेल कंपनी जीतपुर में असंगठित मजदूरों का आंदोलन दूसरे दिन भी जारी

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

जोड़ापोखर/धनबाद। सेल कंपनी के बंद जीतपुर कोलियरी के मुख्य गेट पर असंगठित मजदूर मोर्चा के तत्वाधान में पांच सूत्री मांगपत्र को लेकर की जा रही आंदोलन मंगलवार को जारी रहा। इस दौरान मृत श्रमिक के आश्रित को नियोजन देने की मांग पर विजय गुप्ता द्वारा की जा रही आमरण अनशन भी दूसरे दिन जारी है। हालांकि कोलियरी प्रबंधन ने अंचल निरीक्षक अभय सिन्हा के नेतृत्व में आंदोलनकारियों से वार्ता किया, परंतु आंदोलनकारी कंपनी के सक्षम अधिकारी से वार्ता करने के मुद्दे पर अड़े रहे। जिसके कारण देर शाम को वार्ता विफल हो गई है। वार्ता में कंपनी की ओर से महाप्रबंधक बादल मंडल, दीपक कुमार, एस कुलकर्णी तथा यूनियन को ओर से प्रतिनिधि निताई महतो, राजकुमार सिंह, संजय सिंह, शुरेश सिंह, नगीना पासवान, बबलू राउत, पंकज कुमार आदि मौजूद थे।

## फिट इंडिया के तहत आर.एस.पी. कॉलेज में योगाभ्यास

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

बलियापुर/धनबाद। फिट इंडिया 2024 के तहत आर. एस. पी. कॉलेज झरिया बेलगड़िया मे योगाभ्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया. प्राचार्य डॉ निलेश कुमार सिंह के नेतृत्व मे चले इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने भाग लिया. डॉ निलेश कुमार ने योग के महत्व को बताते हुए कहा कि स्वस्थ शरीर मे ही स्वस्थ मस्तिष्क का विकास होता है. योग के माध्यम से हम तनाव को कम कर सकते हैं।

# किसानों और खनन माफियाओं के बीच हुई झड़प

## पुलिस ने दोनों पक्षों को कराया शांत

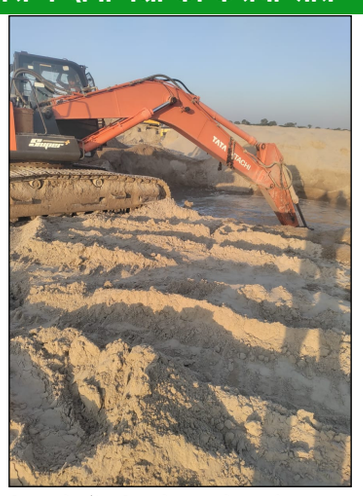

**भोगनीपुर कानपुर देहात।** सिकंदरा तहसील के बेहमई खंड दो घाट पर खनन माफिया खनिज विभाग व किसानों के बीच काफी झड़प हुई। सिकंदरा तहसील के बेहमई घाट के खंड 2 पर खनन माफिया विजय गुप्ता व सोनू चंदेल बालू खनन का काम कर रहे हैं। तभी गांव के किसान मरजात सिंह राम लखन देवेंद्र प्रताप ने खनन माफियाओं के ओवरलोड ट्रक निकलने से मना कर दिया किसान मरजात सिंह ने बताया कि गाटा संख्या 826 में हम सभी किसानों के खेत हैं। जहां से ओवर लोड गाड़ियां निकलती हैं। जिससे फैसले बर्बाद हो रही है। मना करने पर खनन माफिया वह खनिज विभाग झूठे मुकदमे में फसाने की धमकी दे रहे हैं। शनिवार की शाम करीब 5ः00 बजे खनन माफिया खनिज विभाग के अधिकारियों व किसानों के बीच काफी झड़प हुई। वही मौके पर पहुंची राजपुर थाना पुलिस ने दोनों पक्षों को समझा कर शांत कराया किसानों का आरोप है। कि खेत से बालू भरे ओवरलोड ट्रक निकलते हैं। जिससे फसले बर्बाद हो रही है। वही किसान मारजत सिंह ने बताया कि गाटा संख्या 826 में बालू निकालने का परमिशन कराया था।खनिज विभाग ने परमिशन भी दे दिया। लेकिन बालू नहीं निकलने दी जा रही है। जिससे किसानों में आक्रोश व्याप्त है। जबकि खनन माफिया संचालक सोनू चंदेल आए दिन किसानों को झूठे मुकदमे में फसाने की बात करता हैं। इससे किसान डरे और सहमे हुए हैं। जबकि रात तक खनिज विभाग के अधिकारी विकास परमार खनन माफिया सोनू चंदेल व किसानों के बीच समझौता चला रहा। किसानों ने बताया कि नोक झोक का मोबाइल पर वीडियो बना लिया था खनिज विभाग के अधिकारी विकास परमार व खनन माफिया ने जबरन मोबाइल छीनकर वीडियो डिलीट कर दिया जिससे खनिज विभाग के अधिकारी हुआ खनन माफियाओं का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल ना हो जाए समाचार लिखे जाने तक दोनों पक्षों ने लिखित शिकायत नहीं दी इस संबंध में राजपुर थाना प्रभारी दिनेश कुमार गौतम ने बताया कि खनन माफिया किसानों के बीच गाड़ियां निकालने के संबंध में नोक झोंक हुई थी इससे दोनों लोगों को समझाया गया है। लिखित शिकायत मिलने पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

# आचार्य आदिसागर अंकलीकर इंटर कॉलेज में अहिंसा रथ का हुआ स्वागत

**तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो**

इटावा। भगवान महावीर स्वामी के 2550 वां निर्वाण महोत्सव पर आचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज की पावन प्रेरणा से प्रवर्तित अहिंसा रथ सत्य-अहिंसा, सदाचार-शाकाहार, मैत्री भाव और व्यसन मुक्ति का संदेश प्रसारित करता हुआ मंगलवार को आचार्य आदि सागर अंकलीकर इंटर कॉलेज में पहुंचा और वहां पर अहिंसा रथ का भव्य स्वागत किया गया तथा भगवान महावीर की प्रतिमा का अभिषेक,पूजन तथा आरती विद्यालय की प्रबंध समिति के अध्यक्ष डॉ.अनिल कुमार जैन, प्रबंधक/मंत्री विशुन कुमार चौधरी,कोषाध्यक्ष सनत कुमार जैन तथा सदस्य कमल किशोर जैन ने किया।रथ के संचालक पप्पू भाई तथा संयम शास्त्री ने छात्र और छात्राओं को महावीर स्वामी जी के बारे में बताया तथा उनके बताए गए मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया उन्होंने कहा जीवन में अनुशासन का होना अत्यंत आवश्यक है बिना अनुशासन के हम अपने जीवन में आगे नहीं बढ़ सकते और यह भी बताया कि हमें जीवन के हर परिस्थिति में धैर्य रखना चाहिए। इस अवसर पर विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती सोहिनी यादव उप प्रधानाचार्या अचला वर्मा, राज किशोर वर्मा,सुनील कुशवाहा,विपिन कुमार,चेतन सिंह,अविनाश कुमार बाथम,शिखा अग्रवाल, कंचन वर्मा,सुमित यादव,श्रुति यादव,अनुष्का सक्सेना,सुमित सिंह,दिनेश कुमार,शुभ्रा सक्सेना,प्रीति राही दिव्या यादव,शिवम पोरवाल आदि उपस्थित रहे।

# समाजवादी महिला, मजदूर सभा की बैठक में बबलू राजा ने मजदूरों महिलाओं को अधिक सम्मान देने का लिया संकल्प

**कानपुर देहात।** समाजवादी पार्टी कार्यालय अकबरपुर माती मे समाजवादी महिला मजदूर सभा की मासिक बैठक में जिला अध्यक्ष कानपुर देहात अरुण कुमार बबलू राजा ने संकल्प लिया कि महिलाओं व मजदूरों के सम्मान में समाजवादी पार्टी कभी पीछे नहीं हटेगी और भविष्य में उनके साथ मिलकर जमीन पर उतरकर उनकी आवाज को बुलंदी से उठाने का काम किया जाएगा समाजवादी पार्टी मजदूर सभा जिला अध्यक्ष चौधरी सरनाम सिंह व महिला सभा जिला अध्यक्ष मीरा वर्मा कश्यप को संगठन विस्तार करने के लिए दिल से आभार व्यक्त करते हुए कहा समाजवादी पार्टी मजदूर किसान छात्र नौजवान युवाओं की शान ताकत व पहचान है जिसे राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव जी हर वक्त बखान किया करते हैं। पूर्व विधायक मिथिलेश कटियार प्रदेश सचिव ओम प्रकाश पाल जिला उपाध्यक्ष अमर सिंह पाल प्रदेश सचिव अल्पसंख्यक शेखू खान जिला अध्यक्ष सैनिक प्रकोष्ठ बृजमोहन फौजी जिला महासचिव मजदूर सभा अनुज कुमार जिला सचिव अरविंद यादव महिला सभा प्रदेश सचिव नीता सचिन जिला महासचिव अनीता खान ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किए जिला अध्यक्ष चौधरी सरनाम सिंह ने आभार प्रकट किया और विश्वास दिलाया कि समाजवादी पार्टी सरकार बनने पर सक्रिय समाज वादियों को सम्मान दिलाया जाएगा और भाजपा सरकार द्वारा गलत कानून व्यवस्था अग्नि वीर प्राइवेट की गई कंपनियों को पुन: परमानेंट किया जाएगा।

## जिलाधिकारी घनश्याम मीना ने कलेक्ट्रेट में की जनसुनवाई

**हमीरपुर।** जिलाधिकारी घनश्याम मीना ने कलेक्ट्रेट कार्यालय में जनसुनवाई कर जन सामान्य की शिकायतों को सुना एवं संबंधित अधिकारियों को प्राप्त शिकायतों का गुणवत्तापूर्ण व समयबद्ध तरीके से निस्तारण करने के निर्देश दिए। जनसुनवाई में लगभग 95 शिकायते प्राप्त हुई जिनमें से अधिकांश का जिलाधिकारी ने त्वरित ढंग से मौके पर निस्तारण कर दिया। शेष शिकायतों के निस्तारण हेतु जिलाधिकारी ने समस्त एसडीएम , खंड विकास अधिकारी व अन्य संबंधित जिला स्तरीय अधिकारियों के साथ वर्चुअल/ जूम एप के माध्यम से बैठक कर उनके तत्काल निस्तारण हेतु निर्देशित किया। उन्होंने कहा कि सभी एसडीएम ,बीडीओ व अन्य संबंधित जिला स्तरीय अधिकारियों द्वारा नियमित रूप से अपने कार्यालय में जनसुनवाई कर जन समस्याओं का त्वरित ढंग से निस्तारण किया जाए इसमें किसी भी तरह किसी शिथिलता न बरती जाए। जिलाधिकारी ने कहा की जनसुनवाई, आईजीआरएस व अन्य माध्यमों से प्राप्त होने वाले प्रकरणों का सभी संबंधित अधिकारियों द्वारा मौके पर जाकर गुणवत्तापूर्ण ढंग से निस्तारण कर उसकी समय से आख्या दी जाए।

# माता पिता बच्चों को सोशल मीडिया से रखें दूर: अतुल चंदेल

## सांस्कृतिक कार्यक्रम में बच्चों ने की मनमोहक प्रस्तुतियां

**सरवनखेड़ा कानपुर देहात।** ब्लॉक के साई बाबा पब्लिक स्कूल निनाया मे आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम के तहत स्थानीय विद्यालय के छात्र छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम में बच्चों ने दी मनमोहक प्रस्तुतियां आयोजित दस दिवसीय वीर तेजाजी मेले में मेला मंच पर शनिवार रात्रि को आयोजित सीनियर वर्ग सांस्कृतिक कार्यक्रम के तहत स्थानीय विद्यालय के छात्र छात्राओं द्वारा देशभक्ति, राजस्थानी संस्कृति से जुड़े गीतों और फिल्मी गीतों पर शानदार नृत्य प्रस्तुतियां दी और पांडाल में मौजूद दर्शकों का मनोरंजन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ सुबह साढ़े नौ बजे युवा समाज सेवी अतुल चंदेल ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि ने सरस्वती माता के चित्र पर दीप प्रज्वलित कर किया। अतिथियों का पालिका प्रशासन की ओर से माला पहनाकर स्वागत किया गया। सरस्वती वंदना से शुरू हुए कार्यक्रम में विद्यालय की छात्राओं ने सरस्वती माता की झांकी सजाई और शानदार प्रस्तुति दी।बाद ने विद्यालय के छात्र,छात्राओं ने भारतीय संस्कृति और परम्पराओं से ओतप्रोत गीतों, देशभक्ति राजस्थानी और फिल्मी गीतों पर एक से बढकर एक प्रस्तुतियां दी। विद्यालय के छात्रों ने गीतों पर एकल व सामूहिक नृत्य प्रस्तुतियां देकर दर्शकों की वाहवाही लूटी। अनिरुद्द सिंह प्रबंधक ने स्टॉफ सहित मौजूद रहे।

# भाजपा मैथा मंडल अध्यक्ष पद पर आठ लोगों ने पेश की दावेदारी

**मैथा कानपुर देहात।** सोमवार को मनोरमा वीरेंद्र सिंह मेमोरियल विद्यालय में भाजपा संगठन के चुनाव में मैथा मंडल अध्यक्ष पद के लिए आठ प्रत्याशियों ने मंडल चुनाव अधिकारी के समक्ष अपने-अपने नामांकन पत्र प्रस्तुत किए। मंडल चुनाव अधिकारी ने नामांकन करने वाले आठों दावेदारों के नामांकन पत्र स्वीकार कर भाजपा जिला कार्यालय में भेज दिए हैं। मंडल अध्यक्ष चुनाव को लेकर भाजपा कार्यकर्ताओं के बीच काफी गहमा गहमी दिखाई पड़ी। मैथा मंडल में भारतीय जनता पार्टी के मंडल अध्यक्ष पद के लिए भाजपा कार्य कर्ताओं के बीच सोमवार को काफी गहमागहमी का माहौल बना रहा। मंडल अध्यक्ष पद के सभी दावेदार अपने-अपने पक्ष में पार्टी के कार्यकर्ताओं को जोड़ने में जोड़-तोड़ करते हुए नजर आए। मैथा शिवली क्षेत्र के झम्मा नेवादा गांव स्थित मनोरमा वीरेंद्र सिंह मेमोरियल विद्यालय में भाजपा संगठन के संपन्न हुए चुनाव में मंडल अध्यक्ष पद के लिए वरिष्ठ भाजपा कार्यकर्ता प्रद्युम्न शुक्ला, पवन अग्निहोत्री, एडवोकेट राम प्रताप सिंह चौहान, बलराम सिंह बंटी चौहान, संदीप सिंह, कस्बा शिवली निवासी मनीष सैनी,गौरव मिश्रा पवन राजपूत समेत आठ लोगों ने अपना-अपना नामांकन पत्र दाखिल किया। चुनाव अधिकारी ने सभी के नामांकन पत्र स्वीकार कर लिए। मंडल चुनाव अधिकारी रामप्रकाश प्रजापति पूर्व जिला महामंत्री ने मंडल अध्यक्ष पद के लिए अधिकतम आयु सीमा 45 वर्ष तथा दोहोरी सक्रियता निर्धारित की थी। संगठन के चुनाव में प्रमुख रूप से योगेश शर्मा, अर्जुन यादव,राहुल तिवारी, अतुल शुक्ला, अमित सिंह, संजय सिंह, शैलेंद्र सिंह,प्रशांत सिंह, मनोज गुप्ता, अनुरुद्ध सिंह, विजय अग्निहोत्री आदि लोग मौजूद रहे।

# बैंक ऋण लेकर चुकता न करने वालों पर शासन शख्त

**हमीरपुर।** बैंकों से ऋण लेकर चुप्पी साधे बैठे बकायेदारों पर राजस्व टीम ने कार्यवाही करते हुए सोमवार को बैंकों द्वारा जारी की गई आर सी के आधार पर बकायेदारों की धर पकड़ की एवं ऋण अदायगी ना होने की स्थिति में कुर्की की चेतावनी दी गई। जनपद में बैंकों के तमाम बकायेदार हैं जिनके द्वारा ऋण के रूप में करोड़ों की रकम लेकर धनराशि जमा नहीं की जा रही हैं जिससे उनके खाते एनपीए हो गए हैं। जिलाप्रशासन के निर्देश पर ऐसे बकायेदारों की आर सी जारी की गई हैं और अब इनके खिलाफ कार्यवाही की जा रही है। इण्डियन बैंक के डिफॉल्टर 1500 है और बकाया 209 करोड़ है।सोमवार को इंडियन बैंक शाखा गोहांड के प्रबंधक चंद्रशेखर राजपूत एवं क्षेत्रीय अमीन भवानीदीन राजपूत की उपस्थिति मे ग्राम रेहुटा एवं अतरा में वसूली की कार्यवाही की गई। तहसीलदार अनुभव चंद्रा के नेतृत्व में राजस्व टीम ने बकायेदारों को यथाशीघ्र अपना ऋण अदा करने एवं अन्यथा की स्थिति मे सख्त कार्यवाही के लिए तैयार रहने के लिए कहा। इसमे कुर्की के साथ जेल भेजने जैसी कार्यवाही भी शामिल है।

# कोतवाली के सामने अवैध कब्जा जमाकर दरोगा जी बैठकर पीते हैं चाय

**राठ, हमीरपुर।** राठ कस्बे में कोतवाली के सामने कुछ लोगों ने आबकारी विभाग की ज़मीन पर दुकान खोलकर अवैध तरीके से कब्ज़ा कर लिया है। मजे की बात यह है कि पुलिसकर्मी और दरोगा जी उन्ही दुकानों पर बैठकर चाय की चुस्कीया लेते अक्सर नजर आते है। जबकि सूबे के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अवैध कब्ज़ा स्वीकार नहीं ना करने साथ ही कब्ज़ा धारको के खिलाफ सख्त कार्यवाही के आदेश दिए थे जिसका पालन कराने मे जिला प्रशासन सहित स्थानीय प्रशासन नाकाम साबित हो रहा है। भूमि, सडक या भवनो आदि पर अवैध कब्ज़ा करने वालों के साथ पूरी कठोरता से कार्रवाई करने के निर्देश देते हुये मुख्यमंत्री ने सभी जिलाधिकारी और पुलिस कप्तानो को ऐसे मामलो को सुचिबद्ध करते हुये अवैध कब्जेदारो के खिलाफ कार्यवाही तेज करने के निर्देश दिए थे। लेकिन राठ कस्बे मे मामला ठीक इसके विपरीत है जहा कोतवाली के ठीक सामने कब्जेदारो ने दुकान खोलकर कब्ज़ा कर लिया और पुलिस विभाग के दरोगा सहित अन्य कोतवाली मे तैनात पुलिसकर्मी ईन्ही दुकानों मे बैठकर चाय पीते है। जबकि मुख्यमंत्री ने आदेश दिया था की अवैध कब्ज़ा किसी भी स्थिति मे स्वीकार नहीं किया जायेगा। इसमें जीरो टोलरेंस की नीति के साथ कार्यवाई की जाये कब्ज़ा हटाने के कार्रवाई के साथ अवैध कब्ज़ा धारको के खिलाफ सुसंगत धाराओं मे एफआईआर भी पंजीकृत करने के निर्देश दिए थे। कस्बे के अति व्यस्थतम रामलीला मैदान के दोनों और सब्जी के ठेले और सडक किनारे लगी अस्थाई दुकानों की वजह से आय दिन जाम की स्थिति सहित दुर्घटना की आशंका बनी रहती है।

# नैमिषारण्य क्षेत्र में हो रहे विकास कार्यों को डीएम ने लिया जायजा

**तीसरा विकल्प संवाददाता राकेश पाण्डेय**

सीतापुर। जिलाधिकारी अभिषेक आनंद की अध्यक्षता में नैमिषारण्य स्थित निरीक्षण भवन में नैमिषारण्य क्षेत्र में हो रहे विकास कार्यों की समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। बैठक के दौरान जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि सभी प्रचलित कार्यों को पूरी गुण वत्ता के साथ निर्धारित समयावधि में पूर्ण कराया जाये। बेहतर अन्तर्विभागीय समन्वय स्थापित करते हुए कार्यों को पूर्ण कराने के निर्देश जिलाधिकारी ने दिए।धीमी प्रगति वाले कार्यों से सम्बन्धित कार्यदायी संस्थाओं के प्रतिनिधियों एवं अधिकारियों को निर्देश दिये कि प्रगति में सुधार किया जाये। उन्होंने सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देश दिये कि नियमानुसार प्रक्रिया करते हुये समय से वांछित भूमि कार्यदायी संस्थाओं को उपलब्ध करायी जाये तथा मानकों के अनुसार मुआवजा भी वितरित किया जाये। सभी विभाग से बेहतर समन्वय स्थापित करते हुए कार्यों को समयबद्ध रूप से पूर्ण कराएं। जिलाधिकारी ने हेलीपोर्ट पर विद्युत आपूर्ति सम्बन्धी कार्यों को तत्काल सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि ड्राइंग सम्बन्धी कार्यों को भी तत्काल पूर्ण कराते हुए योजना पूर्ण कराई जाये। नैमिषारण्य बाईपास हेतु भूमि अधिग्रहण के कार्यों को शीघ्र पूर्ण कराते हुए कार्यदायी संस्था को उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने नैमिषारण्य स्थित निरीक्षण भवन में जरूरतमंदों को कम्बल भी वितरित किए। उन्होंने उपजिलाधिकारी एवं सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देश दिए कि शीतलहर के दृष्टिगत समुचित व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जाये तथा जरूरतमंदों को चिन्हित करते हुए कंबल भी वितरित कराए जाएं। इसके उपरान्त जिला अधिकारी ने नैमिषारण्य बाई पास,राजघाट,चक्रतीर्थ आदि स्थानों पर चल रहे निर्माण कार्यों का स्थलीय निरीक्षण किया।जिला अधिकारी ने खण्ड विकास अधिकारी को कड़े निर्देश दिए कि राजघाट पर साफ सफाई की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित की जाये। राजघाट पर पेयजल की आपूर्ति हेतु स्थापित प्याऊ पर विद्युत कनेक्शन कराते हुए जलापूर्ति सुनिश्चित कराएं। उन्होंने कहा कि राजघाट पर डस्टबिन की व्यवस्था सुनिश्चित की जाये और नोटिस बोर्ड भी लगाए जाये।निराश्रित गोवंश को संरक्षित किए जाने के निर्देश भी जिलाधिकारी ने दिए। जिलाधिकारी ने कल्ली चौराहे का स्थलीय निरीक्षण कर सम्बन्धित अधिकारियों को चौराहे के दोनों ओर संकेतक एवं अन्य सुरक्षात्मक उपाय सुनिश्चित किए जाने के निर्देश भी दिए। बैठक के दौरान अपरजिला अधिकारी वित्त एवं राजस्व नीतीश कुमार सिंह,उप जिलाधिकारी मिश्रिख पंकज सक्सेना सहित सम्बन्धित अधिकारी व सम्बन्धित कार्यदायी संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

## गजेन्द्रमणि दुबे को मिले स्वर्णपदक व प्रशस्ति पत्र

**लालगंज, प्रतापगढ़।** क्षेत्र की प्रतिभा को शैक्षिक क्षेत्र में सफलता का परचम लहराने पर यहां लोगों मे खुशी देखी गयी। लक्ष्मणपुर क्षेत्र के रघवापुर निवासी गजेन्द्रमणि दुबे बीएचयू में हिन्दी परास्नातक की परीक्षा में प्रशस्ति पत्र व स्वर्ण समेत विशिष्ट पदकों से सम्मानित हुआ है। गजेन्द्रमणि गांव के शिवपवन दुबे का पुत्र है। वह काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से हिन्दी विषय में परास्नातक परीक्षा में सभी छः सेमेस्टरों में टॉपर का कीर्तिमान अपने नाम करने में सफल हुआ है। सफलता पर बीएचयू की ओर से उसे स्वर्ण पदक समेत मेडल व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया है। मेधावी की सफलता की जानकारी गांव पहुंची तो खुशी का माहौल देखा गया। गांव के कैप्टन शिव त्रिपुरारि पाण्डेय, लेंफ्टीनेंट घनश्याम पाण्डेय, साहित्यकार राधेश पाण्डेय, शिक्षक नितिन पाण्डेय, आचार्य रमापति दुबे, आचार्य शिवदर्शन पाण्डेय, शिव नारायण, उमेश पाण्डेय व गौरीशंकर त्रिपाठी ने खुशी जतायी है।

## पेंशनर्स की समस्याओं का तत्काल निस्तारण सुनिश्चित करें संबंधित अधिकारी-जिलाधिकारी

**तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता राकेश पाण्डेय**

सीतापुर। जिलाधिकारी अभिषेक आनंद की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में मंगलवार को पेंशनर्स दिवस समारोह का आयोजन किया गया।पेंशनर्स दिवस के दौरान जिलाधिकारी ने पेंशनर्स की समस्याओं को एक-एक करके सुना एवं उनके प्रभावी निस्तारण के निर्देश सम्बन्धित अधिकारियों को दिये।उन्होंने जनपद के सभी कार्यालयाध्यक्षों को निर्देश दिये कि वह पेंशनर्स की समस्याओं का नियमानुसार प्रभावी निस्तारण सुनिश्चित करायें। जिलाधिकारी ने विभागों में लम्बित पेंशन सम्बन्धी प्रकरणों का तत्काल निस्तारण सुनिश्चित कराने के निर्देश दिये। समारोह के दौरान वरिष्ठ पेंशनर्स को सम्मानित भी किया गया। जिलाधिकारी ने अपने सम्बोधन में कहा कि जिला प्रशासन सभी पेंशनर्स की समस्याओं को त्वरित निस्तारित करने के लिये प्रतिबद्ध है। उन्होंने समारोह में आये सभी वरिष्ठ पेंशनर्स एवं पेंशनर्स यूनियन के प्रति निधियों को धन्यवाद भी दिया। समारोह के दौरान वरिष्ठ कोषाधिकारी दिलीप कुमार सिंह ने बताया कि पेंशनर्स की समस्याओं के त्वरित एवं प्रभावी निस्तारण हेतु शासन के निर्देश के क्रम में पेंशनर्स दिवस का आयोजन किया गया है। इस दौरान जिले के विभिन्न क्षेत्रों से आये वरिष्ठ पेंशनर, सम्बन्धित विभागों के अधिकारी सहित विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

# बसपा छोड़ आजाद समाज पार्टी में शामिल होने पर विधान सभा अध्यक्ष ने किया स्वागत

**तीसरा विकल्प न्यूज़ संवाददाता राकेश पाण्डेय**

सीतापुर। वर्तमान समय में आजाद समाज पार्टी की बढ़ती लोकप्रियता से प्रभावित होकर बहुजन समाज पार्टी से छिटककर लोग आजाद समाज पार्टी की सदस्यता ग्रहण कर रहे हैं। इसी श्रृंखला में बहुजन समाज पार्टी के सेक्टर अध्यक्ष ने अपने साथियों के साथ आजाद समाज पार्टी की सदस्यता ग्रहण कर दी ली।आजाद समाज पार्टी की सदस्यता ग्रहण करने पर विधानसभा अध्यक्ष ने उनका स्वागत भी किया।

मिली जानकारी के अनुसार जिले के लहरपुर क्षेत्र के ग्राम पंचायत अदवारी ऊंचगांव निवासी बहुजन समाज पार्टी के सेक्टर अध्यक्ष विनोद कुमार गौतम ने बहुजन हित चिन्तक विधानसभा अध्यक्ष लहरपुर आजाद समाज पार्टी (कांशी राम)डॉ योगेंद्र प्रताप चौधरी के द्वारा पूरी विधानसभा में किये जा रहे कार्य को देखते हुए एवं एड0 चंद्रशेखर आजाद के संघर्षों से प्रभावित होने के साथ-साथ आजाद समाज पार्टी की नीतियों से प्रभावित होकर साथियों के साथ आजाद समाज पार्टी की सदस्यता ग्रहण कर ली। उन्होंने बताया कि संसद में नगीना सांसद एड चंद्रशेखर आजाद के संघर्ष वर्तमान परिस्थितियों में हर जगह आजाद समाज पार्टी भीम आर्मी के टीम की सक्रियता से स्पष्ट होता है की आजाद समाज पार्टी में ही बहुजन समाज का हित निहित है। उन्होंने कहा कि इन्हीं सभी चीजों को देखते हुए बहुजन समाज के अन्दर एक नया जोश जग रहा है, कार्यकर्ता हित में बहुजन समाज पार्टी के कार्य कर्ताओं ने मीटिंग का आयोजन किया इस बैठक में आजाद समाज पार्टी के विधानसभा अध्यक्ष डॉ योगेंद्र प्रताप चौधरी पहुंचे और उनके द्वारा विनोद कुमार गौतम को आजाद समाज पार्टी की सदस्यता दी गई। डॉ योगेंद्र प्रताप चौधरी ने माल्यार्पण कर उन सभी का स्वागत किया और शीर्ष नेतृत्व से आए हुए सभी निर्देशों के बारे में कार्यकर्ता पदाधिकारियों को अवगत कराया गया व आम जन मानस को आजाद समाज पार्टी भीम आर्मी की उपलब्धियां के बारे में तथा पार्टी के मिशन मूवमेंट के बारे में बताया कि वर्तमान समय में दलित,पिछड़े, पीड़ित,शोषित,मुस्लिम, अल्पसंख्यक सभी के लिए आजाद समाज पार्टी भीम आर्मी हर वक्त तैयार रहती है और वह वर्तमान में बिना किसी संकोच के अपने ऊपर मुकदमा झेल रही है बस उसका एक ही उद्देश्य है कि हमारे समाज का शोषण अत्याचार नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा की आजाद समाज पार्टी भीम आर्मी के मुखिया दलित पीड़ित शोषण पिछड़ी मुस्लिम अल्पसंख्यक हितों के लिए सरकार से विरोधियों से डटकर मुकाबला करते हैं। विधानसभा अध्यक्ष ने कहा कि एड0चंद्रशेखर आजाद विनय रतन सिंह प्रदेश अध्यक्ष सुनील चित्तौड़ जिला अध्यक्ष विश्वदीप चौधरी कैडर विंग जिला अध्यक्ष एडवोकेट अजीत भारती मण्डल अध्यक्ष अरविंद राजवंशी यह सभी लोग भीम आर्मी के शेर हैं। और इन्हीं के संरक्षण में संविधान एवं बहुजन समाज का हित सुरक्षित है।

## कुड़वार और इस्लामगंज में आम आदमी पार्टी ने चलाया सघन सदस्यता अभियान

**सुलतानपुर।** आम आदमी पार्टी द्वारा चलाए जा रहे सदस्यता अभियान के दौरान सोमवार को कुड़वार और इस्लामगंज में पदाधिकारियों द्वारा सघन सदस्यता अभियान चलाया गया !अभियान के दौरान लगभग सैकड़ो लोगों को आम आदमी पार्टी की प्राथमिक सदस्यता दिलाई गई ! जिलाध्यक्ष बृजेश प्रजापति और सह प्रभारी मो0 अख्तर राईन के नेतृत्व में चलाए जा रहे सदस्यता अभियान में कुड़वार कस्बे में जिला उपाध्यक्ष जितेंद्र तिवारी और जिला सचिव धर्मेंद्र जायसवाल की अगुवाई में जिले के पदाधिकारियों सहित सभी लोगों के सहयोग से पचास लोगों को पार्टी की टोपी पहना कर सदस्यता दिलाई गई । इसमें वर्तमान बीडीसी लालबहादुर भी शामिल थे । इस्लामगंज में दोपहर बाद करीब चार बजे पार्टी के कार्यकर्ता सभी आम जनता से रूबरू होते हुए चालीस लोगों को सदस्यता दिलाई इसमें सभी वर्ग के लोग शामिल थे । कार्यक्रम के दौरान महासचिव राम विलास तिवारी बताया कि अगला कार्यक्रम 188 विधानसभा सुलतानपुर में चलाया जाएगा इस मौके पर सोशल मीडिया अयोध्या मंडल प्रभारी साहिल तिवारी भी मौजूद रहे।

# अमर नगर में मनरेगा बना लूट का जरिया

➲ प्रधान, सचिव व रोजगार सेवक की मिलीभगत से अमर नगर ग्राम पंचायत में किया जा रहा जमकर भृष्टाचार

**तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता राकेश पाण्डेय**

सीतापुर। प्रदेश सरकार जहां भृष्टाचार की जड़ को समाप्त करने के लिए निरंतर कवायद कर रही है वहीं सरकारी मंशा को तार तार करते हुए भृष्टाचारी भृष्टाचार करने में पीछे नहीं हट रहे हैं।इसका खुलासा समाचार पत्र ने स्थानीय स्तर पर जाकर किया। इस प्रतिनिधि के पन्द्रह दिसम्बर 2024 को स्थानीय स्तर पर ग्राउंड जीरो की तफ्तीश में पता चला कि बारह मस्टर रोलों पर एक सौ तेरह मजदूर कार्य करते बताए गए वही जब टीम मौके पर पहुंची तो वहां पर केवल एक मजदूर ही मिला। जब कार्य करते हुए मजदूर से पूछा तो उसने भी बताया की बीस लेबर कार्य कर रहे हैं सभी लोग घर चले गए। जिससे साफ जाहिर होता है कि विकास खण्ड बेहटा की ग्राम पंचायत अमर नगर में प्रधान आशाराम सचिव व रोजगार सेवक बाबूराम की मिली भगत से जमकर भृष्टाचार किया जा रहा है बेहटा की ग्राम पंचायत अमर नगर ग्राम में पुलिया से लेकर राम धार के खेत तक मिट्टी पटाई का कार्य किया जा रहा है जिस पर मात्र बीस लेवर कार्य कर रहे थे और एक सौ तेरह लेवर दर्ज किए जा रहे हैं आखिर किसके संरक्षण में या किसके इशारे पर किया जा रहा सरकार की महत्वा कांक्षी योजना महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण योजना को फेल कर सरकार के दामन पर दाग लगाने का काम अमर नगर ग्राम पंचायत में ग्रामीणों ने बताया कि प्रधान आसाराम व रोजगार सेवक बाबूराम ने लाखों की भारी भरकम धनराशि चक मार्गों के नाम पर फर्जी मास्टर रोल भरकर निकाल रहे हैं रोजगार सेवक के द्वारा जमकर भृष्टाचार किया जा रहा है ग्रामीणों ने नाम न उजागर करने की शर्त पर बताया कि अमर नगर ग्राम पंचायत में हर योजना में जमकर भृष्टाचार किया गया है।आखिर उत्तर प्रदेश सरकार कब गिराएगी प्रधान रोजगार सेवक व सचिव अमर नगर पर गाज। वहीं जब इस मामले में रोजगार सेवक बाबूराम से बात की गई तो उन्होंने बताया अट्ठाइस लेवर चल रहे है जबकि एक लेवर मौके पर कार्य करते पाया गया। इस सम्बन्ध में जब प्रधान से बात करने की कोशिश की गई तो उन्होंने कई बार फोन लगाने पर फोन तो उठाया फिर काट दिया और बात नहीं की।

## संचालक व कर्मचारियों की पिटाई पर आधा दर्जन के खिलाफ मुकदमा

**लालगंज, प्रतापगढ़।** मैरिज हॉल में विवाद को लेकर संचालक की पिटाई के मामले मे लालगंज पुलिस ने आधा दर्जन आरोपियो के खिलाफ गंभीर धाराओ मे केस दर्ज किया है। सांगीपुर वार्ड के विवेक द्विवेदी पुत्र राजेश द्विवेदी ने पुलिस को दी गई तहरीर मे कहा है कि वह गांव में श्रीरामजानकी मैरिज हाल का संचालक है। बीती तेरह दिसंबर को लडकी पक्ष की ओर से मैरिज हाल की बुकिंग करायी गयी थी। तहरीर मे कहा गया है कि कर्मचारी व्यवस्था देख रहे थे कि तभी पार्किंग मे कन्या पक्ष से आये लडकी के भाई व उसके चार साथी कहासुनी करने लगे। इस पर मना करने पर लड़की के भाई व आरोपी विनोद के पुत्र प्रांशू सिंह व तीन अन्य ने उस पर लोहे के सामान से जानलेवा हमला कर दिया। आरोपियो ने गालीगलौज करते हुए पीडित तथा मैरिज हाल के कर्मचारी शिव जायसवाल, मनीष जायसवाल व रवि यादव आदि के साथ भी मारपीट की। तहरीर के आधार पर पुलिस ने सांगीपुर थाना के गोड़वा निवासी अंशू जायसवाल पुत्र कृपाशंकर तथा आरोपी प्रांशू सिंह सुत विनोद व तीन अज्ञात के विरूद्ध गंभीर धाराओं मे आधा दर्जन के खिलाफ केस दर्ज किया है।

## अज्ञात पिकअप चालक के खिलाफ गैरइरादतन हत्या का केस

**लालगंज, प्रतापगढ़।** अज्ञात पिकप चालक के खिलाफ लीलापुर पुलिस ने महिला की दुर्घटना में मौत को लेकर गैरइरादतन हत्या का केस दर्ज किया है। लीलापुर थाना के कोडरा मांदूपुर निवासी सलाउद्दीन की पत्नी जमीला बानो ने तहरीर मे कहा है कि दस दिसंबर को उसकी बहन जरीना बानो दिन में लगभग पौने दो बजे हण्डौर स्थित पावर हाउस में बिजली का बिल जमा करने गयी थी। जरीना बिल जमा कर घर वापस आ रही थी तभी प्रतापगढ़ की ओर से आ रही पिकप ने लापरवाहीपूर्वक उसे टक्कर मार दिया। दुर्घटना में पीडिता की बहन की मौत हो गयी। तहरीर के आधार पर पुलिस ने अज्ञात पिकप चालक के खिलाफ केस दर्ज किया है।

# तिलहन मॉडल ग्राम परियोजना अन्तर्गत कृषकों को समेकित पोषक तत्व एवं कीट रोग प्रबंधन पर किया जागरुक

➲ आई.पी.एम.एवं आई.एन.एम. के प्रयोग से किसान पा सकते हैं उच्च उत्पादकता,पर्यावरण में भी होगा सुधार।

➲ तिलहन की खेती को बढ़ावा देने हेतु आई.सी. ए.आर की पहल पर विकसित किए जा रहें है माडल गांव।

**तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता राकेश पाण्डेय**

सीतापुर। सरसों की खेती को अधिक लाभकारी बनाने के उद्देश्य से वैज्ञानिकों ने हाल ही में भारत सरकार की पहल पर चयनित माडल विलेज अन्तर्गत किसानों के प्रक्षेत्रों का भ्रमण किया और सरसों की खेती से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियां साझा कीं। कृषि विज्ञान केन्द्र कटिया द्वारा तिलहन मॉडल ग्राम परियोजना अन्तर्गत जिले के ब्लॉक पिसावां के ग्राम- खोझेपुर (अनंतापुर) को चयनित किया गया है। केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ. दया शंकर श्रीवास्तव ने कहा कि सरसों का बेहतर उत्पादन प्राप्त करने के लिए किसानों को फसल प्रबंधन में खरपतवार नियंत्रण, संतुलित उर्वरक का प्रयोग,और उचित सिंचाई तकनीक अपनाने पर बल दिया।डॉ. श्रीवास्तव ने सरसों की फसल में कीट और रोग प्रबंधन पर जानकारी देते हुए बताया कि सरसों की फसल को सफेद रतुआ, अल्टरनेरिया ब्लाइट, और एफिड्स जैसे कीट एवं रोगों से नुकसान हो सकता है। इनसे बचाव के लिए जैविक उपाय जैसे नीम,प्याज,और लहसुन के रस का उपयोग, पीला एवं नीला चिपचिपा पाश के प्रयोग को प्राथमिकता दें। रासायनिक उपाय में मैनकोजेब 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी का छिड़काव एवं इमिडाक्लोप्रिड का प्रयोग किया जा सकता है फसल के आसपास साफ- सफाई रखें।नियमित निगरानी करते हुए संक्रमित भाग दिखाई दें तो उसे काटकर गड्ढे में दबा दें। प्राकृतिक परजीवी जैसे लेडी बर्ड बीटल का संरक्षण पर्यावरण के लिए बेहतर है। कृषि विज्ञान केन्द्र के सस्य वैज्ञानिक डॉ. शिशिर कांत सिंह ने किसानों को सरसों की नई और उन्नत किस्मों जैसे-गिरिराज,आर.एच. -749,आर.एच.725 और राधिका की विशेषताओं के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि यह प्रजातियां कम पानी में भी बेहतर उत्पादन देती हैं और इनमें रोग प्रतिरोधक क्षमता भी अधिक होती है। कार्यक्रम में किसानों को मृदा परीक्षण की महत्ता पर विशेष रूप से जोर दिया गया। सरसों की अच्छी उपज के लिए मृदा में उपलब्ध पोषक तत्वों की स्थिति जानने के बाद ही उर्वरकों का चयन करें। सरसों की फसल के लिए सल्फर भी एक महत्वपूर्ण पोषक तत्व है।यह तेल की गुणवत्ता और उत्पादन में वृद्धि करता है। चर्चा उपरांत वैज्ञानिकों ने प्रायोगिक प्रक्षेत्र पर जाकर किसानों को वास्तविक फसल प्रबंधन तकनीकों का प्रदर्शन किया और उनके सवालों के उत्तर दिए। कार्यक्रम में अजीत यादव, अहिबरन सिंह,दिनेश कुमार रोहित कुमार,सर्वेश,श्याम सिंह,अखिलेश कुमार, सुधा कर,रामगोपाल,रामसागर, विवेक प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया। कार्यक्रम के अन्त में किसानों ने सरसों की खेती में अपनाई जाने वाली तकनीकों को लेकर अपनी रुचि और भविष्य की योजनाओं को साझा किया।

## जिलाधिकारी ने जनसुनवाई के दौरान शिकायतकर्ताओं की सुनी समस्याएं

**प्रतापगढ़।** जिले में जिलाधिकारी संजीव रंजन ने सोमवार को कलेक्ट्रेट कार्यालय में जनसुनवाई के दौरान दूर-दराज से आये हुये फरियादियों की शिकायतों को गम्भीरतापूर्वक सुनकर सम्बन्धित अधिकारियों को प्राप्त शिकायतों का गुणवत्तापूर्ण व समयबद्ध तरीके से निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। शिकायतकर्ता अनार कली ने शिकायत किया कि गांव के जसवंत कुमार, बनवारी लाल, राम बहादुर द्वारा सरकारी चकरोड काटकर अपने खेतों में मिला लिये है, प्रार्थिनी के कई बार रोका तो जान से मारने की धमकी देते है, प्रार्थिनी ने उपजिलाधिकारी सदर को प्रार्थना पत्र दिया तो हल्का लेखपाल लोगों से मिलकर फर्जी रिपोर्ट लगाकर भेज देते है जिससे उक्त लोगो का मनोबल बढ़ा हुआ है व हल्का लेखपाल भी मिले हुये है, इस प्रकरण पर जिलाधिकारी ने उपजिलाधिकारी सदर को निर्देशित किया है कि चकरोड की मरम्मत करवाने हेतु पैमाईश कराकर खाली करायें। जनसुनवाई के दौरान प्राप्त राजस्व शिकायतों के सम्बन्ध में जिलाधिकारी ने अधिकारियों को निर्देशित किया है कि राजस्व एवं पुलिस की संयुक्त टीम मौके पर जाकर निष्पक्ष जांच कर, शिकायतों का निस्तारण गुणवत्तापूर्ण ढंग से करें जिससे शिकायतकर्ता को इधर-उधर भटकना न पड़े। उन्होने अधिकारियों को यह भी निर्देशित किया है कि जनकल्याणकारी योजनाओं से पात्र व्यक्तियों को लाभान्वित करें, कोई भी पात्र व्यक्ति योजना से वंचित न रहें इसका विशेष ध्यान दें। जिलाधिकारी ने अधिकारियों को निर्देशित किया है कि जनता की शिकायतों को शासन की मंशानुरूप गुणवत्तापूर्ण निस्तारण ससमय करायें, शिकायतों के निस्तारण में लापरवाही कदापि न बरती जाये।

# मतदाता विखंडीकरण से संबंधित कार्य को लेकर चिरकुंडा नगर परिषद कार्यालय में बैठक

**तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो**

धनबाद। चिरकुंडा, चिरकुंडा नगर परिषद कार्यालय के सभागार में अंचलाधिकारी कृष्ण कुमार मरांडी की अध्यक्षता में नगर परिषद क्षेत्र के 21 वार्डों में मतदाता विखंडीकरण से संबंधित कार्य को लेकर बीएलओ तथा प्रति नियुक्ति शिक्षक की बैठक मंगलवार को संपन्न हुई। बैठक में अंचलाधिकारी ने सभी को संबंधित दिशा निर्देश दिये व कहा कि राज्य के शहरी स्थानीय निकायों में अत्यंत पिछड़ा वर्ग एवं पिछड़ा वर्ग के संबंध में वार्ड बारसूचना अद्यतन मतदाता सूची के आधार पर निर्धारित प्रपत्र 01 से 03 में तथा पिछले वर्गों की राजनीतिक स्थिति की जानकारी हेतु अनारक्षित वर्ग के विरुद्ध चुने गए अत्यंत पिछड़ा वर्ग /पिछडे वर्ग के प्रतिनिधियों की सूचना विगत दो निर्वाचन के आधार पर निर्धारित प्रपत्र चार से पांच में प्राप्त की जानी है। प्रतिनियुक्ति शिक्षक प्रमोद कुमार झा ने कहा की डोर टू डोर सर्वे के आधार पर निर्धारित प्रपत्र एक से पांच में वांछित सूचना आयोग के कार्यालय को उपलब्ध कराया जाना है।मौके पर प्रतिनियुक्ति शिक्षक पुरुषोत्तम कुमार सिंह अरुण कुमार सिंह,कन्हैया सिंह,एमडी रहमान, विनीत कुमार सिंह, योगेंद्र प्रसाद,सोगत आचार्य, रंजीत कुमार सिंह,देवेंद्र कुमार सिंह ,जय कृष्णा बर्णवाल, ख्वाजाउद्दीन अंसारी, मैनुल हसन, शब्बीर अहमद, लालू रविदास ,भीमपद रोहिदास, सुरेश प्रसाद ,अमित कुमार,राजू कुमार साहू,एमडी अनवर ,वंदना वाला ,सीमा देवी ,पूजावती देवी, सिंधु देवी, समीर कुमार महतो,अशोक कुमार मिश्रा, आदर्श महतो आदि थे।

## आईजीआरएस की शिकायत पर जांच करने डिहवा पहुंचे खाद्य निरीक्षक

**पनीर एवं खोवा का नमूना संकलित कर भेजा गया जांच हेतु**

**सुलतानपुर।** आइजीआर पोर्टल पर की गई शिकायत के आधार पर खाद्य निरीक्षक अभय प्रताप सिंह जांच टीम के साथ ग्राम पंचायत दूबेपुर अंतर्गत डिहवा पहुंचे ! जहां जांच के दौरान खाद्य निरीक्षक ने सभी उत्पादों का बारीकी से निरीक्षण किया ! निरीक्षण के दौरान रवि शंकर वर्मा के नाम से लाइसेंस वैध पाया गया ! खाद्य निरीक्षक ने पनीर और खोवा का नमूना जांच हेतु संकलित कर लिया है ! इस संबंध में खाद्य निरीक्षक अभय प्रताप सिंह ने बताया आईजीआरएस पर की गई शिकायत के आधार पर खोवा उत्पादन केंद्र की जांच के दौरान नमूना संकलित कर जांच के लिए भेजा गया है!

## मंत्री रूपेश गोयला ने लिया दरंग जिले में विकास के 12 दिन कार्यक्रम में भाग

**तीसरा विकल्प न्यूज़ - पंकज नाथ**

असम। असम सरकार द्वारा शुरू किए गए विकास के 12 दिन नामक कार्यक्रम के हिस्से के रूप में आज दरंग जिले के गांधी मैदान में दूसरे दिन के कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए असम सरकार में चाय, जनजातीय कल्याण, श्रम आदि विभागों के मंत्री रूपेश गोआला। इस अवसर पर मंत्री कने विभिन्न मदों में हितग्राहियों को औपचारिक रूप से अनुदान, प्रमाण पत्र आदि वितरित किए। इस अवसर पर मंत्री रूपेश गोयल ने कहा कि असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्वा सरमा के नेतृत्व में असम को सर्वांगीण विकास की दिशा में आगे ले जाने के लिए काम किया जा रहा है ताकि असम देश के राज्यों में से एक सफल राज्य बन जाए। मंत्री ने कहा कि गरीब महिलाओं का ऋण माफ कर एक लाख नियुक्तियां देकर मुख्यमंत्री ने चुनाव के दौरान किए गए वादों को अक्षरशः पूरा किया है। अपने भाषण में उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि पहले, दूसरे और तीसरे चरण में कर्ज माफी पर कितना पैसा खर्च किया गया है। उन्होंने कहा कि बाढ़ या प्राकृतिक आपदाओं से आंशिक और पूरी तरह से प्रभावित लोगों को बिना किसी कठिनाई के डीबीटी के माध्यम से राहत प्रदान की गई है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री के मजबूत नेतृत्व में सभी को लाभ हुआ है। इस अवसर पर सिपाझार विधानसभा क्षेत्र के विधायक डॉ. परमानंद राजबंशी ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्वा सरमा ने महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए विभिन्न योजनाएं शुरू की हैं। नतीजतन, महिलाएं विशेष रूप से लाभान्वित हुआ है। मंगलदोई निर्वाचन क्षेत्र के विधायक बसंत दास और असम राज्य मत्स्य विकास निगम के अध्यक्ष गुरुज्योति दास ने भी इस अवसर पर अपने विचार रखे। गौरतलब है कि दरंग जिले में असम माइक्रोफाइनेंस प्रोत्साहन और राहत योजना 2021 के तहत तीसरे दर्जे के कर्जदारों को दूसरे चरण में 1,358 लोगों को %नो ड्यूज सर्टिफिकेट% मिला है। वहीं लघु खाद्य प्रसंस्करण उद्योग की औपचारिकता योजना के तहत 207 लोगों को पूंजी निवेश पर सब्सिडी और आपदा से प्रभावित सात परिवारों को प्रत्यक्ष वित्तीय सहायता प्राप्त हुई। दरंग के जिला आयुक्त पराग कुमार काकती द्वारा स्वागत भाषण दिए गए इस समारोह में असम राज्य महिला आयोग की उपाध्यक्ष नीलिमा देवी, मंगलदोई नगर पालिका की महापौर निर्माली देवी शर्मा, जिला विकास आयुक्त देबजीत बरुआ सहित कई अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे। इसके अलावा मंत्री रूपेश गोआला ने आज विकास के 12 दिवसीय कार्यक्रम में भाग लेने के बाद मंगलदोई जिला जेल का दौरा किया। यात्रा के दौरान मंत्री ने जेल के कैदियों के साथ बातचीत की और जेल की रसोई, पुस्तकालय आदि का दौरा किया। उन्होंने असम कौशल विकास मिशन के तहत चलाए जा रहे सिलाई मशीनों के प्रशिक्षण कार्यक्रम का भी जायजा लिया। उन्होंने जेल कर्मचारियों की उपस्थिति का भी निरीक्षण किया।

# सफलता कभी मेरे सिर चढ़ ही नहीं सकती

## पुष्प राज की श्रीवल्ली अभिनेत्री रश्मिका मंदाना ने सुनाई खरी-खरी

तीन साल पहले तक अभिनेत्री रश्मिका मंदाना को लोग बस फिल्म 'पुष्पा द राइज' की श्रीवल्ली के तौर पर ही जानते थे। लेकिन, बीते साल आईं फिल्मों 'सीता रामम' और 'एनिमल' ने उन्हें अखिल भारतीय सितारा बना दिया। तीन साल पहले तक अभिनेत्री रश्मिका मंदाना को लोग बस फिल्म 'पुष्पा द राइज' की श्रीवल्ली के तौर पर ही जानते थे। लेकिन, बीते साल आईं फिल्मों 'सीता रामम' और 'एनिमल' ने उन्हें अखिल भारतीय सितारा बना दिया। अब बारी 'पुष्पा द रूल' यानी 'पुष्पा 2' की है। रश्मिका मंदाना अपने बारे में बात करने में उतना ही अधिक संकोच करती हैं, जितना अधिक आनंद उन्हें अलग-अलग कहानियों में अपने बिल्कुल अतरंगी किरदारों की चर्चा करने में आता है। 'कांतारा' से दुनियाभर में चर्चा में आए अभिनेता ऋषभ शेट्टी की बतौर निर्देशक कन्नड़ फिल्म 'किरिक पार्टी' से डेब्यू करने वाली रश्मिका के इस संकोची स्वभाव के पीछे उनके बचपन की यादें खास मायने रखती हैं। वह कहती हैं, ''मेरा बचपन मुझे खुद में ही सिमटे रहने की याद दिलाता रहता है। शायद, वे यादें मेरे साथ ही रहती हैं, मेरी सांसों की तरह।'' रश्मिका खुलासा करते हुए बताती हैं, ''कम लोगों को ही पता है कि हमने वह दौर भी गुजारा है, जब आर्थिक तंगी के चलते हमें साल में दो-तीन बार अपना किराये का घर बदलना पड़ जाता था। पैसे इतने भी नहीं होते थे कि मैं अपने माता-पिता से अपने लिए एक गुड़िया की मांग कर सकूं। लेकिन, इसका फायदा ये भी हुआ है कि मैंने पैसे की अहमियत बहुत छोटी उम्र में सीख ली।'' शोहरत ने रश्मिका को बिल्कुल नही बदला है। रश्मिका साफकहती हैं, ''मैं अब भी खुद को कोई बड़ा स्टार नहीं मानती। मैं मशहूर तो हूं, लेकिन यहां तक आने में भी मुझे समय लगा है। ये सब धीरे-धीरे हो रहा है। पहले लोगों को मेरा चेहरा अच्छा लगा। फिर उन्होंने मेरे अभिनय में मेरे भाव प्रकटन और दैहिक भाषा को स्वीकार किया और अब उन्हें मेरे अलग-अलग किरदार पसंद आ रहे हैं। मैं इस सबके लिए उनकी बहुत आभारी हूं। मुझे अभी बहुत आगे जाना है और मैं जिस पृष्ठभूमि से आती हूं, वहां सफलता कभी मेरे सिर चढ़ ही नहीं सकती।''

'पुष्पा द राइज' की श्रीवल्ली और 'एनिमल' की गीतांजलि के बीच लोगों ने 'सीता रामम' की आफरीन को भी खूब पसंद किया। अपने किरदारों को लेकर रश्मिका मंदाना शुरू से सतर्क रही हैं। वह बताती हैं, ''हर फिल्म मैं खुद को एक नई चुनौती देती हूं। लोगों ने मुझे बीच में चुनौती दी कि मैं रो नहीं सकती तो मैंने फिल्म 'डियर कामरेड' की। ये मेरी असल जिंदगी से बिल्कुल विपरीत फिल्म रही। मेरे चेहरे पर आपको कभी दुख नहीं मिलेगा, और वो इसलिए क्योंकि मैंने हर हाल में हंसना एक कला की तरह सीखा है।'' रश्मिका मंदाना बतौर अभिनेत्री अपनी पहचान कैसी बनाना चाहती हैं? इस सवाल के जवाब में वह कहती हैं, ''मुझे लगता है कि अभी तो मेरी अभिनय यात्रा बस शुरू ही हुई है। लेकिन, इतना तो मैं कह सकती हूं कि लोग मेरी फिल्में देखेंगे तो मेरे अभिनय की चर्चा जरूर करेंगे। मेरी इच्छा है कि पांच साल बाद जब लोग मेरी फिल्मों की बात करें तो उन्हें मेरे किरदारों के नाम भी अगर याद रह जाएं। ये मेरे लिए बड़ी बात होगी। ये ही मेरे अभिनय का सबसे बड़ा पुरस्कार होगा।''

पुष्पा 2 की उल्टी गिनती शुरू हो गई है। इस बार सुकुमार की फिल्म में एक्शन और भी ज्यादा दमदार और खतरनाक होने वाला है। पुष्पाराज और श्रीवल्ली को दोबारा स्क्रीन पर एक साथ देखने का ऑडियंस को बड़ी ही बेसब्री से इंतजार है। साल 2021 में रिलीज हुई पुष्पा: द राइज के बाद सेकंड पार्ट में कहानी क्या मोड़ लेती है, इसका खुलासा कुछ दिनों में ही हो ही जाएगा, लेकिन इस बीच ही सबकी चहेती श्रीवल्ली उर्फ रश्मिका मंदाना ने बातों ही बातों में बता दिया कि पुष्पाराज की कहानी दो पार्ट्स में सिमट कर नहीं रहेगी, बल्कि इस फिल्म का तीसरा पार्ट भी आने वाला है। रश्मिका मंदाना ने पुष्पा 3 को लेकर दिया बड़ा हिंट पुष्पा 2 की शूटिंग में काफी अड़चने आई है। फिल्म की घोषणा साल 2022 में ही हो गई थी, लेकिन इसे बनाने में काफी समय लग गया। पुष्पा 2 के सेट से कभी मेकर्स, तो कभी अल्लू अर्जुन और निर्देशक सुकुमार के बीच अनबन की खबरों ने जोर पकड़ा। रिलीज से कुछ दिनों पहले ही फिल्म की फाइनल शूटिंग खत्म हुई है। फिल्म की शूटिंग खत्म होने के बाद एक्ट्रेस रश्मिका मंदाना ने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक स्टोरी पोस्ट की।जिसमें उन्होंने लिखा, डियर डायरी, 25 नवंबर, ये दिन मेरे लिए भावनाओं से भरपूर रहा है। मुझे नहीं पता मैं कैसे रिएक्ट करूं..ओके मैं एक्सप्लेन करती हूं। 24 तारीख को पूरे दिन शूट करने के बाद हमने चेन्नई की फ्लाइट ली। वहां पर हमारा बहुत ही खूबसूरत इवेंट हुआ, लेकिन उसी रात हम हैदराबाद लौट आए। मैं घर पहुंचकर 4 से 5 घंटे सोई, उसके बाद उठी और जल्दी-जल्दी पुष्पा 2 की शूटिंग के लिए निकली। हमने एक गाना शूट किया,मेरा पूरा दिन शूटिंग में चला गया।पुष्पा 3 का बहुत सारा काम रह गया है रश्मिका मंदाना ने अपनी पोस्ट में आगे लिखा, मुझे पता था वह मेरा लास्ट दिन है, लेकिन मुझे ऐसा महसूस नहीं हो रहा था। 5 साल से इस सेट पर शूट करने के बाद मुझे ऐसा महसूस होता है कि ये मेरा घर बन गया था, लेकिन अब ये मेरा फाइनली आखिरी दिन है। पार्ट 3 के लिए बहुत सारा काम अभी रह गया है, लेकिन बहुत अलग सा लग रहा है, मेरे अंदर कई एहसास उमड़ रहे हैं। ऐसा लग रहा है यह अंत था। मेरे अंदर एक उदासी है, जिसे मैं भी नहीं समझ पा रही हूं। अचानक ही सारे इमोशंस मिल गए हैं और मुझे वह दिन याद आ गए, जब हम इसके लिए हार्ड वर्क कर रहे थे। मैं थक जाती थी, लेकिन बहुत ही ज्यादा ग्रेटफुल थी। मैं सभी को बहुत याद करूंगी। मैं एक लंबे समय के बाद बहुत ज्यादा टूट गई हूं, लेकिन मुझे अभी भी नहीं समझ आ रहा है कि मैं ऐसे क्यों रिएक्ट कर रही हूं। अल्लू अर्जुन, सुक्कू सर और ये टीम ही है, जो ये जानते हैं कि मैं कैसी इंसान हूं। वह मुझे पिछले 5 सालों से देख रहे हैं और पुष्पा का सेट मेरा घर बन चुका है, जिसे छोड़ना मेरे लिए बहुत ही मुश्किल हो रहा है। आपको बता दें कि पुष्पा 2 की रिलीज कई बार टली है। पहले ये फिल्म 15 अगस्त को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली थी, लेकिन शूटिंग पूरी न होने के कारण मूवी की रिलीज डेट को बढ़ा दिया गया। अब ये फिल्म विश्वभर के सिनेमाघरों में 5 दिसंबर को रिलीज हो रही है।साउथ सिनेमा से लेकर हिंदी सिनेमा में अपनी जबरदस्त पहचान बनाने वाली रश्मिका मंदाना इस वक्त साउथ सुपरस्टार अल्लू अर्जुन के साथ हालिया रिलीज फिल्म पुष्पा 2रू द रूलश् में नजर आ रही हैं, जिसमें वो एक बार फिर श्रीवल्लीश् के किरदार में नजर आ रही हैं. फिल्म 5 दिसंबर को सिनेमाघरों में रिलीज हुई है, जिसने पहले ही दिन कई रिकॉर्ड बनाए और तोड़े. इसी बीच श्पुष्पराजश् की श्रीवल्लीश् ने अपनी सफलता के श्रेय इन दो बड़े सुपरस्टार्स को दिया है. दरअसल, 2016 में कन्नड़ फिल्म श्किरिक पार्टीश् से अपने करियर की शुरुआत करने वाली रश्मिका अब तक कई हिट फिल्मों का हिस्सा रही हैं. उन्होंने कई बड़े एक्टर्स के साथ काम किया है. इसी बीच एक्स हैंडल (ट्विटर) पर एक पोस्ट तेजी से वायरल हो रहा है, जहां एक फैन ने एक्स पर रश्मिका की रणबीर कपूर के साथ श्एनीमलश् और अल्लू अर्जुन के साथ श्पुष्पा 2श् की कंबाइन फोटो पोस्ट की और लिखा, श्दो अल्फा मेल्स एक लड़की रश्मिका से डोमिनेट हो रहे हैंश, जिसका एक्ट्रेस ने जवाब भी दिया, जो वायरल हो रहा है. इन दोनों स्टार्स को जाता है सक्सेस का श्रेय इतना ही नहीं, उनके इस जवाब को काफी पसंद भी किया जा रहा है. उन्होंने इस ट्वीट का जवाब देते हुए लिखा, श्इन कलाकारों के साथ काम करना मेरे लिए बहुत बड़ी बात है. इन दोनों शानदार अभिनेता की वजह से मैं जो आज अभिनेता हूं, उन पर मुझे गर्व हैश. इसके साथ उन्होंने एक रेड हार्ट इमोजी भी शेयर किया है. फैंस रश्मिका के इस जवाब की खूब तारीफकर रहे हैं. इसके साथ ही फिल्म में उनके किरदार श्रीवल्लीश् की भी काफी तारीफहो रही है. श्पुष्पा 2रू द रूलश् का फैंस लंबे समय से इंतजार कर रहे थे. श्पुष्पा 2श् ने रिलीज होते ही बनाया नया रिकॉर्ड, त्ज्ञ की श्जवानश् को भी पछाड़ाय बनी सबसे बड़ी हिंदी ओपनरय पहले ही दिन की छप्परफाड़ कमाई श्पुष्पा 2श् ने पहले ही दिन की छप्पर फाड़ कमाई 2024 की मोस्ट अवेटेड फिल्मों में से एक श्पुष्पा 2रू द रूलश, 5 दिसंबर को तेलुगु, तमिल, हिंदी, कन्नड़ और मलयालम भाषाओं में सिनेमाघरों में रिलीज हुई. शुरुआती बॉक्स ऑफिस अनुमान बताते हैं कि फिल्म ने पहले ही 50 करोड़ रुपये का आंकड़ा पार कर लिया है. सैकनिलक के मुताबिक, श्पुष्पा 2श् ने पहले दिन देश भर में सभी भाषाओं में 52.73 करोड़ रुपये की कमाई की. दोपहर 1 बजे तक आए आंकड़ों के मुताबिक, फिल्म की कमाई दिन बढ़ने के साथ और ज्यादा होती चली गई और 10 बजे तक फिल्म ने 100 करोड़ के पास पहुंच गया.

## 'एनिमल फिल्म छोड़ने का मुझे कोई पछतावा नहीं'

रणबीर कपूर की फिल्म एनिमल हिट साबित हुई थी। लेकिन क्या आप जानते हैं कि इस फिल्म के लिए संदीप रेड्डी वांगा की पहली पसंद रश्मिका नहीं, बल्कि परिणीति चोपड़ा थीं। अब हाल ही में परिणीति ने बताया कि उन्होंने चमकीला फिल्म के लिए एनिमल को मना कर दिया था। जबकि एक इंटरव्यू में संदीप रेड्डी वांगा ने यह कहा था कि उन्होंने परिणीति को फिल्म से बाहर किया था और इसके लिए उनसे माफी भी मांगी थी। एनिमल की डेट में चमकीला ऑफर हो गई थी- परिणीति परिणीति चोपड़ा और उनके पति राघव चड्ढा हाल ही में आपकी अदालत में पहुंचे थे। इस दौरान उन्होंने रजत शर्मा से बातचीत में कहा, ''मुझे एनिमल फिल्म में रश्मिका मंदाना का रोल खोने का कोई पछतावा नहीं है। मैं सच कहूं तो मुझे लगता है कि भगवान ने मेरे लिए कुछ अच्छा ही सोचा था। मैं उस फिल्म (एनिमल) को कर रही थी और सब कुछ तय हो चुका था, लेकिन उसी समय मुझे चमकिला फिल्म का ऑफर मिला। दोनों की डेट भी सेम थी।'' परिणीति ने कहा, ''मुझे कई गाने के ऑफर मिले थे। मुझे एआर रहमान के साथ भी काम करने का मौका मिला था। इतना ही नहीं, मुझे और भी कई अच्छे मौके मिले। लेकिन, इम्तियाज अली मेरे ड्रीम डायरेक्टर हैं, तो जब मुझे इतना कुछ करने को मिल रहा था, तो मैंने एनिमल के बजाय चमकिला को चुना।'' परिणीति ने आगे कहा, ''मैं मानती हूं कि जो प्यार, सपोर्ट, पहचान और सम्मान मुझे इस फिल्म से मिला, उससे मुझे कोई पछतावा नहीं है। मैं बहुत खुश हूं।'' राघव चड्ढा ने बताया कि फिल्म चमकिला ने उनके रिश्ते को काफी मजबूत किया। उन्होंने कहा, ''जब परिणीति भारत लौटीं, तो वह फिल्म की शूटिंग के लिए सीधे पंजाब आईं। इससे हमें अक्सर मिलने का मौका मिला, जिससे हमारा रिश्ता और मजबूत हुआ। गुरुद्वारा चमकौर साहिब जाना उनके रिश्ते को और गहरा बनाता है।'' डायरेक्टर वांगा बोले- मुझे परिणीति में गीतांजलि नजर नहीं आई कोमल नहाटा को दिए एक इंटरव्यू में संदीप ने बताया, ''मैं हमेशा से परिणीति चोपड़ा के साथ काम करना चाहता था। मुझे उनकी एक्टिंग बहुत पसंद है, इसलिए मैंने उन्हें एनिमल की शूटिंग शुरू होने से डेढ़ साल पहले ही कास्ट कर लिया था। लेकिन शूटिंग से कुछ दिनों पहले मुझे लगा कि वे गीतांजलि के किरदार में फिट नहीं बैठतीं। कुछ किरदार कुछ लोगों को सूट नहीं करते, इसलिए मैंने फिल्म की शूटिंग शुरू होने से कुछ दिन पहले ही परिणीति को रिप्लेस कर दिया था। इसके लिए मैंने उनसे माफी भी मांगी थी।'' साल 2023 में आई थी एनिमल रणबीर कपूर स्टारर फिल्म एनिमल 1 दिसंबर को सिनेमाघरों में रिलीज हो गई थी, जबकि चमकिला फिल्म इसी साल ओटीटी पर रिलीज हुई थी। इस फिल्म में परिणीति के अलावा पंजाबी सिंगर-एक्टर दिलजीत दोसांझ भी नजर आए थे।

## रिसेप्शन में वाइफ गौरी को बुर्का पहनाना चाहते थे शाहरुख?

आज हम आपको बॉलीवुड के किंग शाहरुख खान का एक हैरान कर देने वाला किस्सा लेकर आए हैं. जिसे सुनकर आप भी यकीन नहीं कर पाएंगे. आज हम आपको बॉलीवुड के किंग शाहरुख खान का एक हैरान कर देने वाला किस्सा लेकर आए हैं. जिसे सुनकर आप भी यकीन नहीं कर पाएंगे. शाहरुख खान और गौरी खान बी-टाउन का एक पावरफुल कपल है. दोनों की जोड़ी पर फैंस बेशुमार प्यार लुटाते हैं और उनकी छोटी से छोटी बात जानने के लिए हर वक्त एक्साइटिड रहते हैं. ऐसे में आज हम आपके लिए इस स्टार कपल के वेडिंग रिसेप्शन का एक बेहद दिलचस्प किस्सा लेकर आए हैं. जिसे जानकर आप भी दंग रह जाएंगे. शाहरुख खान बॉलीवुड के सेल्फमेड स्टार हैं. जिन्होंने कड़े संघर्ष के बाद खुद को बॉलीवुड का किंग बनाया है. ये बात भी हर कोई जानता है कि वो एक मुस्लिम हैं और उन्होंने हिंदू लड़की गौरी से शादी की है. शाहरुख और गौरी की शादी तभी हो गई थी जब वो इंडस्ट्री में अपने पैर जमाने की कोशिश कर रहे थे. वहीं एक बार जब शाहरुख खान फरीदा जलाल के शो में पहुंचे थे. तो उन्होंने अपने वेडिंग रिसेप्शन का मजेदार किस्सा उनके साथ शेयर किया था.शाहरुख खान ने बताया था कि, हमारे वेडिंग रिसेप्शन में गौरी का पूरा परिवार मौजूद था. जिनमें से कई लोगों के मन में उस वक्त ये सवाल था कि अरे ये लड़का तो मुस्लिम है. तो क्या अब हमारी लड़की धर्म बदल लेगी. एक्टर ने कहा कि, उस वक्त मेरे रिसेप्शन में सिर्फइसी बात पर चर्चा चल रही थी. ऐसे में मैंने माहौल को बदलने के लिए गौरी पर एक प्रैंक करने के बारे में सोचा. शाहरुख ने कहा कि, मैं गौरी के पास गया और उनसे बोला कि चलो उठो, बुर्का पहनो, नमाज पढ़ो. मेरी ये बात सुनकर वहां मौजूद सभी लोग दंग रह गए थे. उनको लगा मैंने गौरी का धर्म बदलवा दिया है और अब वो बुर्के में ही रहेगी. हालांकि थोड़ी देर बाद मैंने बता दिया था कि ये सिर्फ एक प्रैंक है. बता दें कि शाहरुख खान और गौरी खान आज तीन बच्चों आर्यन खान, सुहाना खान और अबराम खान के पेरेंट्स हैं.वर्कफ्रंट की बात करें तो शाहरुख खान बहुत जल्द अपनी सुहाना खान के साथ फिल्म 'किंग' में नजर आने वाले हैं.

# पाकिस्तान के हेड कोच का पद छोड़ने का बताया कारण

स्तान क्रिकेट में आए दिन कुछ न कुछ सुर्खियां चलती ही रहती हैं। कभी टीम के खिलाड़ियों के बीच आपसी नोकझोंक तो काफी बोर्ड द्वारा स्टाफ और कोच को बदलने की खबरे, पाकिस्तान क्रिकेट में ये आम सा है। हाल ही में पाकिस्तान क्रिकेट टीम के टेस्ट हेड कोच रहे जेसन गिलेस्पी ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया था। जिसके बाद अब गिलेस्पी ने खुद पद छोड़ने के बाद अपनी चुप्पी तोड़ी है। साथ ही पीसीबी पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि कभी भी उन्हें कोच के तौर पर नहीं चाहा गया था। उन्होंने ये भी कहा कि उनके और पीसीबी के बीच कम्यूनिकेशन क्लियर नहीं था और हाई परफॉर्मेंस कोच टिम नीलसन की बर्खास्तगी ने अंततरू उन्हें पद छोड़ने के लिए मजबूर किया। एबीसी स्पोर्ट से बात करते हुए गिलेस्पी ने कहा कि, निश्चित रूप से चुनौतियां थीं। मैं इस पद पर खुली आंखों से गया था, मैं ये बात स्पष्ट करना चाहता हूं। मैं जानता था कि, आप जानते हैं पाकिस्तान ने बहुत कम समय में कई कोचों को बदल दिया है। उन्होंने आगे कहा कि, मुझे लगता है कि सबसे बड़ी समस्या ये थी कि ये एक मुख्य कोच के रूप में आप अपने नियोक्ता के साथ स्पष्ट संवाद करना पसंद करते हैं। मैं हाई परफॉर्मेंस कोच को न रखने के निर्णय से पूरी तरह से अचंभित था। जेसन गिलेस्पी ने ये भी खुलासा किया कि हाई-परफॉर्मेंस कोच न रखने के फैसले से वह पूरी तरह से हैरान थे। उन्होंने बताया कि नीलसन और टीम के प्रदर्शन के बारे में उन्हें जो फीडबैक दिया गया था, वह सकारात्मक था, इसलिए हाई -परफॉर्मेंस कोच को हटाने का कोई कारण नहीं था। गिलेस्पी ने आगे बताया कि, टिम नीलसन को बताया गया कि अब उनकी सेवाओं की आवश्यकता नहीं है, और मुझे इस बारे में किसी से कोई जानकारी नहीं मिली। मुझे लगा कि पिछले कुछ महीनों में कई अन्य चीजें हुई थीं, शायद यही समय था जब मैंने सोचा कि ठीक है, मुझे सच में यकीन नहीं है कि वे वास्तव में मुझे ये काम करना चाहते हैं या नहीं।

# जीत के साथ खत्म हुआ टिम साउदी का टेस्ट करियर

## बेटी-पत्नी को देखकर हुए भावुक

**हैमिल्टन।** साउदी न्यूजीलैंड के महानतम गेंदबाजों में से एक रहे हैं और उन्होंने कई रिकॉर्ड बनाए। अपने आखिरी मैच में वह दो विकेट ले पाए। बेन डकेट और जैकब बेथेल उनके आखिरी शिकार रहे। इंग्लैंड के खिलाफ तीसरे टेस्ट में न्यूजीलैंड ने 423 रन से जीत दर्ज की। हैमिल्टन के सेडन पार्क में खेला गया यह मुकाबला टिम साउदी के टेस्ट करियर का आखिरी मुकाबला था। कीवी टीम भले ही तीन मैचों की सीरीज 2-1 से हार गई हो, लेकिन साउदी को जीत के साथ विदाई मिली। अपने आखिरी मैच के दौरान साउदी भावुक भी हुए। उन्हें देखने के लिए उनकी पत्नी ब्राया फाही और दोनों बेटियां भी पहुंची थीं। साउदी टेस्ट की शुरुआत में राष्ट्रगान के वक्त बेटी को गोदी में लेकर पहुंचे थे। इतना ही नहीं, इंग्लैंड के खिलाड़ियों ने उन्हें गार्ड ऑफऑनर भी दिया। आखिर में रिचर्ड हेडली ने उन्हें सम्मानित किया। साउदी न्यूजीलैंड के महानतम गेंदबाजों में से एक रहे हैं और उन्होंने कई रिकॉर्ड बनाए। अपने आखिरी मैच में वह दो विकेट ले पाए। बेन डकेट और जैकब बेथेल उनके आखिरी शिकार रहे। मैच के बाद साउदी ने कहा- इंग्लैंड को सीरीज जीतने पर बधाई। हमेशा की तरह उन्होंने बहुत अच्छे जज्बे के साथ खेला और वर्षों से मैंने ऐसी टीम के खिलाफ खेलने का आनंद उठाया है। इस मौके पर कुछ लोगों को धन्यवाद देना चाहता हूं। सबसे पहले न्यूजीलैंड क्रिकेट, पिछले 17 वर्षों में आपने मेरे लिए जो कुछ भी किया है, उसके लिए बहुत बहुत धन्यवाद।श् साउदी ने कहा, श्मेरा परिवार हर उतार-चढ़ाव के दौरान मेरे साथ मौजूद रहा। टीम के साथियों ने और सपोर्ट स्टाफ ने इस सफर को इतना आनंददायक बनाया। फैंस को धन्यवाद देना चाहूंगा। दर्शकों के सामने आना हमेशा अच्छा होता है और इस सप्ताह सेडॉन पार्क में भारी भीड़ के सामने खेलना बहुत खास रहा। आप सभी को धन्यवाद। एक फैन के रूप में अब मैं मैच देखने के लिए उत्सुक हूं।श् साउदी ने 17 साल लंबे टेस्ट करियर में 391 विकेट लिए। वह रिचर्ड हेडली के बाद कीवियों के लिए सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज हैं। हेडली ने टेस्ट में 431 विकेट लिए थे। साउदी ने टेस्ट डेब्यू 19 साल की उम्र में इंग्लैंड के खिलाफ नेपियर में किया था। उन्होंने अपने पहले ही मैच में 55 रन देकर पांच विकेट लिए थे। साथ ही 40 गेंद में 77 रन की पारी खेली थी। इससे उन्हें काफी तारीफ मिली थी। 1877 में टेस्ट की शुरुआत के बाद कुछ ही ऐसे खिलाड़ी हुए हैं, जिसने अपने पहले टेस्ट में पांच विकेट लेने और नौ छक्के लगाने का गौरव हासिल किया हो। साउदी ने अपने पहले ही टेस्ट में यह उपलब्धि हासिल कर ली। बड़े मैचों में अच्छा प्रदर्शन करना साउदी के लिए कोई नई बात नहीं है। 2008 अंडर-19 सेमीफाइनल में टिम साउदी ने विषम परिस्थितियों से जूझते हुए न्यूजीलैंड को चार विकेट लेकर जीत दिलाई थी। उसी बैच से विराट कोहली, केन विलियमसन और ट्रेंट बोल्ट जैसे खिलाड़ी भी निकले। टिम उस संस्करण में प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट रहे थे। शीर्ष स्तर पर अपने 16 वर्षों के कार्यकाल के दौरान उन्हें लगातार प्रशंसा मिलती रही। वह नई गेंद के साथ बेहद घातक साबित होते थे और पुरानी गेंद से वह अपने अनुभव का इस्तेमाल करते थे। टिम साउदी अक्सर अपने प्रदर्शन से आलोचकों का भी दिल जीत लेते थे। ट्रेंट बोल्ट के साथ उनकी जोड़ी सबसे घातक गेंदबाजी जोड़ी में से एक थी। कप्तान बेन स्टोक्स हैमस्ट्रिंग चोट के कारण मंगलवार को बल्लेबाजी नहीं कर सके और इंग्लैंड को न्यूजीलैंड के खिलाफ तीसरे क्रिकेट टेस्ट में चाय ब्रेक से पहले ही 423 रन से हार झेलनी पड़ी। स्टोक्स को तीसरे दिन ही गेंदबाजी के दौरान बायीं हैमस्ट्रिंग में चोट लगी थी और वह फील्डिंग नहीं कर सके। जीत के लिए 658 रन के मुश्किल लक्ष्य का पीछा करते हुए इंग्लैंड की टीम 234 रन पर आउट हो गई। न्यूजीलैंड ने रनों के अंतर से सबसे बड़ी जीत की बराबरी की और इंग्लैंड को क्लीन स्वीप से भी रोका। न्यूजीलैंड ने 2018 में श्रीलंका को 423 रन से ही हराया था। इंग्लैंड ने पहला टेस्ट आठ विकेट से और दूसरा 323 रन से जीता था। हैमिल्टन टेस्ट में पहले बल्लेबाजी करते हुए न्यूजीलैंड ने अपनी पहली पारी में 347 रन बनाए थे। जवाब में इंग्लैंड की टीम 143 रन बना सकी थी। पहली पारी में 204 रन की बढ़त लेने वाली न्यूजीलैंड टीम ने दूसरी पारी में 453 रन बनाए थे।

# फॉलोऑन बचाने के लिए बुमराह-आकाश का संघर्ष

## अब तक नौ ओवर खेल चुके, भारत ऑस्ट्रेलिया से 193 रन पीछे

**ब्रिस्बेन।** भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच पांच मैचों की टेस्ट सीरीज का तीसरा टेस्ट ब्रिस्बेन में खेला जा रहा है। भारतीय कप्तान ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी का फैसला किया था। ऑस्ट्रेलिया ने पहले बल्लेबाजी करते हुए अपनी पहली पारी में 445 रन बनाए। जवाब में भारतीय टीम की पहली पारी जारी है। टीम अभी भी ऑस्ट्रेलिया से 193 रन पीछे है। चौथे दिन का खेल खत्म हो चुका है। भारत ने अपनी पहली पारी में नौ विकेट गंवाकर 252 रन बना लिए हैं।

जसप्रीत बुमराह और आकाश दीप की बहादुरी भरी बल्लेबाजी की बदौलत भारत ने फॉलोऑन बचा लिया है। दोनों नाबाद हैं। इसके अलावा रवींद्र जडेजा और केएल राहुल ने भी शानदार बल्लेबाजी की और अर्धशतक लगाया। आकाश 27 और बुमराह 10 रन बनाकर नाबाद हैं। दोनों के बीच 10वें विकेट के लिए अब तक 54 गेंद में 39 रन की साझेदारी हो चुकी है। यानी दोनों अब तक नौ ओवर बल्लेबाजी कर चुके हैं। इस दौरान इन दोनों ने मिचेल स्टार्क, पैट कमिंस और नाथन लियोन जैसे गेंदबाजों का डट कर सामना किया। ऑस्ट्रेलिया ने अपनी पहली पारी में 445 रन बनाए थे। इस लिहाज से टीम इंडिया अभी भी 193 रन पीछे है। फॉलोऑन बचाने के लिए भारत को 246 रन बनाने थे। जैसे ही आकाश ने चौका लगाकर फॉलोऑन बचाया। ड्रेसिंग रूम में मौजूद रोहित शर्मा, विराट कोहली और गौतम गंभीर जोश में अपनी कुर्सी से कूद पड़े। तीनों ने एकदूसरे को हाई फाइव दिया। जब आकाश और बुमराह वापस ड्रेसिंग रूम लौट रहे थे तो तीनों ने स्टैंडिंग ओवेशन दिया। साथ ही फैंस ने भी दोनों को स्टैंडिंग ओवेशन दिया। आकाश ने फॉलोऑन बचाने के बाद एक जोरदार छक्का भी जड़ा। अब एक दिन का खेल बचा है। यह टेस्ट ड्रॉ की ओर बढ़ रहा है। भारत की पहली पारी भारत ने मंगलवार को चार विकेट पर 51 रन से आगे खेलना शुरू किया। हालांकि, जल्द ही रोहित शर्मा के रूप में टीम को पांचवां झटका लगा। रोहित 10 रन बनाकर कमिंस का शिकार बने। इसके बाद राहुल ने जडेजा के साथ 67 रन की साझेदारी निभाई। राहुल शतक से चूक गए और 139 गेंद में आठ चौके की मदद से 84 रन बनाकर आउट हुए। इसके बाद नीतीश रेड्डी और रवींद्र जडेजा ने सातवें विकेट के लिए 53 रन की साझेदारी निभाई। नीतीश 16 रन बनाकर कमिंस की गेंद पर बोल्ड हो गए। वहीं, सिराज एक रन बना सके। वहीं, दूसरे छोर पर मौजूद जडेजा ने टेस्ट करियर का 22वां अर्धशतक लगाया। वह नौवें विकेट के रूप में आउट हुए। उन्हें कमिंस ने मार्श के हाथों कैच कराया। जडेजा ने 123 गेंद में सात चौके और एक छक्के की मदद से 77 रन की पारी खेली। इसके बाद बुमराह और आकाश ने हिम्मत दिखाई और भारत को फॉलोऑन खेलने से बचा लिया। दोनों ऑस्ट्रेलिया की लीड को और कम करने की कोशिश करेंगे। ऑस्ट्रेलिया की ओर से कप्तान कमिंस ने अब तक चार विकेट लिए हैं। वहीं, मिचेल स्टार्क को तीन विकेट मिले। जोश हेजलवुड और नाथन लियोन को एक-एक विकेट मिला। इससे पहले सोमवार को यशस्वी चार रन, गिल एक रन, विराट तीन रन और पंत नौ रन बनाकर आउट हुए। ऑस्ट्रेलिया की पहली पारी ऑस्ट्रेलिया ने पहली पारी में 445 रन बनाए। हेड ने टेस्ट करियर का नौवां और स्मिथ ने 33वां शतक जड़ा। स्मिथ 190 गेंद पर 12 चौके की मदद से 101 रन और हेड 160 गेंद पर 18 चौके की मदद से 152 रन बनाकर आउट हुए। बुमराह ने उस्मान ख्वाजा (21) और नाथन मैकस्वीनी (9) को आउट कर शुरुआती दो झटके दिए। इसके बाद नीतीश रेड्डी ने मार्नस लाबुशेन (12) को पवेलियन भेजा था। हालांकि, इसके बाद स्टीव स्मिथ और ट्रेविस हेड ने दूसरे सत्र में कोई विकेट नहीं गिरने दिया। दोनों ने चौथे विकेट के लिए 242 रन की साझेदारी निभाई। मिचेल मार्श पांच रन और कप्तान पैट कमिंस 20 रन बनाकर आउट हुए। कमिंस ने सातवें विकेट के लिए कैरी के साथ 58 रन की साझेदारी निभाई थी। एलेक्स कैरी ने अर्धशतक जमाया। मिचेल स्टार्क को बुमराह ने तो नाथन लियोन को सिराज ने आउट किया। वहीं, आकाश दीप ने कैरी को आउट कर ऑस्ट्रेलियाई सरजमीं पर अपना पहला विकेट लिया। स्टार्क ने 18 तो लियोन ने दो रन बनाए।

# ईशा गुहा ने जसप्रीत बुमराह से मांगी माफी, कमेंट्री के दौरान भारतीय गेंदबाज पर की थी नस्लीय टिप्पणी

इंग्लैंड की पूर्व क्रिकेटर और कमेंटेटर ईशा गुहा ने ब्रिस्बेन के गाबा में भारत- ऑस्ट्रेलिया के बीच तीसरे टेस्ट के दूसरे दिन रविवार को जसप्रीत बुमराह को प्राइमेट कहना भारी पड़ा। जिसके बाद उन्होंने बुमराह से माफी मांगी है। बता दें कि, प्राइमेट का मतलब बंदर होता है। ऐसे में ईशा पर बुमराह को लेकर नस्लीय टिप्पणी करने का आरोप लगा। सोशल मीडिया पर इसे लेकर काफी बवाल हुआ। दरअसल, गुहा ने बुमराह के पांच विकेट लेने के बाद दूसरे दिन फॉक्स क्रिकेट के लिए कमेंट्री करते हुए कहा था कि खैर, वह डटच् हैं, है न? मोस्ट वैल्यूएबल प्राइमेट, जसप्रीत बुमराह। वह भारत के लिए पूरा योगदान देने वाले खिलाड़ी हैं और यही वजह है कि इस टेस्ट मैच से पहले उन पर इतना ध्यान दिया गया था। क्या वह फिट होंगे? 2008 के मंकीगेट कांड के दिनों से दोनों क्रिकेट टीमों के बीच ऐतिहासिक तनाव को देखते हुए प्राइमेट शब्द का इस्तेमाल ने सुर्खियां बटोरी। हालांकि, इंग्लैंड के पूर्व क्रिकेटर गुहा ने तीसरे दिन खेल शुरू होने से पहले ऑन-एयर माफी मांगी। उन्होंने कहा कि, कल कमेंट्री में मैंने एक ऐसा शब्द का इस्तेमाल किया जिसका कई अलग-अलग तरीकों से मतलब निकाला जा सकता है। सबसे पहले मैं किसी भी तह की ठेस के लिए माफी मांगना चाहती हूं। जब दूसरों के प्रति सहानुभूति और सम्मान की बात आती है तो मैंने खुद के लिए बहुत ऊंचे मानक तय किए हैं और अगर आप पूरी ट्रांसक्रिप्ट सुनें तो मेरा मतलब भारत के सबसे महान खिलाड़ियों में से एक और ऐसे व्यक्ति की सबसे ज्यादा प्रशंसा करना था, जिसकी मैं भी बहुत तारीफकरती हूं। ईशा ने आगे कहा कि, मैं समानता की समर्थक हूं और ऐसी व्यक्ति हूं जिसने अपना पूरा करियर खेल में समावेश और समझ के बारे में सोचने में बिताया है। मैं उनकी उपलब्धियों की विशालता को दर्शाने की कोशिश कर रही थी। मैंने गलत शब्द चुना है और इसके लिए मुझे गहरा खेद है। मैं दक्षिण एशियाई मूल की हूं इसलिए मुझे उम्मीद है कि लोग समझेंगे कि इसमें कोई और इरादा या दुर्भावना नहीं थी।

## पिछड़ने के बाद वापसी करते हुए मैनचेस्टर सिटी को 2-1 से हराया

**मैनचेस्टर ।** मैनचेस्टर यूनाइटेड ने अमाद डायलो ने 90वें मिनट में दागे गोल की मदद से जोरदार वापसी करते हुए प्रीमियर लीग फुटबॉल में यहां मैनचेस्टर सिटी को 2-1 से हरा दिया। चार बार की गत विजेता सिटी ने इतिहाद स्टेडियम में खेले गए मैनचेस्टर डर्बी में 88वें मिनट तक 1-0 की बढ़त बनाए रखी थी लेकिन ब्रूनो फर्नांडीस ने पेनल्टी पर बराबरी का गोल करके मैच का रुख बदल दिया। इसके बाद डायलो ने विजयी गोल दागकर यूनाइटेड की जीत सुनिश्चित की। सिटी की पिछले 11 मैच में यह आठवीं हार है। इस जीत के बावजूद यूनाईटेड की टीम 22 अंक के साथ 13वें जबकि सिटी की टीम 27 अंक के साथ पांचवें स्थान पर है। दूसरे स्थान पर रहे चेल्सी ने ब्रेंटफोर्ड के खिलाफ 2-1 की जीत के बाद शीर्ष पर चल रहे लीवरपूल से अंकों के अंतर को दो तक सीमित कर दिया है। लीवरपूल के 36 अंक हैं। चेल्सी तीसरे स्थान पर मौजूद आर्सेनल से चार अंक आगे है। टोटेनहैम के खिलाफ 0-5 की हार के बाद साउथम्पटन ने मैनेजर रसेल मार्टिन को निकाल दिया। साउथम्पटन अंतिम पायदान पर है जबकि टोटेनहम 10वें स्थान पर पहुंच गया है। इस्माइला सार ने रविवार को क्रिस्टल पैलेस की ब्राइटन पर 3-1 की जीत में दो गोल किए।

## यशस्वी जायसवाल का पीछा नहीं छोड़ रहे मिचेल स्टार्क, आउट कर कंगा: गेंदबाज ने जीभ निकालकर चिढ़ाया

भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी का तीसरा टेस्ट मैच ब्रिसबेन में खेला जा रहा है। एडिलेड की तरह ब्रिसबेन टेस्ट में भी टीम इंडिया की हालत खस्ता नजर आ रही है। पर्थ टेस्ट मैच में 295 रनों से जीत के बाद भारतीय टीम इस सीरीज में काफी सुस्त नजर आई है। ऑस्ट्रेलिया ने दमदार वापसी की है। एडिलेड टेस्ट 10 विकेट से जीतने के बाद ऑस्ट्रेलियाई टीम ब्रिसबेन में भी खतरनाक नजर आ रही है।पांच मैचों की टेस्ट सीरीज के पहले मैच में यशस्वी जायसवाल ने दूसरी पारी में 161 रनों की यादगार पारी खेली थी और इस दौरान उनको मिचेल स्टार्क से पंगा लेते हुए देका गया था। यशस्वी ने स्टार्क को कहा था कि गेंद धीमी आ रही है। जिसके बाद तो स्टार्क यशस्वी के पीछे पड़ गए, पहले एडिलेड और फिर ब्रिसबेन में स्टार्क ने यशस्वी को आउट किया। पर्थ टेस्ट ही पहली पारी में यशस्वी बिना खाता खोले आउट हुए थे, इसके बाद एडिलेड टेस्ट की पहली पारी में तो गोल्डन डक का शिकार बने। जबकि ब्रिस्बेन टेस्ट में पहली पारी में वह चार रन बनाकर आउट हुए। स्टार्क ने ब्रिस्बेन में जायसवाल को आउट कर जीभ निकालकर सेंड-ऑफ दिया। भारतीय पारी का आगाज करने केएल राहुल और यशस्वी जायसवाल उतरे। जायसवाल ने स्टार्क की पहली गेंद का सामना किया और चौका लगा दिया। जायसवाल को खुद पर भरोसा ही नहीं हुआ कि वह इस तरह का शॉट खेलकर आउट हो गए और स्टार्क की खुशी का ठिकाना नहीं था। स्टार्क ने मिडिल और लेग पर हॉफ-वॉली गेंद डाली, जायसवाल ने फ्लिक किया और गेंद सीधा गई शॉर्ट मिडविकेट पर खड़े मिचेल मार्श के हाथ में, जिन्होंने बेहतरीन कैच लपका। इस सीरीज में यशस्वी को पांच में से तीन बार स्टार्क ने ही आउट किया है, जबकि एक बार उनका विकेट मिचेल मार्श के खाते में जबकि एक बार स्कॉट बोलैंड के खाते में गया है।

## बल्लेबाजों ने फिर किया निराश, बारिश के खलल के बीच भारत ने 51 रन तक चार विकेट गंवाए

भारतीय बल्लेबाज मुश्किल परिस्थितियों में आस्ट्रेलियाई तेज गेंदबाजी आक्रमण का सामना करने में असमर्थ रहे जिससे मेहमान टीम तीसरे क्रिकेट टेस्ट के वर्षा से प्रभावित तीसरे दिन सोमवार को यहां पहली पारी में 51 रन तक चार विकेट गंवाकर संकट में है।

# हेजलवुड के खिलाफ 11वीं बार आउट हुए कोहली, इस साल टेस्ट में पहली पारी में रहे फेल

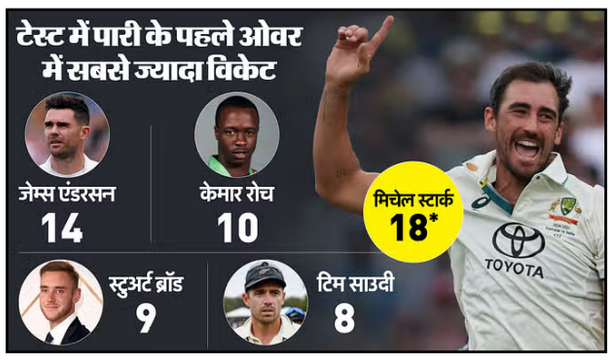


**ब्रिस्बेन।** हेजलवुड अब तक अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में कोहली को 11 बार आउट कर चुके हैं। इतना ही नहीं, इस साल किसी भी टेस्ट की पहली पारी में विराट ने खराब बल्लेबाजी की है। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच पांच मैचों की टेस्ट सीरीज का तीसरा मुकाबला ब्रिस्बेन के गाबा में खेला जा रहा है। इस मैच में विराट कोहली से काफी उम्मीदें थीं, लेकिन वह एक बार फिर फेल रहे। वह तीन रन बनाकर हेजलवुड का शिकार बने। टेस्ट में विराट का खराब फॉर्म जारी है। पर्थ टेस्ट में उन्होंने शतक जरूर लगाया था, लेकिन उससे पहले और उसके बाद वह फेल रहे हैं। पर्थ टेस्ट से पहले विराट ने न्यूजीलैंड के खिलाफ तीन मैचों की सीरीज में छह पारियों में 91 रन बना पाए थे। वहीं, पर्थ टेस्ट के बाद तीन पारियों में 21 रन बना सके हैं। ऐसे में उन पर दबाव बढ़ता जा रहा है। सबसे खराब बात यह रही है कि विराट हेजलवुड को खेलने में नाकाम रहे हैं। साथ ही इस साल किसी भी टेस्ट की पहली पारी में उनकी बल्लेबाजी खराब रही है। हेजलवुड अब तक अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में कोहली को 11 बार आउट कर चुके हैं। वह कोहली को हर 37.45 रन बनाने में आउट करते हैं। यानी कोहली के खिलाफ हेजलवुड का गेंदबाजी औसत 37.45 का है।

## सिराज पर निशाना साधने को गावस्कर ने ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट 'पंडितों' का दोहरा चरित्र करार दिया

**ब्रिस्बेन ।** भारतीय दिग्गज सुनील गावस्कर ने एडीलेड में दिन रात्रि टेस्ट में ट्रेविस हेड के साथ विवाद में मोहम्मद सिराज पर निशाना साधने को लेकर ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट 'पंडितों' के दोहरे चरित्र की आलोचना की है। पांच मैचों की श्रृंखला के दूसरे टेस्ट में बाएं हाथ के बल्लेबाज हेड ने शतक पूरा करने के बाद डीप स्क्वायर लेग पर छक्का लगाया जिसके बाद सिराज ने उन्हें बोल्ड कर दिया और ड्रेसिंग रूम की ओर जाने का इशारा किया था। हेड ने दावा किया कि उन्होंने आउट होने के बाद सिराज से कहा था कि 'अच्छी गेंदबाजी की' लेकिन भारतीय गेंदबाज ने इस दावे से इनकार किया। सिराज पर मैच फीस का 20 प्रतिशत जुर्माना लगाया गया और हेड को फटकार लगाई गई जबकि दोनों खिलाड़ियों को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने एक-एक डिमेरिट अंक भी दिया। गावस्कर ने 'सिडनी मॉर्निंग हेराल्ड'में कटाक्ष करते हुए लिखा, '' सिराज के खिलाफऑस्ट्रेलिया क्रिकेट के 'पंडितों' से कड़ी प्रतिक्रिया मिल रही है। ऐसी प्रतिक्रिया वहीं दे रहे जिन्हें मैदान पर इस तरह के व्यवहार के लिए जाना जाता है।'' उन्होंने लिखा, '' इससे ऑस्ट्रेलियाई प्रशंसक नाराज हो सकते हैं कि सिराज ने शानदार शतक बनाने वाले स्थानीय खिलाड़ी को आक्रामक इशारा किया।'' गावस्कर ने दोहरे चरित्र पर कटाक्ष किया कि कैसे यही लोग अपने खिलाड़ियों के असभ्य व्यवहार का समर्थन करते हैं। उन्होंने लिखा, '' यह लोग हालांकि अगले सत्र में की एशेज के दौरान ऑस्ट्रेलिया के किसी तेज गेंदबाज की इंग्लैंड के बल्लेबाज के खिलाफइस तरह की हरकत का समर्थन करेंगे।'' उन्होंने कहा, '' मीडिया में कुछ सुझाव थे कि ऑस्ट्रेलिया के खिलाड़ियों को को फिर से पहले की तरह बेहद आक्रामक रवैया अपनाना चाहिये।'' गावस्कर हालांकि सिराज के गुस्से से आश्चर्यचकित थे क्योंकि आईपीएल ने खिलाड़ियों के बीच कटुता को कम कर दिया था। उन्होंने कहा, ''सिराज का गुस्सा आश्चर्यजनक था।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक, श्रीमती विजय लक्ष्मी शर्मा द्वारा त्रिपाठी प्रिंटिंग प्रेस 12/29, पुराना किला, कैण्ट रोड, लखनऊ 226001 (उ.प्र.) से मुद्रित कराकर 1372/12 न्यू गुडौरा बेहसा श्हीदपथ लखनऊ 226008 (उ.प्र.) से प्रकाशित। सम्पादक-अनूप सिंह
आरएनआई न० UPHIN/2023/87118 मोबाइल नं. 7905289865,9839177720 Email- tvnews1979@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा।